TIRUMALA TIRUPATI DEVASTHANAMS
सप्तगिरि
अगस्त १९७९
तिरुमल-तिरुपति देवस्थानम् की मासिक - पत्रिका

करार विन्देन पदारविंदं - मुखार विन्दे विनिवेशयन्तम् ।
वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं - बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि ।।

मोरे प्यारे गिरिवर धारी जी, दासी क्यों बिसार डारी ॥
द्रोपदि की लाज राखी सब दुःख से निवारी ।
प्रह्लाद पेज परी नृसिंह देहधारी ॥

भिलणी के जूठे बेर खाये कछु जात न विचारी ।
कुब्जा सों नेह लायौ और गौतम की नारि तारी ॥

प्यासी फिरौं दरस बिन तलफों मोहे काहे बिसारी ।
मीरा को दरसन दीजै गिरधर अपनी ओर निहारी ॥

—मीरा भजनमाला

हे भगवान श्रीकृष्ण! मेरे प्रिय गिरिधारीजी! आप इस दासी को क्यो भूल गये हैं। आप तो भक्तों की रक्षा करनेवाले हैं। भरी सभा में द्रौपदी की लाज बचायी। नरसिंहावतार धारण करके भक्तप्रह्लाद की रक्षा की है। शबरी से भक्तिपूर्वक दिये गये झूठे बेरों को बिना सोच-विचार के खा लिये। कुरूपी कुब्जा से स्नेह लगाये और गौतम की पत्नी अहल्या को उद्धार किये। आपके दर्शन केलिए मैं बहुत प्यासी हूँ। इसलिए अपनी दासी मीरा को दर्शन दीजिए।

श्री गोविंदराज स्वामी का मंदिर, तिरुपति.

दैनिक-कार्यक्रम

प्रातः 5–00 से 5–30 तक — सुप्रभातम्
,, 5–30 ,, 7–00 ,, — सर्वदर्शन
,, 7–00 ,, 7–30 ,, — शुद्धि
, 7–30 ,, 8–00 ,, — तोमाल सेवा
,, 8–00 ,, 8–30 ,, — अर्चना
,, 8–30 ,, 9–00 ,, — पहली घटी तथा सात्तुमुरै
,, 9–00 से मध्याह्न 12–30 तक — सर्वदर्शनम्
मध्याह्न 12–30 से 1–00 तक — दूसरी घटी
,, 1–00 से शाम 6–00 तक — सर्वदर्शनम्
,, 6–00 से 7–00 तक – रात के कैंकर्य
,, 7–00 ,, 8–45 ,, — सर्वदर्शनम्
,, 9–00 बजे — एकात सेवा ।

अर्जित सेवाओं की दरें

तोमाल सेवा	रु. ४–००
सहस्र नामाचना	रु ४–००
एकात सेवा	रु. ४–००
हारति	रु १–००
विशेष दर्शन	रु २–००

(सिर्फ सर्व दर्शन के समय पर ही प्रवेश)

सूचनाः— एक ही व्यक्ति को अनुमति दी जाती है ।

श्री गोविंदराज स्वामी के मंदिर से सम्बन्धित अन्य मंदिरों के अर्जित सेवाओं की दरें

१) श्री पार्थसारथी स्वामी का मदिर
२) श्री वेंकटेश्वर स्वामी का मदिर
३) श्री आण्डाल का मदिर
४) श्री पुडरीकवल्लि तायारु का मदिर
५) श्री आजनेय स्वामी का मदिर —सन्निधि वीथी के पास
६) श्री सजीवराय स्वामी का मदिर —श्री हथीराम जी मठ

अर्चना. रु. ०-७५.
हारति. रु. ०-२५

अर्जित वाहन

१)	तिरुचि उत्सव	—	रु ६३–००
२)	बडा शेषवाहन	—	रु ६३–००
३)	छोटा शेष वाहन	—	रु. ३३–००
४)	गरुड वाहन	—	रु ३३–००
५)	हनुमन्त वाहन	—	रु ३३–००
६)	हस वाहन	—	रु. ३३–००

भगवान को प्रसाद (भोग) समर्पण

१)	शीरा	—	रु, १५५–००
२)	बघार भात	—	रु. ५०–००
३)	दही भात	—	रु. ४०–००
४)	पोगलि	—	रु ५५–००
५)	शक्कर पोगलि	—	रु. ६५–००
६)	शक्कर भात	—	रु ८५–००
७)	केसरी भात	—	रु ९०–००
८)	१/४ सोला दोसै	—	रु. ३५–००

सप्तगिरि
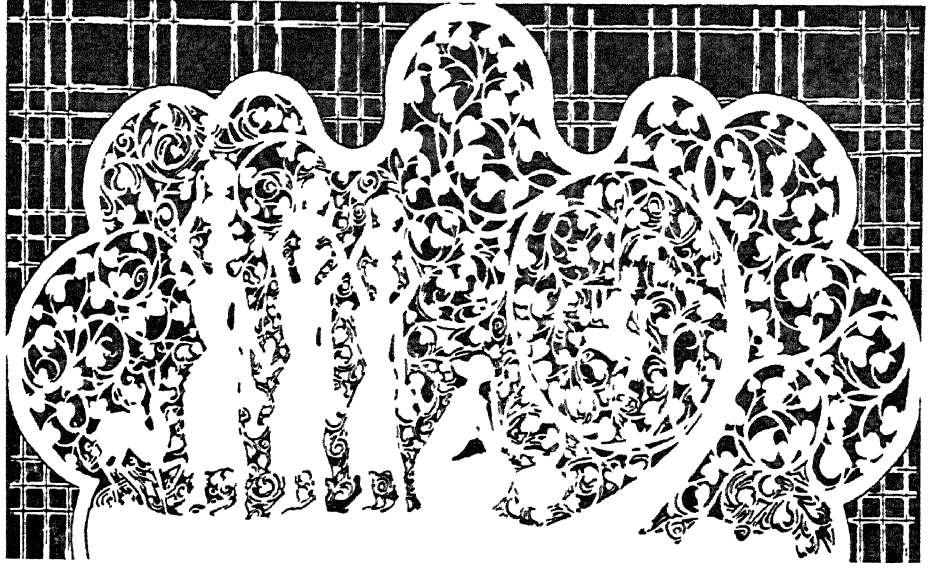
अगस्त १९७९ वर्ष १० अंक ३

एक प्रति .... रु. ०—५०
वार्षिक चंदा .... रु. ६—००

गौरव सपादक
श्री पी. .वी आर. के. प्रसाद
आइ. ए यस्,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति. ति. दे. तिरुपति
दूरवाणी २३२२.

सपादक, प्रकाशक
के. सुब्बाराव, एम. ए,
तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति
दूरवाणी २२५४.

मुद्रक
एम्. विजयकुमाररेड्डी,
मेनेजर, टी. टी. डी. प्रेस्, तिरुपति
दूरवाणी २३४०.

मुखचित्र: अद्वितीय विलक्षण शिलातोरण, तिरुमल

संपादकीय

जन्म से मानव ज्ञानी नहीं होता। कहा जाता है कि बच्चों का मन शून्य रहता है। माता-पिता तथा आसपास के वातावरण से वह विषय ग्रहण करता है। प्रधानतः मानव शिशु अवस्था में अपने माता पिता से तथा किशोर अवस्था में गुरु से अपने कर्तव्य निर्वहण की जानकारी प्राप्त करता है। यह ससार की स्वभाविक रीति है। लेकिन मानव का मन मर्कट के समान चचल रहता है। माता-पिता, गुरु, धर्माचार्य आदि अनेकों से प्रबोधित होने पर भी मानव कभी-कभी अमानुष कृत्यो को कर बैठता है। ऐसे पाप कार्यों से धरती पर धर्म का नाश होकर, अधर्म का तांडव होता है। जब-जब धर्म की ग्लानी होती है, तब तब धर्मसस्थापनार्थ व लोक कल्याणहेतु भगवान को स्वय अवतार धारण करते हुए देखते है।

भगवान के सभी अवतारो में से रामावतार तथा कृष्णावतार अपना अलग महत्व रखते हैं। श्रीराम अपने आदर्शमय जीवन के कारण मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में प्रसिद्ध हुए तथा श्रीकृष्ण निष्काम कर्मयोगी के रूप में न केवल उपदेश ही दिया बल्कि अपने जीवन में आचरण करके दिखाया। अगर हम भारत व भागवत का सिहावलोकन करे तो पता चलता है कि कुछ घटनाओं में ईश्वरत्व का निरूपण तथा और कुछ घटनाओं में सामाजिक व नैतिक मूल्यों की रक्षा केलिए मानवीय गुणों को प्रसारित कर कर्मयोगियों को आदर्श बना। अपने मानवातीत शक्ति से देवकी-वसुदेव, अक्रूर, गोपिकाएँ, दूत क्रिया से भीष्म द्रोणादियों तथा कुरुक्षेत्र में अर्जुन को विश्वरूप का प्रदर्शन आदि सदर्भानुसार करके अपने ईश्वरत्व का निरूपण किया।

दूसरे उनके जीवन विधान तो पूरा अलग है, जहाँ हम उनको निष्काम कर्मयोगी के रूप में, मम वर्त्मानु वर्तते: मनुष्या: पार्थ सर्वश: कहकर दूसरों को आदर्श कर्मयोग पथ दिखाते हुए पाते हैं। देवकी की खोक से जन्म लेकर नद यशोदा के घर मे नटखट कृष्ण के रूप में बडे हुए। भरी सभा में द्रौपदी को पराभव होते समय. सब जानकर भी अत तक उसकी रक्षा नही किया। दूत कार्य के परिणाम को स्वय जानते हुए भी उभय पक्षों को मिलाने का प्रयत्न किया। एक ओर कर्तव्य विमुख व धर्मभीरू अर्जुन को युद्ध करने केलिए कुरुक्षेत्र के मैदान में विश्वरूप का प्रदर्शन करते हैं, तो दूसरी ओर अपने सगे-सम्बन्धी अभिमन्यु की मृत्यु को जानकर भी मुँह मोड लेते हैं। मानवातीत महिमा सम्पन्न होकर भी यादव कुल के सर्वनाश होते देख निर्लिप्त रहते है। इतना ही नहीं त्रेतायुग तथा द्वापरयुग के अवतारपुरुषों में काफी अतर है। सभी साकेतवासियों को श्रीराम वैकुंठ ले जाते हैं तो श्रीकृष्ण अकेला निर्जन प्रदेश मे जाकर वृद्धावस्था को अप-नाकर शापवश एक किरात के बाण के शिकार बनते हैं। अपने अपने पूर्व जन्म के कर्मानुसार रुक्मिणी को सहगमन, सत्यभामा को वनाभिगमन तथा सोलह हजार पत्नियों को पराभिगमन प्राप्त हुए। यह सब देखने पर मालुम होता है कि श्रेष्ठ व्यक्ति को स्वय धर्माचरण करके दिखाना चाहिए। तभी समाज उसी का आचरण करता है नहीं तो पूरे समाज में गडबड पैदा होता है और मानव को अशांतिमय जीवन बिताना पडता है। और अपने इस महान आचरण के कारण वे धर्मसंस्थापक बने तथा लोककल्याण केलिए जगत को सत्यपथ दिखाये। इसलिए श्रीमद्भगवद्गीता सार्वकालिक समस्याओं की परि-/ ष्कारक वेद बनी है। इस कृष्णाष्टमी के शुभसदर्भ में, उस महात्मा के सदेश को स्मरण कर, अपने जीवन को सुधारें।

श्रीगुरु महिमा

हम चेतन अनादि काल से ससार चक्र में घूमते हुए अनन्त कष्ट पा रहे हैं। आज तक हमारा संसार चक्र से, आवागमन् से छुटकारा नहीं हुआ। यदि कहें कि कैसे छुटकारा नही हुआ यदि हमारा उद्धार होता तो आज हम इस ससार मे नहीं रहते। हमारा उद्धार गुरु भगवान के द्वारा ही होता है। उन्हीं के द्वारा हम अपने स्वरूप को समझ पाते हैं, गुरु भगवान अनेकों कष्ट सहकर हम चेतनों का कल्याण करते हैं, जिस कार्य को प्रभु स्वय अवतार लेकर नही कर पाते हैं, उस कार्य को गुरु भगवान सहज में ही कर देते हैं, वह काम कौन सा है? प्रभु को जानना प्रभु ही हमारे सब कुछ है इस कार्य को प्रभु नहीं कर पाये क्यों कि प्रभु गीता में कहते हैं—

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
सर्व धर्मान् परित्यज्य, मामेकं शरण व्रज॥
सब कर ममता ताग बटोरी।
मम पद मनहि बाधि बरि डोरी॥

हम बद्ध चेतनों ने प्रभु की बात पर विश्वास नहीं किया क्योंकि हमारा स्वभाव है कि अपने मुख से अपनी बढाई करनेवालों

ले० — श्री गोदा खेतान

पर सहज ही विश्वास नहीं कर पाते हैं इसी कारण अनादि काल से अनन्त कष्ट भोग रहे हैं। यह कहते हुए—

मृतश्चाहं पुनर्जात जातश्चाह पुनर्मृतः।
नानायोनिसहस्राणि मयोषितानि यानि वै॥

हे प्रभु! क्या मैं इसीलिए बनाया गया हूँ कि जन्मना मरना, मरना जन्मना, माँ के गर्भ जाना, फिर बडा होना, अन्ततो गत्वा पुनः काल के गाल में जाना, क्या इससे छुटकारा पाने का कोई उपाय नहीं? हे नाथ! इस भयङ्कर दुःख से छुटाओ तब दयालु प्रभु ने मनुष्य शरीर दिया, फिर सत गुरु का मिलाप कराया और कहा सतगुरु द्वारा मेरे स्वरूप को जानकर तुम इस भयङ्कर कष्ट से छुटकारा पा सकते हो, जिस तरह प्यास बुझाने का काम जल का है, दूध का नही उसी प्रकार परमपद देने का काम गुरु का है। भगवान को जाने बिना परमपद नहीं मिल सकता, इसी से गुरु भगवान के जन्म से हमें बहुत लाभ है। अतएव गुरु देव जयन्ती हमें बडी

(शेष पृष्ट ८ पर)

नारायणवनम् में स्थित श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामी जी के मदिर में श्री वेदांतदेशिकर.
फोटोः श्री ए. के रामानुजम्, तिरुपति
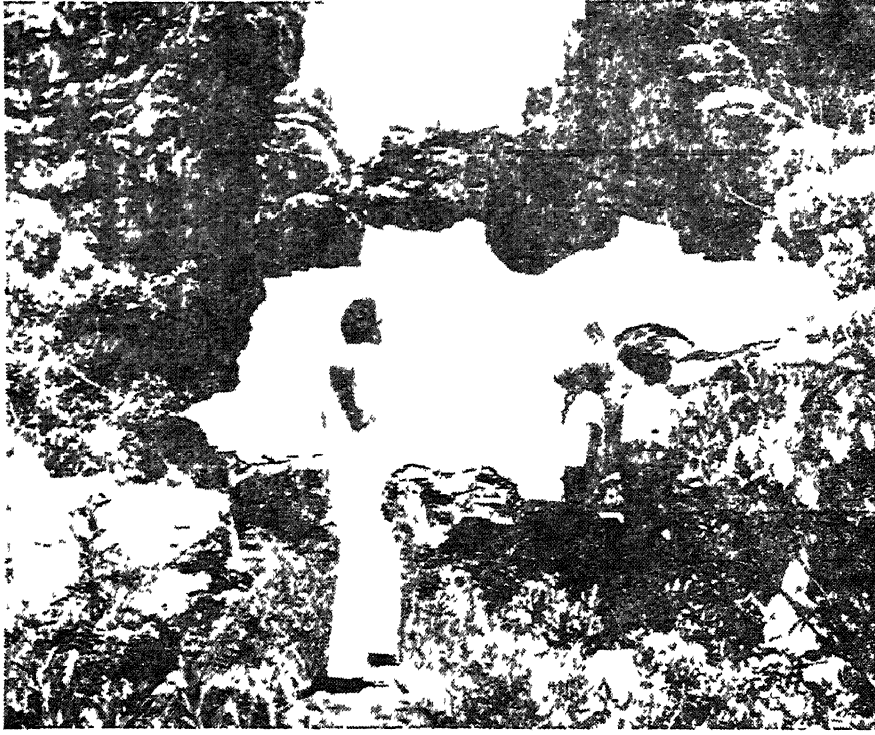
अद्वितीय विलक्षण शिला तोरण

लेखक: **डा. एन. रमेशन,** पी एच डी, एफ.आर.सी एस (लन्दन).,
आई. ए एस., अन्ध्रप्रदेश सरकार के द्वितीय सचिव
एव आन्ध्रप्रदेश के पुरातत्व विभाग व अजायबघरो के
निर्देशक, हैदराबाद ।

मंदिर का स्थान:

भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी (बालाजी), जो सप्तगिरीश के नाम से जगत्प्रसिद्ध हैं, उनके पवित्र तिरुमल मंदिर शेषाचल पर्वत पर स्थित है, जो कुण्डलाकार में बने हुए तिरुमल पर्वत के सात मुख्य शिखरो में से एक है। तिरुमल पर्वत दक्षिण भारत में १३°–१४° उत्तर अक्षांश व ७९° पूर्व रेखांश के बीच में रह कर विशिष्ट बन गयी है ।

हमारे राष्ट्र के उत्तर भाग की चरम सीमा पर जो पूर्वी घाटियाँ है, वे तीर प्रांत के साथ चलकर कृष्णा नदी को पार करने के बाद अंदर मोडकर, कई समानान्तर पर्वत पंक्तियो में बिखरी है । उनमें से दूसरी पंक्ति अव्यवस्थित क्रम में कृष्णा से लेकर कर्नूल जिले के बहुत नीचे तक बढकर, वहाँ से अर्ध - वृत्ताकार में कडपा जिले में कई समुदायो में फैल गयी है । उसमें से एक भाग को शेषाचल पर्वत कहते है ।

यह तो ईसवीं सदी के प्रारम्भ में से प्रायाद्वीप के दक्षिणी किनारे और वड्गु (जो आज तेलुगु और कन्नड प्रात हो गये है) की सीमा बनी है । भगवान श्री बालाजी का मंदिर जिस पर्वत पर स्थित है, वह वास्तव में निम्न घाटी पर है और अधिक उन्नत पर्वतों से घेरे रहने के कारण यह मंदिर खोखलाकार घाटियों के केद्र जैसा दिखाई पडता है । और यह पर्वत जिस पर यह मंदिर बना है, वह समुद्रतल से ३४२६ फुट ऊँचाई पर है ।

भूगर्भ का निर्माण:

इस क्षेत्र का भूगर्भ निर्माण मुख्य रूप से तछछट सम्बन्धी चट्टाने, चमकीले पत्थर सहज रूप में पर्तो में टूट जानेवाले पत्थरों से हुआ है । जिसको भूगर्भ शास्त्र की परिभाषा में "नगरि पत्थर (Nagari Quartzite) कहते है । यह चट्टानें तिरुमल पहाड के निचले स्थर पर बडी बडी शिलाओं पर मौजूद है । इस प्रकार के पत्थर जो पानी से सींचे हुए क्षेत्र में बने रहने के कारण यह भूगर्भ का विस्तृत भाग बन गया है । जिस भाग को "कडपा क्षेत्र" कहते है । ये पत्थर अर्धवृत्ताकार में पश्चिम मे द्रोणाचल तक, उत्तर में श्रीशैलम के आगे तक, उत्तरी-पूर्व में जग्गय्यपेट तक, वेलिकोण्डा पर्वत श्रेणियो के साथ पूर्व में विनुगोण्डा, उदयगिरि व वेकटगिरि क्षेत्र तक व्याप्त है ।

उपरोक्त घने पत्थरो के दीवार जैसे बने प्राकृतिक निर्माण के कारण, इस अद्वितीय सुंदर दृश्य को यात्री पहाड पर चढते वक्त सभी ओरो से कई स्थानो पर से देख सकता है । ये पत्थर बहुत बडे है और आंशिक काचमय है । वे मोटे तल के है । पत्थरो का रंग हल्का भूरा और नारगी का है । कहीं कहीं नगे दीवारो जैसे खडे हुए है ।

एक अपूर्व भूगर्भ निर्माण सम्बन्धी शिला तोरण:

सौ करोडो साल के समय के बीत जाने के बाद भी, कई प्राकृतिक वैपरीत्य को सहकर, भूगर्भ निर्माण सम्बन्धी शिला तोरण आज हमें देखने में मिला है । यह स्वाभाविक तोरण सेतु मंदिर से १ कि. मी, उत्तर में और ६०° पश्चिम में स्थित है । तिरुमल मैक्रोवेव स्टेशन को जाने वाली सडक पर से यहाँ पहुंच सकते है । इसकी घुमाव २५ फुट है और ऊंचाई १० फुट है । तथा उच्चतम श्रेणी के नगरि पत्थर (Nagari Quartzite) के सहज प्राकृतिक कटाव के कारण बना हुआ है ।

सारी दुनिया में दो और प्राकृतिक शिला तोरण सेतु देख सकते है । उनमें से एक है, अत्यधिक प्रभावजनक इन्द्र धनु शिला तोरण जो अमेरिका के ऊतह में स्थित है । और दूसरा है ब्रिटन के डर्लाडियन के चट्टानों के उपरितल के कटाव के कारण बना हुआ है । इन दोनो के बारे में बहुत प्रचार हुआ है और अब बहुत प्रसिद्ध बन गये है । अब जिसका पता चला, वह दुनिया में तीसरा है तथा सारे यूरोप व एशिया खण्डों को मिलाकर देखें तो अपने आप में एक अद्वितीय है ।

हिन्दी अनुवाद:
धारा. सुब्रह्मण्यम, बी एस.सी., एम ए.,

शिला तोरण बनने की परिस्थितियाँ:

पता लगाता है कि यह स्वाभाविक शिला तोरण प्रकृति के हाथों से ही केवल चट्टानों के

सहज मुलायम निमज्जन के कारण बना हुआ है। कुछ विद्वानों का मत है कि तिरुमल के यह प्राकृतिक शिला तोरण समुद्र के अतिक्रमण के कारण लहरों के वेग प्रवाह से पत्थारो के कटाव के कारण बना हुआ है । जो भी हो, लब्ध साक्ष्याधारों के गहन अध्ययन से पता चलता है कि इसकी कटाई तीव्र मौसम व झरने की गति विधियो में परिवर्तन से हुई है । और पत्थरों को व्यवस्थित क्रम में जुडे होने के कारण इसका यह रूप स्थिर रहा ।

भूगर्भ निर्माण सम्बन्धी अनिश्चितता :

यह प्राकृतिक अनिश्चितता तिरुमल के पर्वतो में भूगर्भ सम्बन्धी त्रुटियो को अन्वेषण करते समय विलक्षण भूगर्भ निर्माण सम्बन्धी त्रुटी, जिसे "एपार्चन फाल्ट (Eparchan Fault) कहते हैं, पहाड की एक श्रेणी में अचानक दिखाई दिया । इसी भूगर्भ निर्माण सम्बन्धी त्रुटिवाली प्रदेश में ही तिरुमल पहाड पर प्रमुख कडी पत्थरों का क्षेत्र मिलता है, जिसमें एक फुट ऊँचाई तक नगरि पत्थरो के कडपा पर्तोवाली शिलाएं तथा बीच-बीच में कंकड पत्थरों वाली ढेरो से भरी मिलती हैं । यह निर्माण करीब ८० करोड साल के समय को सूचित करता है । इस क्षेत्र के निर्माण में जो भूमि तल की तरह काम आए हुए कडी शिलाएं तथा कंकड पत्थर आदि तो २५० करोड साल पुराने हैं । सबसे पुराने कडपा शिला पर्तें करीब १७० करोड साल पुराने है । इनमें से नगरि पत्थर जो कम समय पुराने हैं, वे १५० करोड साल के हैं । भूमितल तथा तलछट सम्बन्धी चट्टानो के निर्माण समय में दीखनेवाला यह अंतर ही भूगर्भ निर्माण सम्बन्धी अनिश्चित तथ्य को ही "एपार्चन अनिश्चित तथ्य" कहते हैं । यह नयी घाट सडक के १८ वीं कि. मी. पर दीखता है, जहाँ वह सडक पठार भूमि के उपरितल पर पहुंचती है ।

जातीय भूगर्भ निर्माण सम्बन्धी स्मारक :

इसको भूगर्भ निर्माण सम्बन्धी जातीय स्मारक के रूप में प्रकटित करने का निर्णय लिया गया है । पूरे देश में केवल १३ स्मारक चिह्न ऐसे हैं और यह १४वीं बनेगा । जिसका २५० करोड साल का इतिहास है और जो यूरोप व एशिया खण्डों में अकेला है ।
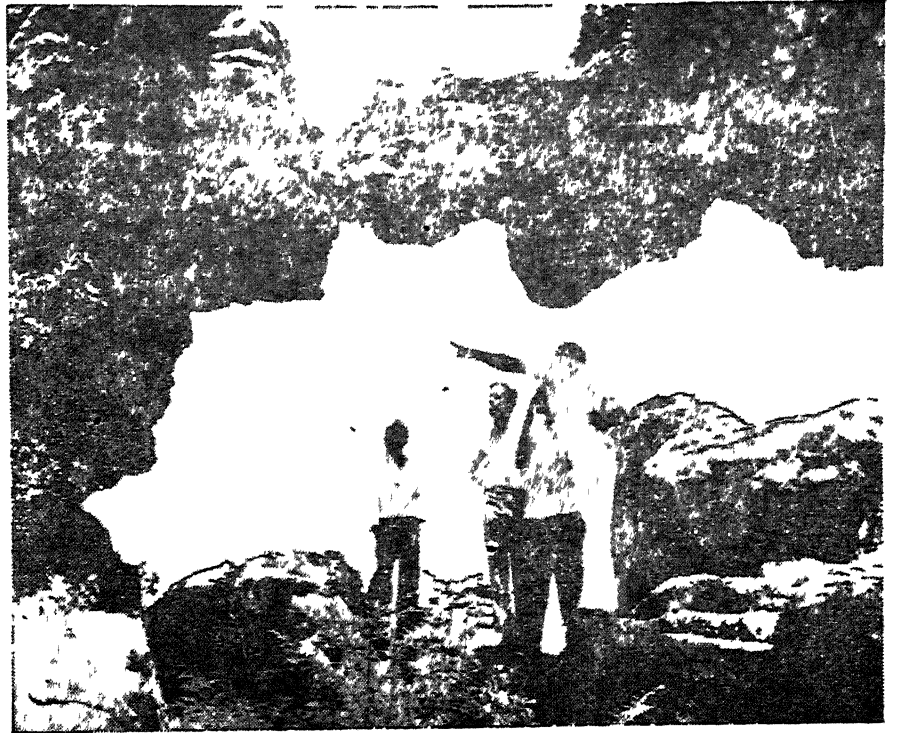
तिरुमल तिरुपति देवस्थान ने इस जातीय स्मारक के निर्वहण करने का भार ग्रहण कर लिया और इस संदर्भ में निम्नलिखित कार्य-प्रणाली अपनायी है —

० शिला तोरण के चारों ओर ४००/४०० मी. विस्तीर्ण भूमि को घेरा डालकर, उद्यान का निर्माण करना ।

० उस आकर को ठीक तरह से बचाये रखने के लिए आवश्यक आधार-स्तम्भों को खडा करना ।

० मैक्रोवेव स्तम्भ से इस प्रांत तक पहुँचनेवाली सडक का निर्माण पूरा करना ।

० भगवान के मंदिर के पास और अन्य मुख्य जगहों में मे नामपट्टों (Sign boards) को रखकर यात्रियों को जानकारी देना ।

० इस जातीय स्मारक का निर्वहण करना ।

यात्रियों के लिए आकर्षण :

असंख्य भक्त, यात्री इस अद्वितीय भूगर्भ निर्माण सम्बन्धी शिलातोरण सेतु को देखने के
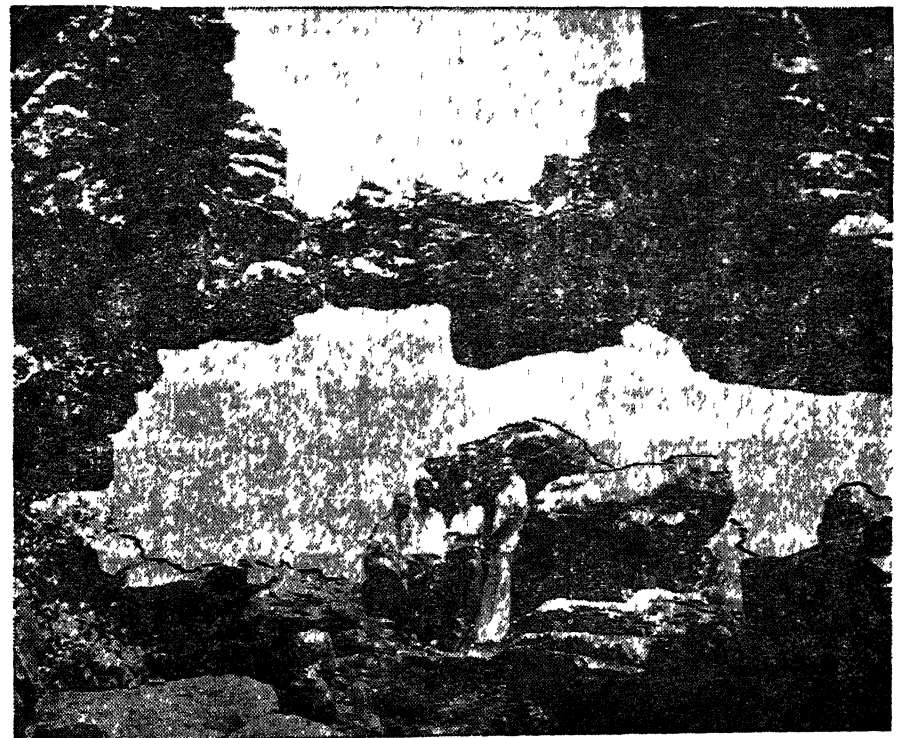
लिए आ रहे हैं। पौराणिक कथा के अनुसार भगवान श्री बालाजी मानव जाति की रक्षा के लिए "स्वयम्भू" बनकर तिरुमल पर्वत पर पधारे हैं। यह तो आश्चर्यजनक बात है कि इसकी ऊंचाई तथा भगवान की ध्रुव मूर्ति की ऊंचाई बराबर है। प्रचलित विश्वास है कि सर्व जगन्नाथ दिव्य शक्ति के रूप में तिरुमल पहाड पर उतरे और शिला तोरण प्रदेश को फोडकर बाहर आये। धीरे-धीरे अपनी उस शक्ति को नियंत्रण करके इस भूगर्भ सम्बन्धी त्रुटी को छोड दिया। और प्रस्तुत मदिर वाले प्रदेश में देदीप्यमान तथा महिमासम्पन्न मूर्ति के रूप में विराजमान हुए हैं। अत निश्चय ही कुछ प्राकृतिक शक्ति के कारण ही इस प्रकार के आकार की बनावट, तथा भूगर्भ सम्बन्धी त्रुटी का निर्माण भी हुआ। प्रचलित लोक विश्वासो को देखते यह निश्चय ही विलक्षण तथ्य है, जो शिला तोरण के निर्माण और भूगर्भ निर्माण सम्बन्धी अनिश्चतता, तथा भगवान का स्वयं व्यक्त होकर यहाँ पधारने में महत्वपूर्ण दीखता है। ☆

भक्त की विनती

श्री के. एन. वरदराजन्, एम. ए.,
कल्पाकम्।

तू देता है ऊँचे विचार,
तू ही मेरा पालनहार।
प्राप्त किया धन और नाम,
तू ने ही किया यह काम।
धन देने से दूसरों को,
मन में आती है खुशी।
रोग आता है मुझे कहाँ? कोई
योग जानता भी नही यहाँ।
पुरस्कार सदा है मिलता,
तिरस्कार कोई नही करता।
चाहता हूँ देश की उन्नति,
होती नहीं मेरी अवनती।
करता हूँ दूसरों की सेवा,
कहता हूँ यही मेरी मेवा।
तू ने मुझे दिया ज्ञान,
यही है तेरा प्रधान दान।
तू मेरे मन का राजा है,
यही ख्याल हमेशा ताजा है।
सभी समय सोचता हूँ तुझे,
तभी मिलती हैं शान्ति मुझे।
मेरा भाग्य है रही,
तेरा खेल है वही।

(पृष्ठ ५ का शेष)

धूम-धाम से मनानी चाहिए। गुरु भगवान का चित्रपट विराजकर विशेष प्रसाद बना भोग लगाकर आरती करना और श्रीवैष्णवों को प्रसाद देना, यदि प्रत्यक्ष में विराजे हो तो उस आनन्द का कहना ही क्या है, गुरु भगवान के जन्मोत्सव पर उनका जीवन चरित्र पढना चाहिए।

श्री गीता में कर्म, ज्ञान, भक्ति और शरणागति चार मार्ग प्रभु प्राप्ति के उपाय वर्णित हैं।

उसमें कर्म, ज्ञान, भक्ति सुनने में तो बहुत सुलभ हैं परन्तु करने में बहुत कठिन हैं, जब अर्जुन भी सुनकर "चञ्चल ही मनः कृष्ण, प्रमाथी बलवद्दृढम्" कहने लगा तो हम जीवों का तो कहना ही क्या हैं। शरणागति सुलभमार्ग है उसके बाद आचार्याभिमान हैं, हमसे कुछ नहीं बनता, सिर्फ आचार्यचरण ही हमारे सहायक हैं, सर्वे सर्वा हैं, आचार्यके सम्बन्ध से ही प्रभु हमें परम पद देगें। परन्तु हमें यह दृढ विश्वास होना चाहिए कि हम जैसे हैं आचार्य के हैं, बुरे हैं, भले हैं, खोटे हैं, अच्छे हैं, हमसे कुछ नहीं बनता है, हमारी चिन्ता आचार्य करेगे। उनका सम्बन्ध नही छोडना है। जैसे एक इञ्जन है, उसके पीछे आने को डब्बे लगे हैं, सभी डब्बे मन में सोचें जितना माल हैं सब तो हममें भरा हैं इञ्जन में कुछ नहीं, इसलिए रास्ते में इञ्जन से सम्बन्ध विच्छेद कर लिए, डिब्बे अकेले रह गये डब्बों को अकेले देख डाकू आए बोले इसमें से सब माल निकाल ला, माल निकालने के लिए उन्हें पीट कर ताला तोडने लगे कोई डिब्बा मुड गया, कोई टूट गया, सबकी बडी पिटाई हुई, दूसरे डब्बे जो इञ्जन के साथ लगे थे, वे बोले तुम लोग बडे मूर्ख हो, इञ्जन के साथ रहते तो तुम्हारो ये दशा नहीं होती, इञ्जन तुम्हें सुरक्षित स्थान पर ले जाकर छोड देता। किसी को हाथ लगाने की हिम्मत नही होती। इसी प्रकार इञ्जन की जगह गुरुदेव हैं और हम जीव डब्बे हैं गुरुदेव के सम्बन्ध को नही छोडेंगे तो हमें परम पद पहुँचा देंगे, यदि सम्बन्ध छोड देगे तो डब्बे वाली दशा हमारी भी होगी, अपने को तो इतना ही जानना है—

मै प्रभु तेरो तू प्रभु मेरो।
और कछु नाता नही जानू योही मन बेरो।

हम गुरु देव के है गुरुदेव हमारे हैं यह अभिमान मन में रहे कि हम गुरु चरणों के दास है उसी के सहारे हमारा उद्धार होगा। आचार्य का गुण वैभव बताना और कहना ठीक वसे ही है जैसे सूर्य को दीपक दिखाना, गुरुदेव में अनुग्रह शक्ति रहती है, भगवान तो निग्रह और अनुग्रह दोनों शक्ति से काम लेते हैं, परन्तु गुरुदेव तो सिर्फ अनुग्रह शक्ति से काम लेते हैं। सन्तों का हृदय मक्खन से भी ज्यादा मुलायम होता है। जैसे—

आधुनिक धर्म के सन्दर्भ में ज्ञान - विज्ञान

(गतांक से)

इसके पूर्व के लेख में न्यूक्लीय आविष्कारों के उज्ज्वल पक्ष पर कुछ प्रकाश डालने का उल्लेख किया गया था। किसी भी वस्तु के उज्ज्वल और श्याम पक्ष दोनों हुआ करते हैं। अब श्याम पक्ष के सम्बन्ध में यहाँ उल्लेख किया जाता है जिसे न्यूक्लीय राजनीति के आविष्कर्ता ने अपने आणुविक यन्त्रों की सहायता से मेरे ऊपर प्रयोग किया।

मन पर न्यूक्लीय का जादू टोना (Black magic on the mind by nuclear):—

पहले के जादू-टोना के प्रयोगकर्ता किसी के राशिनाम पर जादू-टोना चलाया करते थे। अत: बडे बडे बादशाह एव राजे-महाराजे कभी भी एक कक्ष में नहीं सोते थे। उनका सोने का स्थान गुप्त रहता था। वे अपने जीवन के लिए सतर्कता बरतते थे।

जादू-टोना में यदि अपने किसी दुश्मन को सताना या मारना रहता था तो उसकी एक प्रतिच्छवि बना कर उसपर अनिष्टकारी मन्त्रों का प्रयोग किया जाता था। अत: वह व्यक्ति भी प्रभावित हो जाता था जिसकी प्रतिच्छवि पर इच्छा-शक्ति (will-force) या अनिष्टकारी मन्त्रों का प्रभाव डाला जाता था। इसी सिद्धान्त पर आधारित मारण उच्चाटन एवं वशीकरण मन्त्रों की सिद्धि की जाती थी। किसी औरत या दुश्मन को अपनी ओर आकर्षित करना रहता था तो उसपर वशीकरण-मन्त्र, अगर दुश्मन को मारना रहता था तो उस पर मारण-मन्त्रों का प्रयोग किया जाता था। इस पर मन्त्रों के अलावा प्रयोगकर्त्ता की इच्छा-शक्ति भी काम करती थी। साधारणत: इस अधम प्रक्रिया को लोग नहीं अपनाते थे क्यों कि इसके प्रयोग कर्ता को अधम गति प्राप्त होती थी और यदि किसी धार्मिक व्यक्ति पर उसका प्रयोग किया जाता था अपने से बलवान इच्छा-शक्ति (will force) वाले व्यक्ति पर इस जादू-टोने का प्रयोग किया जाता तो उसका उल्टा असर हो जाता था। और निर्दिष्ट व्यक्ति प्रभावित न होकर प्रयोगकर्ता स्वय प्रभावित हो जाता था। अत: इस जादू टोने का प्रयोग करने में लोग हिचकिचाते थे और उसका प्रयोग कभी कदाचित हुआ करता था। धन के लोभ में आकर लोग इसका प्रयोग किया करते थे।

जादू-टोना (Black magic) सिखाने वाले गुरू अपने शिष्य को चेतावनी दे देते थे कि इस विद्या का प्रयोग जन-साधारण में मानवता की भलाई के लिए किया जाय। आज भी श्मशान में जो साँप विच्छू झाडने का मन्त्र सीखते हैं, उनसे यह प्रतिज्ञा करवायी जाती है कि जब कभी भी कहीं से पीडित व्यक्ति का बुलावा आये या किसी को साँप या बिच्छु काटने के सम्बन्ध में सुनें तो वे उसकी सहायता के लिए तुरंत उपस्थित हों। मानवता की भलाई, पीडित व्यक्ति को चंगा करने से उनके मन्त्रों का प्रभाव बढेगा और उनकी सिद्धि में वृद्धि होगी। अगर सीखी हुई विद्या को मानवता की भलाई में प्रयोग नही किया गया तो उनके मन्त्रों का प्रभाव नष्ट हो जायेगा।

साहित्यरत्न श्री अर्जुन शरण प्रसाद,
चक्रधरपुर.

किन्तु, लोभ में आकर मनुष्य उन विद्याओं का प्रयोग अपने स्वार्थों की पूर्ति में करने लगा।

आज का आणुविक विज्ञान या 'न्यूक्लीय साइन्स' जिसे मनुष्य पर प्रयोग किया जा रहा है, वह जादू-टोना (Black magic) के सिवा कुछ भी नहीं है। कोई भी विज्ञान न तो अपने में अच्छा है न बुरा। वैज्ञानिक तो सृष्टि के अविदित रहस्यों को खोल कर हमारे समक्ष रख देते हैं। अब यह हम हैं कि उनका प्रयोग हम लोग स्वार्थ में आकर अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए करते हैं। पहले के जादू-टोना (Black magic) और आज के कुप्रभावी आणुविक-विज्ञान में फर्क सिर्फ यही है कि पहले लोग मन्त्रों और अपनी इच्छा-शक्ति के बल पर जादू-टोना किया करते थे, किन्तु, आज उसी प्रक्रिया का सबसे आधुनिकतम रूप आणुविक-यन्त्रों की सहायता से लोग अपना रहे हैं। आज का न्यूक्लीय साइन्स' या आणुविक विज्ञान, उस प्रक्रिया को अणु द्वारा प्रयोग कर रहा है।

किसी मनुष्य के शरीर में आणुविक शाक देकर उसके शरीर की थोडी सी गर्मी (energy) या जीवद्रव्य (Protoplasm) लेकर उसकी आणुविक प्रतिच्छवि तैयार कर ली जाती है। अध्यात्म-विद्याविशारदों का कहना है कि एक बूंद पानी में पूरा ब्रह्माण्ड समाहित है। पिता के धातु और माँ के रजकण में मनुष्य का साढे-तीन हाथ का शरीर छिपा है। वट वृक्ष के एक छोटे से बीज में पूरा विशाल वट-वृक्ष का आकार मौजूद है। उसी प्रकार मनुष्य के शरीर की थोडी सी गर्मी (energy)

या जीवद्रव्य (Protoplasm) या कुछेक अणुकण में पूरा मानव शरीर छिपा हुआ हैं। अर्थात् मनुष्य शरीर के सूक्ष्म अणु कण पूरे मानव की आशा, आकाक्षाओं, इच्छाओं, सवेदनाओं विचारों इत्यादि का प्रतिनिधित्व करता है। धार्मिक शास्त्रों में कहा गया है कि मरने पर मनुष्य का लिंग-शरीर (astral body) एक अंगूठे इतना बडा रहता है और उसी में मनुष्य के सस्कार, मन, बुद्धि, प्राण इत्यादि समाविष्ट एवं समाहित रहते हैं।

मनुष्य के शरीर की ऊष्मा या गर्मी लेकर जो एक आणुविक प्रतिच्छाया-शरीर तैयार की गई उसे थीयासोफिकल शब्दों में इथरिक डबुल (Etheric double) चाहें तो कह सकते हैं। शरीर की आणुविक गर्मी से जो एक प्रतिच्छवि तैयार हुई उसे आणुविक-यन्त्रों या आणुविक कम्प्यूटर में भर दिया जाता है। अब उस आणुविक छाया शरीर को जिस रूप में भी प्रभावित किया जायेगा उससे मनुष्य प्रभावित हो जायेगा। वह जिस प्रकार सोचेगा, आज का आणुविक कम्प्यूटर उसके विचारो को उसी प्रकार अन्तरिक्ष में गुंजाने लगेगा। सक्षेप में कह सकते हैं कि उसका दूसरा शरीर उस पहले शरीर का प्रतिबिम्ब है। होमियोपैथिक का सिद्धांत भी इसी आणुविक-सूक्ष्म सिद्धान्त पर आधारित है। आत्मा अत्यन्त सूक्ष्म है। अब यदि किसी दवा के सूक्ष्मातिसूक्ष्म अणु को मनुष्य पर प्रयोग किया जाय तो उससे सीधे उस की आत्मा, प्राण एव मन प्रभावित हो जायेंगे और जैसा कि 'मन एवं मनुष्या नाम कारणं बन्ध मोक्षयोः' अर्थात्, मन ही बन्धन एवं मोक्ष का कारण बनता है। मन को प्रभावित करने से शरीर प्रभावित होता है और शरीर की यातनाओं एवं पीडाओं का असर मन पर पडता है क्यों कि मन और शरीर एक दूसरे पर आश्रित हैं, एक दूसरे से जुडे हुए हैं और एक को कष्ट देने से दूसरा कष्ट पाता है। बहुत लोगों को यह बात विचित्र लगती होगी कि वह चाहे उसकी रूह या आत्मा कुछ और हैं और उसका शरीर कुछ और। मनुष्य त्रिगुणात्मक है अर्थात् वह आत्मा है, आत्मा पर प्राण और भौतिक शरीर हैं। अतः तीन लोगों का वर्णन है, तीन गुणों का वर्णन है एवं प्रत्येक के अपने अपने शरीर हैं।

अर्थात् मनुष्य के पास तीन शरीर हैं। जिस प्रकार धरती पर चलने के लिए मोटर यान एवं तरह तरह की सवारियाँ हैं, समुद्र या नदी में चलने केलिए जलयान या नाव इत्यादि हैं और आसमान में चलने के लिए वायुयान जेट इत्यादि है; किन्तु उन तीनों जगह अर्थात, जल, थल और नभ में विचरने पर भी यात्री वही रहता है उसी प्रकार शरीर मन एवं आत्मा के द्वारा विभिन्न स्तर पर कार्य होते रहते पर भी उस का यात्री भी वहीं रहता है। पार्थिव जगत में आत्मा भौतिक शरीर से कार्य करती है, सूक्ष्म लोग में आत्मा मन द्वारा कार्य करती है एवं आध्यत्मिक लोक में आत्मा अपने असली स्वरूप में काम करती है अर्थात आत्मा के गुण सत् + चित् + आनंद में विचरती है।

सूक्ष्म दवा का सिद्धान्त:— आज होमियो पैथिकदवा ने यह साबित कर दिया हैं कि सूक्ष्म दवा का प्रभाव सूक्ष्म मन पर होता है। मन को प्रभावित करने से शरीर प्रभावित हो जाता है। आज एक मनुष्य कही भी चाहे हजारों मील दूर क्यों न रहे उसके सिर के एक बाल को हजारों मील दूर जिस प्रकार की दवा की सीसी में डुबोया जायेगा उसका प्रभाव सीधे उस मनुष्य पर होगा। मानव के मन पर न्यूक्लीय शक्ति का प्रयोग भी इसी तथ्य पर आधारित है।

मानव मन पर आणुविक राजनीति :

किसी भी तथ्य को समझ ने के लिए भिन्न भिन्न दृष्टिकोण होने है और एक ही बात को विभिन्न रूपों में समझा जाता है। इस राजनीति के आविष्कर्ता की रण-नीति

(शेष पृष्ठ २९ पर)

श्री वेङ्कटेश्वरस्वामीजी का मंदिर, तिरुमल.

अर्जित सेवाओं की दरें

विशेष दर्शन .. रु. 25–00

सूचना — एक टिकट के द्वारा एक ही दर्शनार्थी भगवान के दर्शन प्राप्त कर सकेगा ।

I सेवाएं :—

१ अमत्रणात्सव	रु	200	७ जाफरा बरतन (Vessel)	रु	100
२ पूलगि		60	८ सहस्रकलशाभिषेक		2500
३ पूरा अभिषेक		450	९ अभिषेक कोइल आलवार		1745
४ कर्पूर बरतन (Vessel)		250	१० तिरुप्पाबडा		5000
५ पुनुगु तेल का बरतन (Vessel)		100	११ पवित्रोत्सव		1500
६ कस्तूरि बरतन (Vessel)		100			

सूचना – **सेवासख्या१** — इस सेवा में दो व्यक्ति ही दर्शन प्राप्त कर सकेंगे । जिस दिन प्रात काल तोमाल सेवा और अर्चना की है केवल उसी दिन रात में एकान्तसेवा के लिए भी भक्त दर्शनार्थ जा सकते है ।

सेवा क्रमसख्या २–यह सेवा केवल गुरुवार की रात को मनायी जाती है । केवल 2 व्यक्ति ही दर्शन पाप्त कर सकेंगे ।

सेवा क्रमसख्या ३–७ — केवल शुक्रवार को मनायी जाती है । इन सेवाओ के लिए प्रवेश इस प्रकार होगा —

क्रमसख्या ३ – बर्तन के साथ केवल २ व्यक्ति ।
४ – बर्तन के साथ केवल २ व्यक्ति ।
५ – ७ – बर्तन के साथ केवल एक व्यक्ति ।

सेवा क्रमसख्या ८ – १० – प्रत्येक सेवा सम्पूर्ण दिन का उत्सव है । सेवा करानेवाले भक्त को प्रसाद दिया जायगा, जिस मे बडा, लड्डू, अप्पम दोसा इत्यादि होग । इस के अतिरिक्त सेवा न. ८ के लिए वस्त्र भी भेंट के रूप में दिया जायगा । सहस्र कलशाभिषेक, तिरुप्पाबडा तथा पवित्रोत्सव सेवाओ में हर एक सेवा को १० व्यक्ति जा सकते है ।

साधारण सूचना:–रिवाजो के अनुसार दातम (Datham) और आरती के लिये एक रुपये का अतिरिक्त शुल्क अदा करना पडेगा ।

II **उत्सव** —

१. वसन्तोत्सव	रु.	2500	४. प्लवोत्सव	रु	1500
२. कल्याणोत्सव		1000	५ ऊँजल सेवा		1000
३ ब्रह्मोत्सव		750			

सूचना :– १ वसन्तोत्सव – जो भक्त वसन्तोत्सव मनाना चाहते हैं उनकी सुविधा के अनुसार और मंदिर की सुविधा के अनुसार यह उत्सव तीन दिन अथवा उससे कम दिनो मे मनाया जायगा और उन्हे वस्त्र पुरस्कार मिलेगा ।

२ ब्रह्मोत्सव :– इस उत्सव को जो यात्री मनाना चाहते हैं अपने साथ ६ साथियो को ला सकते है, तथा तोमाल्सेवा, अर्चना और रात को एकान्तसेवा में भाग ले सकते है। यह उत्सव तीन दिन तक अथवा उससे कम दिनो में यात्री की सुविधा के अनुसार और मंदिर की सुविधा के अनुसार मनाया जायगा । उत्सव के दिनो में उस के मनानेवाले का पोंगल और दोसा इत्यादि प्रसाद भी दिये जायेंगें । उत्सव के अन्त मे वस्त्र पुरस्कार दिया जायगा ।

३ कल्याणोत्सव या श्रीस्वामीजी के विवाहोत्सव के अन्त मे वस्त्र पुरस्कार और लड्डू, बडा, पापड, दोसा आदि नियमानुसार प्रसाद के साथ दिये जायेंगे ।

III वाहन सेवाएँ :–

१ वाहन सेवा सर्वभूपाल वज्रकवच सहित ७२+१ (आरती)	रु	73
२ वज्रकवचसहित वाहनसेवा स्वर्ण गरुडवाहन, कल्पवृक्ष, बडा शेषवाहन, सर्वभूपाल, सूर्यप्रभा, प्रत्येक ६२+१ (आरती)	...	63
३ चाँदी गरुडवाहन, चन्द्रप्रभा, गज (हाथी) वाहन, अश्ववाहन, सिंहवाहन, हंसवाहन, प्रत्येक ३२+१ (आरती)	...	33

सूचना :– वाहनसेवा मनानेवाले गृहस्थ को प्रसाद में एक बडा दिया जायगा ।

साधारण सूचना :– न ३ और ४ के लिये दातम और आरती के लिये समय और रिवाजानुसार एक एक रुपये का अतिरिक्त शुल्क अदा करना होगा ।

IV भगवान को प्रसाद (भोग) समर्पण (१/४ सोला) : –

१. दहींभात	रु	40	४ शक्करपोंगलि	रु	65	७ शक्करभात	रु	85
२ बघार भात	.	50	५ केसरीभात	..	90	८ शीरा	..	155
३. पोंगलि(घी और मिर्चभात)		55	६ पायसम (खीर)	...	85			

सूचना :—भोग के बाद प्रसाद भक्त को दिये जायेंगे । भोग के बाद अपने प्रसादो को भक्त लोग आकर अपने बर्तन में स्वीकार करेंगें ।

V. पक्वान्नों की भेंट :—

१ लड्डू	रु.	450	४. दोसे	रु	100	७ सुखी	रु	200
२ बडा		250	५ पापड	..	230	८ जिलेबी	...	450
३ पोली	..	225	६ तेनतोल	...	200			

सूचना —जो गृहस्थ उपर्युक्त पक्वानो की भेंट देते हैं उन्हे भोग के बाद ३० पनियारम दिये जायेंगे । प्रसाद-पन्यारम को गृहस्थ स्वय आकर मन्दिर से ले जा सकते है । भोग के बाद मन्दिर की दूसरी घंटी बजते ही प्रसाद पन्यारम दिया जायगा ।

VI. नित्य सेवाएँ :—

१ नित्य कर्पूर हारती रु 21 २ नित्य नवनीत आरती रु. 42 ३ नित्य अर्चना रु 42

सूचना :—नित्य सेवाओ के लिये प्रथम वर्ष में अतिरिक्त रूप से देय शुल्क वर्ष के पहले हर एक सेवा के लिए अग्रिम के रूप में देना पडेगा । जो भक्त इन नित्य सेवाओ को मनाते हैं उनको भगवान के दर्शन केलिए प्रवेश नही मिलेगा । भक्तो की अनुपस्थिति में ही उनके नाम पर इन सेवाओ को सपन्न किया जायगा ।

———

गायत्री की महिमा

गायत्री की महिमा अपरम्पार है। यह मन्त्रों में सर्वश्रेष्ठ आर्यजाति की चिरन्तन प्रार्थना है। तिमिर-मयी रजनी में विच्छिन्न-पथ पर चलने वाली मानवता के लिए यह पथ-प्रदर्शक-स्तम्भ है। इसमें सगुण साकार परब्रह्म की शाश्वत उपासना है और मानवता को निम्न स्तर से उच्चस्तर पर ले जानेवाला एक अद्भुत संकेत है। अविद्या के अन्धकार में मानवता भटक रही है, उसे अन्धकार से प्रकाश में जाने की आवश्यकता है। वह उत्ताल-तरङ्गमाला-सकुल विश्व पयोधि में गोता खाते रहता है, उसे एक ऐसी तरणी की आवश्यकता है जो भव सागर के उठते हुए ज्वार में उसे मृत्यु से अमरत्व की ओर ले आवे।

जब मनुष्य जीवन की उलझनों से घबराकर कह उठता है कि—

ऐसा निन्दित कर्म नहीं है जिसे न शतशः
कर पाया हूँ।
जीवन की झोली में प्रियतम, ककड कंटक
चुन लाया हूँ॥
जीवन नौका जीर्ण पड़ी है, उठती प्रबल
ज्वार।
कैसे पहुँचेगी यह तेरे स्वर्णधाम के द्वार॥

जिस समय वह निःसहाय और असमर्थ होकर भगवान् से कहता है कि—

माझी मेरे चलो मुझे ले, इस अज्ञान सिन्धु
के पार।
जहाँ न होगी अन्तस्तल में माया-वीणा की
झकार॥

उसी समय गायत्री देवी प्राची के प्रागण में अरुणराग-रजित ऊषा-देवी की तरह अमृत का कुम्भ मानवों के सम्मुख उडेल देती है और अपने मधुमय सकेत से मानवों की चिर-पिपासा शान्त कर देती है। गायत्री में अलौकिक शक्ति है, अद्भुत सौन्दर्य है और मधुमय आलोक है।

गायत्री वेद-माता है। यह साक्षात् जगज्जननी परमात्मा की आदि शक्ति और मानवता की पथप्रदर्शिका है। महाप्रलय में सम्पूर्ण वेद-सम्पन्न ज्ञान गायत्री में विलीन हो जाता है और गायत्री प्रणव (ॐ) के अङ्क में शयन करती रहती है। प्रलय के अन्त में जब भगवान् सृष्टि का स्वप्न देखते हैं और सोचते हैं कि एकोऽहं बहुस्याम् प्रजायेय तब गायत्री देवी अगडाई लेती है और ऐसा करने से उनके अङ्ग से दो कण-भूति (Matter) और क्रिया शक्ति (Energy) निकल पडते हैं और इस विशाल प्रकृति के कलेवर का निर्माण करते हैं। गायत्री में जो स्वर है, जो नाद है, जो ध्वनि है, उसी से आकाश तत्व का इस विशाल अन्तरिक्ष का निर्माण होता है, जिसमें असंख्य ब्रह्माण्ड तथा तारे मण्डल तैरते उपलाते रहते हैं।

सत्य के अन्वेषण में एवं मानवता के पथ-प्रदर्शन के लिए ससार में बहुत से दीपक जले हुए हैं, पर गायत्री की स्वर्ण-रश्मियाँ सम्पूर्ण भारतवर्ष को उद्भासित कर पाश्चात्य देशों में भी अपनी किरणें विकीर्ण कर रही हैं। आज का ससार भौतिक विज्ञान की ओर दौड़ा जा रहा है, प्रकृति के अन्तराल में जो शक्तियाँ अन्तर्हित और सुषुप्त हैं, आज का मानव उन्हें जगाकर अपने अधिकार में करना चाहता है, पर उसके अन्तस्थल में विराट् पिपासा और विकराल ज्वाला वर्तमान है।

है बहुत बरसी धरित्री पर अमृत की धारा।
पर नहीं अब तक सुशीतला हो सका ससार॥

इसी विकराल ज्वाला की शान्ति के लिए गायत्री का जप और चिन्तन परमावश्यक है।

डा० जयनारायण मल्लिक, प्राचार्य,
बिहार.

आज के युग में लोगों का ध्यान राजनीति, अर्थ शास्त्र और विज्ञान की ओर लगा हुआ है, पर उस हिम-हिमान हृत् दीपक की ओर किसका ध्यान है जो चैतन्य के रूप में हमारे शरीर के अन्तर्गत जल रहा है। लोग धर्म और नीति से उदासीन हो चले हैं नवीन आविष्कारों की चकाचौंध में हमारी आँखें झुक जाती हैं।

धरती नभ को सँभाले बुद्धि की पतवार।
क्या ... ज्योति की नव भूमि के सम्मान।
नव चेतना नित्य नूतन वृद्धि का त्यौहार।
प्राण में बरते दुखी हो देवता चीत्कार॥

यह चीत्कार तब तक शान्त नहीं होता जब तक मनुष्य गायत्री का समुचित जप अनुसन्धान और सम्यक् उपासना नहीं कर लेता है। गायत्री की मधुमय ज्योति की ओर सकेत करते हुए हमारे महर्षि कह उठते हैं—

नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।

आज मानव जीवन अशान्त है। अनवरत सघर्ष के बीच वह कुछ टटोल रहा है—वह शाश्वत शान्ति चाहता है। पर वह शान्ति मिलेगी कैसे? पाश्चात्य ससार एक ओर तो विज्ञान के द्वारा प्रकृति पर विजय प्राप्त करना चाहता है और दूसरी ओर भोग वासना की चकाचौंध में आनन्द प्राप्ति का व्यर्थ प्रयास भी कर रहा है।

एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को ठगना चाहता है—उसे हडपना चाहता है। जीवन में वैषम्य इतना बढ गया है कि इसकी प्रतिक्रिया के रूप में साम्यवाद कभी-कभी झाकी दे जाता है। प्राच्य जगत की दशा भी अधिक सतोषप्रद नहीं। यहाँ भी विद्या विवाद के लिए, धन अभिमान के लिए और शक्ति दूसरों को पीडा पहुँचाने के लिए एकत्र की जाती है। गायत्री का अनुसन्धान मनुष्य को सही रास्ते पर ले आता है। विद्वान को हठी नहीं होना चाहिए, विद्या तो एक प्रकाश है, उसकी सहायता से सत्य का अन्वेषण करना चाहिए। जिसके हाथ में रोशनी

श्रीवेङ्कटेश्वरस्वामीजी का मन्दिर, तिरुमल.

१–३–७९ से

दैनिक पूजा एवं दर्शन का कार्यक्रम

शनि, रवि, सोम तथा मंगलवार

प्रात	3–00 से 3–30 तक	सुप्रभान
,,	3-30 , 3–45 ,,	शुद्धि
.	3–45 ,, 4–30 ,,	तोमालसेवा
,,	4–30 , 4–45 ,,	कोलुवु तथा पचागश्रवण
	4–45 5–30 ,,	पहली अर्चना
,,	5–30 ,, 6–00 ,	पहलीघटी तथा सात्तुमोरै
,,	6–00 , 12–00 ,,	**सर्वदर्शन**
दोपहर	12–00 , –00 ,,	दूसरी अर्चना
,,	1–00 ,, 8–00 ,,	**सर्वदर्शन**
रात	8–00 ,, 9–00 ,,	शुद्धि तथा रात का कैंकर्य
,,	9–00 ,, 12–00 ,,	**सर्वदर्शन**
,,	12–00 ,, 12–30 ,,	शुद्धि
,,	12–30	एकान्त सेवा

बुधवार (सहस्र कलशाभिषेक)

प्रात	3–00 से 3–30 तक	सुप्रभात
,,	3–30 ,, 3–45 ,,	शुद्धि
,,	3–45 ,, 4–30 ,,	तोमाल सेवा
,,	4–30 ,, 4–45 ,,	कोलुवु तथा पचाग श्रवण
,,	4–45 ,, 5–30 ,,	पहली अर्चना
,,	5–30 ,, 6–00 ,,	पहलीघटी तथा सात्तुमोरै
,,	6–00 ,, 8–00 ,,	सहस्र कलशाभिषेक
,,	8–00 रात 8–00 ,,	**सर्वदर्शन**
रात	8–00 ,, 9–00 ,,	**शुद्धि**
,,	9–00 ,, 12–00 ,,	**सर्वदर्शन**
,'	12–00 ,, 12–30 ,,	शुद्धि

गुरुवार (तिरुप्पावडा)

प्रातः	3–00 से 3–30 तक	सुप्रभात
,,	3–30 ,, 3–45 ,,	शुद्धि
प्रात	3–45 से 4–30 तक	तोमाल सेवा
,,	4–30 ,, 4–45 ,,	कोलुवु, तथा पंचागश्रवण
,,	4–45 ,, 5–30 ,,	पहली अर्चना
,,	5–30 ,, 6–00 ,,	पहली घटी, बाली तथा सात्तुमोरै
,,	6–00 ,, 8–00 ,,	सडलिपु, दूसरी अर्चना तिरुप्पावडा, अलकरण घटी इत्यादि
,,	8–00 रात 8–00 ,,	**सर्वदर्शन**
.	,, 10–00 ,,	शुद्धि इत्यादि पूलगि समर्पण रात का कैंकर्य, घटी
,,	10–00 ,, 12–00 ,,	पूलगि सेवा (अर्जित)
,,	12–00 ,, 12–30 ,,	**शुद्धि**, एकात सेवा

शुक्रवार (अभिषेक)

प्रात	3–00 से 3–30 तक	सुप्रभात
,,	3–30 ,, 5–00 ,,	सडलिपु का नित्य कैंकर्य (एकात)
,,	5–00 ,, 7–00 ,,	अभिषेक (अर्जित)
,,	7–00 ,, 8–30 ,,	समर्पण
,,	8–30 ,, 9–30 ,,	तोमाल सेवा अर्चना, घटी बालि तथा सात्तुमोरै
,,	9–30 ,, 10–00 ,,	दूसरी घटी, सात्तुमोरै
,,	10–00 रात 8–00 ,,	**सर्वदर्शन**
रात	8–00 ,, 9–00 ,,	शुद्धि, रात का कैंकर्य
,,	9–00 , 12–00 ,,	**सर्वदर्शन**
,,	12–00 ,, 12–30 ,,	**शुद्धि**
,,	12–30	एकात सेवा

सूचना ,१ उक्त कार्यक्रम किसी त्योहार तथा विशेष उत्सव दिनो के अवसर पर समयानुकूल बदल दिया जायगा । २. सुप्रभात दर्शन केलिए सिर्फ रु २५/– टिकेटवालो को ही अनुमति मिलेगी । ३. रु २५/– के टिकेट तिरुमल मे तथा आन्ध्रा बैंक के सभी शाखाओ मे मिलेगी । ४ सेवानंतर टिकेट को रद्द कर दिया गया । ५. प्रत्येक दर्शन के टिकेटवालो को पहले के जैसे ध्वजस्थभ के पास से नही, बल्कि महाद्वार से क्यू मे मिलाया जायगा । ६. रु २००/– के अमत्रणोत्सव टिकेट पर दो ही व्यक्तियो को भेजा जायगा । ७. अर्चना, तोमाल सेवा, एकातसेवा में दर्शनानंतर टिकेट या रु. २५/– का टिकेट नही बेचा जायेगा ।

—पेष्कार, श्री बालाजी का मंदिर, तिरुमल.

है. वह यदि दूसरो को गुमराह करे, दूसरो को सच्चा रास्ता नहीं दिखलाते, तो यह विद्या का दुरुपयोग होगा । एक मूर्ख यदि भूल करता है, तो वह केवल अपने आप नष्ट होता है, राष्ट्र की विशेष क्षती नहीं होती, किन्तु यदि एक पण्डित तथा नेता भूल करता है, तो वह अपने साथ हजारो को डूबो देता है, क्योंकि उसके अनुयायी हजारो रहते है। पण्डितो और नेताओ को निःस्वार्थ भाव से गायत्री के माध्यम से मानवता की सेवा और सत्य अन्वेषण करना चाहिए। मानव जीवन का लक्ष क्या है? दुःख की निवृत्ति और सुख की प्राप्ति, पर यह होगी कैसे? असंख्य दार्शनिक, वैज्ञानिक, राजनीतिज्ञ कवि और कलाकार आये और मानवता के पथ पर दीपक जलाकर चले गये । असंख्य दीपो की चकाचौंध से दुर्बल त्रस्त मानवता कि कर्तव्य विमूढ हो गई । वह क्या करे? किधर जाय? भिन्न-भिन्न दीपक भिन्न-भिन्न मार्गो की ओर सकेत कर रहे हैं । स्मृतियो में, दर्शनो में, पुराणो में भिन्न-भिन्न उपायो की झलक है । मानवता किस निश्चित पथ का अवलम्बन करे ?

श्रुति पुराण बहु कहेउ उपाई ।
सुलझ न अधिक अधिक अरुझाई ।।

—रामचरितमानस

हमारे महर्षियों ने इसी भयभीत, बद्ध, व्याकुल मानवता के पथ-प्रदर्शन के लिए गायत्री का सर्वोत्तम दीपक हमारे सामने रक्खा है । मानव जीवन मे दुःख की समस्या का समाधान करने के लिए असख्य महामानव इस भूतल पर अवतीर्ण हुए और उन्होने जीवन को सुखी, समुन्नत और परिष्कृत बनाने की भरपूर चेष्टा की। सृष्टि के आरम्भ में ही लोगो ने देखा कि जीवन की सबसे बडी यातना मृत्यु है, अतः जीवन को सुखी बनाने के लिए मृत्यु पर विजय प्राप्त करना आवश्यक है । विद्वान लोग अमरत्व के अन्वेषण में लग गये । भव सागर अथवा त्रिगुणात्मिका प्रकृति का मन्थन हुआ । इस विराट विश्व में विष के रूप मे तम, मदिरा के रूपरज, तथा अमृत के रूप में सत्व दृष्टि-गोचर हुआ । भव-सागर के मन्थन से अनेक रत्न निकले । अमृत का घडा भी निकला । भौतिकवादी और अध्यात्मवादी, दोनो के सहयोग से अमृत का पता लगा था । दोनो के दो दृष्टि कोण थे । एक अपने इसी भौतिक शरीर को अमर करना चाहते थे, दूसरे ने देखा कि मानव जड और चेतन, दोनो का समन्वय है । जड तो विकारी और परिणामवादी है । प्रत्येक क्षण वह बदलता रहता है, उसके रूपमे आमूल परिवर्तन ही का नाम तो मृत्यु है । चेतन को जड के सम्पर्क से सर्वदा अलग कर देना ही अमरत्व की प्राप्ति है । प्रथम दल ने स्थूल शरीर को दीर्घायु रखने की भरपूर चेष्टा की । इन्होने देखा कि मानव शरीर के भिन्न-भिन्न अवयवों के जीर्ण होने से, समुचित भोजन और व्यायाम न मिलने से रोग, कीटाणुओ के आक्रमण से शरीर यन्त्र बिगड जाता है और मनुष्य मर जाता है । रसायन शास्त्र ने रसो का, आयुर्वेद ने औषधियों का, और हठयोग ने आसनो एव व्यायामों का आविष्कार किया, जिनसे मनुष्य सैकडे वर्षो तक जी सकते थे तथा अपने रूप और यौवन को अक्षुण्ण रख सकते थे । सोमरस के सेवन से वृद्धो में भी कान्ति और यौवन आ जाते थे । प्रणायाम और ब्रह्मचर्य से शरीर के विकास मे पर्याप्त सहायता मिलती थी ।

बहुत दिनो तक भौतिक विज्ञान वादियो और अध्यात्मवादियो में संघर्ष चला कि शरीर और आत्मा दोनो में किसकी प्रधानता है । गायत्री न शरीर की अवहेलना करती है, न आत्मा की।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविशेच्छत स्मा: ।
एव त्वयि नान्य थे तोस्ति न कर्मेनु लिप्यते नरे ।।

—ईशावासोपनिषत्

गायत्री हमें असत् से सत् की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर तथा मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जाती है । आर्यो की सनातन प्रार्थना है—

असतो मा सद्गमय, तमसोमा ज्योतिर्गमय,
मृत्योर्माऽमृतं गमय ।

गायत्री जीवन की यातनाओ से पीडित, अन्धकार मे संकीर्ण पिच्छल पथ पर लड-खडाती हुई मानवता को बल, पौरुष एवं पथ प्रदर्शन के लिए नीलगगन मण्डल में एक शुभ्रमय मधुमय आलोक देती है । आज हमारी संस्कृति पर पाश्चात्य देश का एक धूमिल वातावरण आ गया है । यवनिका के उस पार में स्वार्थ और भोग लिप्सा का विशाल नर्त्तन है । दुनियाँ भोग-लालसा के शिखर पर चढने के लिए तेजी से दौड रही है । विज्ञान नये नये चमत्कार दिखा रहा है । राजनीति और अर्थशास्त्र भौतिक तथा सामाजिक जीवन का विश्लेषण कर रहा है । भोग-लालसा के शिखर पर जब वासना जोरो से चीत्कार करेगी—'मुझे नवीन भोजन दो, ससार के सारे भौतिक पदार्थो का रस मै चख चुकी, वे अब फीके पड गये ।' तब मानवता सोचेगी—'ततः किम्?' वह सम्हलेगी और महसूस करेगी कि वह गलत रास्ते पर थी । जीवन मे त्याग और तपस्या, स्नेह और बलिदान की जितनी बडी आवश्यकता है, उतनी भोग-वासना की नहीं । उस समय पद दलित मानवता के पथ-प्रदर्शन के लिए गायत्री प्रकाश और शक्ति प्रदान करेगी । सावन भादो की अन्धेरी रातों मे काले-काले बादल उमड-उमडकर कुछ काल के लिए भले ही आकाश को आच्छन्न कर लें, पर इससे सूर्य का नाश नहीं हो सकता । शीघ्र ही प्राची के प्रागण में उषादेवी तरुण-रंग-रजित नवीन परिधान धारण कर हेम कुम्भ ले इस शिथिल भूतल पर अमृत की धारा उडेल देती है । मानवता जब भोग-वासना की ओर झुक जाती है, तो उसका नाम हो जाता है 'पशुता' और मानवता जब उलट जाती है, तो उसका नाम हो जाता है 'दानवता' पशुता मानवता की कमजोरी है, दानवता मानवता की मौत । देवता बलिदान चाहता है । मानवता के अन्तर्गत जो पशुता घुस गई है, वह उसे ऊपर उठने नहीं देती, उल्टे उसे भोग-वासना की ओर घसीटती है । हमें पशुता का बलिदान करना है । हमें निरीह पशु का बलिदान करना नही है, हमारे अन्तःस्थल में जो प्रबल पशुता और दानवता घुस गयी है, उसी अजा और महिषासुर का बलिदान करना है । वासना ही पशुता है, वह अजा है, उसका जन्म नहीं होता, वह मानव हृदय में सदैव वर्तमान रहती है । पशुता और दानवता को हनन कर मानवता को पवित्र और निर्मल बनाना गायत्री का सकेत है । मानव हृदय में सदैव देवासुर-सग्राम होता रहता है । देवता मनुष्य को निम्न स्तर से उच्चस्तर पर ले जाना चाहता है, असुर मनुष्य को पाप, हिंसा और असत्य की ओर घसीटता है ।

(क्रमश)

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

तिरुमल – यात्रियों को सूचनाएँ

भगवान बालाजी के दर्शन

ति. ति देवस्थान को यह विदित हुआ कि कुछ धोखेबाज व्यक्ति यात्रियों ने पैसे लेकर भगवान के दर्शन शीघ्र ही करवाने का वादा कर रहे है

देवस्थान यात्रियों को विदित करना चाहता है कि जहाँ तक सभव हो एक सयत एव क्रम पद्धति में भगवान बालाजी क दर्शन कराने का भरसक प्रयत्न कर रहा है। प्रतिदिन दस हजार से अधिक यात्री भगवान बालाजी का दर्शन करने आते हैं और दर्शन की सुविधा केलिए दिन में १४ घटे का समय मदिर का द्वार खोल दिया जाता है जिस में ११ घटे सर्वदर्शन केलिए नियत है। यदि यात्रियों की भीड अधिक हो तो क्लोजड षेड्स से और अधिक न हो तो सुरक्षित महाद्वार से दर्शन का प्रबध किया जा रहा है।

वे यात्री जो समय के अभाव, अस्वस्थता अथवा अन्य किसी कारणवश क्यू में खडे नही सकते वे प्रति व्यक्ति रु २५/- मूल्य का टिकट खरीद कर मंदिर के अन्दर ही ध्वजस्तभ के पास से क्यू में शामिल हो सकते है जिस से कि उन को ५ मिनट के अन्दर ही भगवान के दर्शन प्राप्त हो सके।

यात्रियो से ति ति देवस्थान का निवेदन है कि वे बाहरी व्यक्तियों की सहायता से दर्शन प्राप्त करने का प्रयत्न न करे। शीघ्र दर्शन की सुविधा केलिए ति. ति. देवस्थान के द्वारा जो उत्तम प्रबंध किये गये हैं, कोई कर्मी व्यक्ति भगवान का दर्शन उससे शीघ्रतर करवाने में असमर्थ है। अतः कृपया यात्रीगण ऐसे धोखेबाजों की झूठे वायदो से हमेशा सतर्क रहें।

भगवान के दर्शन प्राप्त करने में जो विलब और प्रतीक्षा करने से जिस सहनशीलता का अभ्यास होता है, वह तो कलियुगवरद श्री वेंकटेश्वर के दर्शन प्राप्त करने केलिए अपेक्षित हो है और वह एक प्रकार की तप. साधना भी है जिस के द्वारा भगवान का सपूर्ण अनुग्रह प्राप्त होता है।

कार्यनिर्वहणाधिकारी,

ति ति. देवस्थान. तिरुपति

चार पूजास्तोत्रम्

विद्वान्. बि वेङ्कटरामभट्टः, तुमकूरु.

ताम्बूलम्

कर्पूरैलालवङ्गक्रमुकखदिरवन्नागवल्लीसनाथं
नानासौगुण्ययुक्तं शुभकरमखिलानन्दं श्रीसनाथम् ।
ताम्बूलं खाद्यमाद्य त्रिभुवनजयद भुज्यता भोजनान्ते
प्रीत्या दत्त मयैतत्परिहर दुरितं मामक वेङ्कटेश ॥ १० ॥

उत्तरनीराजनम्

सौवर्णे रत्नदीप्ते महति च रुचिरे साधु विन्यस्तमेन
कर्पूरैर्वर्तिकाभिः सह सुविलसित कल्पयामि प्रदीपम् ।
पूजासाफल्यहेतोः पुनरपि जगतामीश्वरं त्वामनेन
प्रीत्या नीराजयामि प्रतिजहि दुरितं मामकं वेङ्कटेश ॥ ११ ॥

छत्रम्

पूर्णेन्दुद्योतमानं कनकमणिमहादण्डविभ्राजमेनं
मुक्ताजालाभिराम वरकलशयुतं दिव्यचिह्नैरनूनम् ।
प्रीत्या दिव्यातपत्र निजकरविधृतं मूर्ध्नि ते धारयिष्ये
श्रेय.प्रेयोनिधानं मुद इह भवतात्ते प्रभो वेङ्कटेश ॥ १२ ॥

चामरम्

राकाचन्द्राभिरामे हिमगिरिधवले रत्नदण्डाभिरामे
लोकानन्दैकहेतू तव हसितरुचा दीप्यमाने प्रकामम् ।
दिव्ये द्वे सर्वसेव्ये भवत इति धियावीजयामीन्दिरेश
त्वामेताभ्यामुभाभ्यां भव मयि सुमुखस्त्वं प्रभो वेङ्कटेश ॥१३॥

व्यजनम्

अम्भोजै राजमानैः सहजशिशिरतासौरभैरेजमानैः
अम्भोजान्ता रजोभिः कनकरुचिमयैश्चञ्चरीकैरनूनैः ।
श्रीकान्तैस्तालवृन्तैस्त्रिभुवनजयिनं त्वामह वीजयामि
श्रीकान्तं कान्तिकान्तं भव मम सुखदः सर्वदा वेङ्कटेश ॥१४ ॥

दर्पणः

भासाप्यकीवदाते वरमणिरचिते मङ्गलानां निधाने
सर्वेषां स्वस्वरूपाण्यपि सहजतया दर्शयत्यत्र नित्यम् ।
आदर्शे तेऽर्पितेऽस्मिन्निजमुखशशिनं तावदालोकयत्वं
विश्वादर्श सहर्ष निजमिदमुपमादर्शक वेङ्कटेश ॥ १५ ॥

वाद्यम्

वीणामाधुर्ययुक्तं मधुरमुरलिकानादमाधुर्यसारं
गान्धर्वैश्श्रुत्यभिज्ञाम्बुजनिभकरसवादितं वाद्यसारम् ।
नानावाद्यध्वनीनप्यवहितमनसा ऽऽ कर्णयानिन्दिरेश
नृत्ते नृत्ये च गीते पटुरसि भुवने यत्प्रभो वेङ्कटेश ॥ १

गीतम्

वीणासवादकास्ते त्रिभुवनाविदिता मागधास्तासु नित्यं
वीणास्वेवादरात्ते सरिगमपदनीन् सुस्वरान् वादयन्ति ।
नानालीलास्त्वदीया अपि मधुनिनदैरेव गायन्ति गीतं
श्रुत्युद्धर्तः श्रुणु त्वं तदखिलमधुना सादरं वेङ्कटेश ॥ १

नृत्यम्

गुञ्जद्भिर्भृङ्गजालैः प्रतिपदमिलितैः कुन्तलैरुल्लसन्त्य·
स्वर्णालङ्कारयुक्ताः सुरगणगणिका नर्तनेषु प्रवीणाः ।
चञ्चद्धम्मिल्लभारा विदधति बहुधा नर्तनं ते सकाशे
सुन्दर्यो मुक्तकेशा अपि भव सुमुखस्तेन हे वेङ्कटेश ॥

प्रणामः

यः सत्य पूजकेभ्यो दशशतहयमेधाध्वराणां फलानां
दाता स्यात् क्लेशजातं किमपि तु न विना तं करोम्येव नू
देवस्यैव प्रणामं मनसि च कलयन्नाकृतिं ते प्रदानां
प्रादक्षिण्य विधेयं परिहर दुरितं तत्प्रभो वेङ्कटेश ॥ १

स्तुतिः

यावज्जन्मार्जितं मे परिहर दुरितं मद्वचोजातमेव
त्व मत्वा स्तोत्रमेव प्रभुवर सहजं पाहि मामार्तमेनम्
पञ्चास्यः षण्मुखो वा तव गुणकथने न प्रभुर्येन सोऽहं
स्तौमि त्वां वा कथ भो भव मयि सदयो देव पद्मावतीश ।

अर्पणम्

पादाभ्यां वा कराभ्यां यदह मकरवं पापमन्येन्द्रियैर्वा
वाग्भिर्वा कर्मभिर्वा बहुविधमपि तन्नाददानः क्षमस्व ।
त्वय्यात्मा व्यर्पितोयं परिजननिवहैरत्नरीयैःसमेतः
तस्मात्त्वं मद्विचारे कुरु गुरुकरुणां पाहि मां वेङ्कटेश ॥

भक्त की समस्या

ाहों पर गुनाह किये जा रहा हूँ
ना है तुम्हारी कितनी है मेहरबानी
ने हो मुझसे शरण में मेरी आओ
इससे भा बढ कर है तेरी नादानी
ाहें न हो तो तुम्हारी है क्या जरूरत
ाहों के कारण ही है तुम्हारी शोहरत
ो न होंगे तो तुम क्या करोगे
त-पावन फिर कहला न सकोगे
म्बना है कैसी और लीला तुम्हारी
ा का चक्कर यह है भी मर्जी तुम्हारी
ो हो कर्ता और हो कर्म
झ में न आया मेरे यह मर्म
यह समझा सब तुम देख रहे हो
ही मर्जी इसी से खेल रहे हो
डे और गुनाहों के चक्कर में कब तक?

—श्री रामप्रसाद महेशेका,
भागलपुर (बिहार)

(पृष्ठ १८ का शेष)

अकित है । सूर-सारावली में लीला-पुरुष की अद्भुत लीलाओं का चित्रण है । साहित्यलहरी रीति प्रधान रचना है ।

परमानन्ददास :

परमानन्दसागर इनकी मुख्य कृति है। इसमें कृष्ण के मथुरागमन. भ्रमरगीत, कृष्ण की बाल लीला गोपीविरह आदि के अंकन मनोहारी है । कहा जाता है कि उनसे दानलीला, ध्रुवचरित्र, उद्धवलीला, रत्नमाला, दीर्घलीला आदि ग्रन्थो का भी प्रणयन हुआ था । परन्तु वे अब अप्राप्य हैं ।

नन्ददास :

नन्ददास से तीस ग्रन्थ रचित माने गये हैं । उनमें रसमंजरी, अनेकार्थमजरी, मानमंजरी, दशमस्कन्ध, दशमसगाई, गोवर्धनलीला सुदामा-चरित्र, विरहमजरी, रूपमजरी, रुक्मिणीमगल रासपंचाध्यायी, भंवरगीत और सिद्धान्त पचाध्यायी उनके ही ग्रन्थ सिद्ध हैं । दशमस्कन्ध में भागवत दशमस्कन्ध के उन्नीस अध्यायो का भावानुवाद है । गोवर्धन लीला मे श्रीकृष्ण की लीलाओं का वर्णन और गुणगान है । सुदामा चरित्र में श्रीकृष्ण की दयालुता और भक्तवत्सलता का सुन्दर निरूपण है। उनकी अन्य कृतियों में रास-प्रसग की अलौकिकता शास्त्रीय विवेचन से प्रमाणित की गयी है और सुन्दर कथनाओ द्वारा श्रीकृष्ण की महिमा वर्णित है । सूरदास के पश्चात् अष्टछाप के कवियों में नन्ददास का ही स्थान है । यह कहावत प्रसिद्ध है क और सब गडिया नंददास जडिया ।

रसखान :

रसखान सुप्रसिद्ध मुसलमान कृष्ण भक्त और कृष्णभक्ति की महिमा के गायक हैं । उनकी कृति प्रेमवाटिका में ईश्वर प्रेम की महिमागायी गयी है । रसखान की दूसरी कृति सुजान रसखान है । रसखान की कृतियां अपने माधुर्य, सरसता और सरलता के लिये विख्यात हैं ।

हितहरिवंश :

राधावल्लभ संप्रदाय के प्रवर्तक हितहरिवंश की इष्टाराध्य श्रीराधा है । ब्रजभाषा में उनसे रचित हित चौरासी और हित-स्फुट-वाणी में कृष्ण भक्ति की महिमा वर्णित है । हितहरिवंश के शिष्य सेवकजी कृतहितचौरासी सेवकवाणी में राधाकृष्ण की क्रीडा का मनोहारी वर्णन । हरिरामव्यासजी हितहरिवंश के दूसरे प्रसिद्ध शिष्य हैं । उनकी रासपंचाध्यायी के पद सरस तथा मनोहर हैं । (क्रमशः)

कृष्ण का विराट् स्वरूप

श्री मद्भागवत के द्वितीय स्कन्ध के छठे अध्याय में भगवान् के विराट् स्वरूप के विभूतियों का वर्णन है। उन विभूतियों का वर्णन साक्षात् ब्रह्मा ने ही किया है। ब्रह्माजी कहते हैं – जिस समय इस विराट पुरुष के नाभि कमल से मेरा जन्म हुआ, उस समय इस पुरुष के अङ्गों के अतिरिक्त मुझे और कोई भी यज्ञ सामग्री नहीं मिली।

यदास्य नाभ्यान्नलिनादहमासं महात्मन. ।
नाविदं यज्ञसम्भारान् तुरुषावयवाहते ।।
श्रीमद्भागवत द्वितीयस्कध ६. २२

तब यज्ञ के लिए उत्सुक मैंने उनके अङ्गों में ही यज्ञ के पशु, यूप, कुश, यज्ञभूमि तथा यज्ञ के लिए उत्तम काल की कल्पना की। यज्ञ के लिए आवश्यक पात्र आदि वस्तुएँ, हवन-सामग्री, दक्षिणादि द्रव्य तथा अन्यान्य यज्ञ सामाग्री मै ने विराट् पुरुष के अङ्गों से ही इकट्टी की।

गतयो मतय श्रद्धा प्रायश्चित्तं समर्तणम् ।
पुरुषावयवैरेते संभारा संभृता मया ।।
श्रीमद्भा. २. ६. २६

उस विराट् पुरुषु से ही समस्त यज्ञ सामग्री का संग्रह करके मैंने उनहीं सामग्रियों से उन यज्ञ स्वरूप परमात्मा का यज्ञ के द्वारा यजन किया।

तमेव पुरुषं यज्ञं तेनैवायजभीखरम् ।
श्रीमद्भा २. ६. २७

डा० श्री उमारमण झा,
श्री रणवीर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ,
जम्मूतवी

ब्रह्माजी कहते हैं कि उन्हीं विराट् पुरुष के मुँख से वाणी और उस के अधिष्ठाती देवता अग्नि उत्पन्न हुए हैं। सातो छन्द उनकी सात धातुओं से निकले हैं। मनुष्यों पितरों और देवताओं के भोजन करने योग्य अमृतमय अन्न, सब प्रकार के रस, रसनेन्द्रिय और उसके अधिष्ठातृ देवता वरुण विराट पुरुष की जिह्वा से उत्पन्न हुए हैं।

द्रष्टव्य भागवत् । २. ६. १

शुक्ल-यजुर्वेद के पुरुषसूक्त में भी विराट् पुरुष के स्वरूप का वर्णन है। गीता में भी भगवान् ने अपना विराट् स्वरूप का प्रदर्शन अर्जुन के सामने किया था। उस विराट् स्वरूप के लिए कृष्ण ने उन्हे दिव्य दृष्टि भी दी थी। वहाँ पर कहा गया है—

पश्य मे पार्थरूपाणि शतशोऽथ सहस्रश. ।
नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनि च ।।
गीता ११ ५

न तु मां शक्यसे द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुषा ।
दिव्यं ददामि ते चक्षु पश्य मे योगमैश्वरम् ।।
गीता. ११. ८

अनेक म वक्त्रनयननेकादित दर्शनम् ।
अनेकदिव्याभरणं दिव्यानेकोद्यतायुधम् ।।
गीता ११. १०

अर्थात् अनेक मुख तथा नयनोंवाले अद्भुत दर्शनोंवाले अनेक दिव्याभरणों से युक्त तथा अनेक दिव्य आयुधों से सुसज्जित भगवान् का विराट् रूप था। अगर हजार सूर्य एक ही साथ उग जाय तो उस पुरुष के प्रकाश के समान सूर्य का प्रकाश हो सकता है।

दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता ।
यदि भा. सदृशी सा स्याद्भासस्तस्य महात्मनः ।।
गीता. ११.१२

कृष्ण के विराट् रूप को कृताञ्जलि करते हुए कहा था – हे देव! आपके शरीर में सभी देवों को, भूतगणों को, ब्रह्मा को, ऋषियों को तथा दिव्य सर्पों को देखता हूँ।

पश्यामि देवांस्तव देव देहे ।
सर्वांस्तथा भूतविशेषसङ्घान् ।
ब्रह्माणमीशं कमलासनस्थ—
मृषींश्च सर्वानुरगाश्च दिव्यान् ।।
गीता. ११

आप अनादि तथा अनन्त वीर्
अनन्तबाहुवाले, चन्द्रमा नेत्र तथा सूर्यरूप
तथा अपने तेजसे सम्पूर्णविश्व को तपाने वाले

अनादिमध्यान्तमनन्तवीर्यमनंतबाहुं शशि
ने
पश्यामि त्वां दीप्तहुताशवक्त्रं स्वतेजसा
विश्वमिदं तपन्त
गीता ११

भाग वत में ब्रह्माजी भी कहते हैं!
नारद! हम, तुम, धर्म, सनकादि
विज्ञान और अन्तःकरण-सबके सब
चित्त के आश्रित हैं। यह सम्पूर्ण विश्व
नारायण में स्थित है, जो स्वयं तो
गुणों से रहित है परन्तु सृष्टि के प्रारम्
माया के द्वारा बहुत से गुण ग्रहण कर लेते

नारायणे भगवति तदिदं विश्वमाहितम्
गृहतमायोरूगुण सगदिवगुण स्वत. ।।
श्रीमद्भा. २ ६

ब्रह्मा उस विराट् पुरुष की प्रेरणा से
करते हैं, रुद्र सहार करते हैं और विष्णु प
करतेहैं।

सृजामि तन्नियुक्तोऽहं हरो हरति तद्वशः
विश्वं पुरुषरूपेण परिपाति त्रिशक्तिधृत्
श्रीमद्भा. २. ३

परमात्मा का पहला अवतार विराट्
हैं। काल, स्वभाव, कार्य, कारण,
पञ्चभूत अहङ्कार, ब्रह्माण्ड शरीर आदि
सब उस अनन्त भगवान् के ही रूप
उसी विराट् रूप से प्रधान-प्रधान लीला
भी होते रहते हैं। इस प्रकार महाम
गीता, भागवत तथा पुराणों में भगवान
विराट् स्वरूप का वर्णन है। *

विशेष दर्शन के रु. २५ टिकट

श्री बालाजी के विशेष दर्शन के रु. २५ टिकट आन्ध्र प्रदेश के बाहर आन्ध्र बैंक की निम्नलिखित शाखाओं में मिलती हैं।

पाट्ना	पूरी
टाटानगर	रूर्केला
अहमदाबाद	मद्रास (मुख्य)
बरोडा	मैलापूर
सूरत	टी-नगर
बेंगुळूर (एस. आर. रोड)	षेनायनगर
रामराजपेट (बेंगुळूर)	कोयंबत्तूर
बळ्ळारि	मधुरै
गगावती	सेलं
रायचूर	तिरुप्पूरु
होसपेट	कलकत्ता
त्रिवेण्ड्रम्	ब्यालिगंज (कलकत्ता)
एर्नाकुलम् (कोचिन)	खरगपूर
भोपाल	दुर्गापूर
जैपूर	चंडीघर
जबलपूर	कर्नाट सर्कस (नई दिल्ली)
बम्बई (मुख्य)	करोल बाग (नई दिल्ली)
चेम्बूर (बम्बई)	रामकृष्णापुरं (नई दिल्ली)
मातुंग (बम्बई)	लक्नो
नागपूर	अलहाबाद
भुवनेश्वर	वारणासी
बर्हंपूर	लुधियाना
रायगड	

(पृष्ठ २९ का शेष)

तन्निवृत्ति के एकमात्र हेतु भगवान् की प्राप्ति के हित सद्गुरु द्वारा बताए हुए मार्ग से चलता हुआ वेदविहित वर्णाश्रम-धर्मों का कर्तव्य रूप में यथावत पालन करता हुआ, वाणी-मन-काया से भगवत्कैंकर्य यथाशक्ति करता हुआ भगवान जब चाहे तब मुझे स्वीकार करलें और संसार के पुवर्जन्मादि दुःखो से जिस तरह जब चाहे तब छुडावे' ऐसी भावना से परिपूर्ण हो अपने सर्वविध भार को भगवान् पर ही रखकर निर्भय होकर "मेरा उद्धार अवश्य होगा" इस निष्ठा से दृप्त हो, भगवत्कैंकर्य में निरत होकर काल-यापन करता है। यही दृप्तप्रपत्ति है। इसमें शरणागतजीव अपने आपको स्वीकार के लिए भी भगवान पर अवलम्बित रहता है और उस-की प्रपत्ति के उपाय भी भगवान् के द्वारा ही सिद्ध होते हैं। अतएव सर्वथा निर्भयवत्ति से भगवदर्पण करनेवाले शरणागत की प्रपत्ति पर-गत (भगवत्कृत स्वीकार) रूप होती है और वह प्रपन्न सद्वारक (भगवद्द्वारा) स्वीकृत प्रपन्न कहलाता है।

उभय प्रकार की प्रपत्ति मे अव्यभिचारिणी भक्ति, अनवरत भगवत्कैंकर्य एवं निष्ठा समान होती है, अन्तर केवल इतना ही है कि आर्त्त-प्रपत्ति में शरणागत आतुर हो भगवान् से अपने उद्धार के लिए हठ करता हुआ स्वयं प्रपन्न होता है जिसके कारण भगवदनुग्रह शीघ्र पाकर यहाँ भगवत्कैंकर्य मे निरत होने के असीम दिव्य आ-नन्द को स्वल्पकाल के लिए भोग पाता है, मुक्ति को शीघ्र हस्तगत कर लेता है; उसके विपरीत दृप्त प्रपन्न को आतुरता नहीं है, सब पापो से मुक्त करने का और अपने सान्निध्य में शरणागत को सदा के लिए रखने का भगवान् द्वारा स्वयं चरम श्लोक में दिये आश्वासन के कारण 'मैं दास हूँ, 'स्वामी चाहे जैसा मुझे रखें परवाह नहीं—केवल उनके चरणों की सर्वत्र अनवरत सेवा करने का आनन्द प्राप्त करता रहूँ—इतनी ही लालसा से प्रेरित हो भगवान् के भरोसे निर्भय रहता है। वह धीर है आतुर नहीं वह अश्वस्त है, भगवान् का अनन्य दास है अतः निर्भय है। इसी कारण दृप्त प्रपन्न को मुक्ति चाहे देर से मिले उसे भगवत्कैंकय जन्य दिव्य आनन्द का उपभोग आर्त की अपेक्षा इस जन्म में कहीं अधिक प्राप्त होता है।

इस तरह कर्मयोगादि त्रिक के द्वारा साध्य की सिद्धि की अपेक्षा प्रपत्ति रूप उपाय सुगम एवं निश्चित फलप्रद है; कारण, प्रपत्ति एक ही बार की जाती है और देशकाल, वर्ण जाति के किसी प्रकार के प्रतिबन्ध से रहित हो पशु, पक्षी, विद्वान् अपण्डित सबके लिए सुलभ है। प्रपत्ति ही भक्तिमार्ग का उत्कृष्ट रहस्य है, विशिष्टाद्वैत का प्रमुख सिद्धान्त है जो श्रीवैष्णव सम्प्रदाय की अनमोल देन है। ❋

(अर्थ पंचक भूमिक)

वैष्णव भक्ति

डॉ एस. वेणुगोपालाचार्य,
माण्ड्य (कर्नाटक).

(गतांक से)

देवराजविजय, गीतगोपाल, भागवत, शेषधर्म भारत की टीका चिक्कुपाध्याय कृत 'दिवसूरि-चरिते' १९०० ई में कवि मुद्दण–रचित रामाश्वमेध और अद्भुत रामायण वैष्णव भक्ति के प्रमुख ग्रंथ माने जाते हैं। विश्व के सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक कृतियो में हिन्दी एवं कन्नड साहित्य में उपलब्ध वैष्णव भक्ति के कृतिरत्न अनमोल हैं।

पन्द्रहवीं शती में वैष्णव भक्ति में दीक्षित उत्तर भारत के सगुणवादी सन्तो को भारतीयों की तत्कालीन समस्याओं का पूर्ण परिचय था। उन्होंने समझ लिया कि सारे देश में हिन्दुओं को धर्मांतरित करने में लगे इस्लाम धर्म में विचारपूरित तथा बुद्धिग्राह्य निश्चयज्ञान की अपेक्षा भावावेश की प्रचुरता है और उसके सामना करने सगुण वैष्णव भक्ति में विद्यमान भावावेश विश्वप्रेम सहिष्णुता और साकार पूजा आदि से सहायता लेना परमावश्यक है। तब तक दक्षिण भारत में प्रवर्तित वैष्णव भक्ति का पूर्ण अध्ययन करके वल्लभाचार्य, रामानन्द तथा चैतन्य महाप्रभु की सफल प्रेरणा से सैकडों भक्त तथा साहित्यकार अपनी वैष्णव भक्तिपूर्ण कृतियों को रचकर उत्तर भारत की हिन्दू जनता को भक्तिरस का आस्वादन कराने लगे। उसके प्रभाव से उत्तर भारत की जनता तृप्त और प्रसन्न हो गयी। उसमें नवचैतन्य का संचार होने लगा। सोलहवीं शती तक उनकी बिगडी हुई दशा सुधरतीगई। उन्हे प्राचीन भारतीय सस्कृति को आततायियों के अत्याचारों से रक्षा करने की आवश्यकता समझ में आ गयी। अधर्म और अत्याचारों के प्रति संघर्ष करने और सदाचारसंपन्न जनता की रक्षा करने के लिये युग-युग में अवतरित होनेवाले विष्णु भगवान की सगुणोपासना उनमें आत्माभिमान उत्साह और धैर्य भरने लगी। जनसाधारण को मालूम हो गया कि हिंसापूर्ण आसुरीशक्ति देखने में शक्तिशाली और अदम्य भले ही हो, किन्तु वह सत्य अहिंसा तथा सदाचार संपन्न लोगों को चिरकाल तक सता नहीं सकेगी। क्योंकि धर्म की ही हमेशा जयसिद्ध है और भारतीय इतिहास, पुराण आदि में यही सन्देश है। वैष्णव भक्ति के प्रभाव से साधारण जनता सचेत हो गयी। भारत को दरउलइस्लाम बनाने को इच्छुक औरंगजेब (१६५८–१७०७) के राज्य काल में पुनः हिन्दुओ का दमन होने लगा। अकबर के समय से सुधारित परिस्थिति बिगडने लगी तो राजपूत मरहठे शतनामी और सिक्ख मुगल साम्राज्य का अन्त करने में लग गये और औरंगजेब की मृत्यु के साथ साथ मुगल साम्राज्य का भी अस्त हो गया और भारतीयो के धार्मिक जीवन पर आसन्न सात शतियों का बला टल गया। हिन्दू जनता पुनः सभी क्षेत्रो में स्वतंत्रता की साँस लेने लगी।

वैष्णव भक्ति से सम्बन्धित रामायण और महाभारत की कथाओं को हिन्दी के प्राचीनरूप प्राकृत और कन्नड के प्राचीन रूपसे हलेगन्नड यानी पुरानी कन्नड में जैन लेखकों ने अपने विचारों के अनुसार अपनी कृतियो में स्थान दिया। प्राकृत में रचित पद्म चरिते अर्थात राम कथा वसुदेवहिण्डी और सेतुबन्ध आदि इस कोटि के ग्रन्थ हैं स्वयंभू से अपभ्रंश में रचित पद्म चरित का आधार 'पद्म चरिय' ही माना जाता है। सातवीं शती से दसवीं शती के बीच में रचित चौरासी सिद्धो की कृतियो और गोरखनाथ आदि नाथपक्तियों की कृतियों में भी वैष्णव भक्ति से प्रभावित बहुत से पद विद्यामान हैं। इसी प्रकार कन्नड में राजाश्रित जैन कवियों से रामायण और महाभारत की कथाओं के आधार पर कई ग्रंथों का प्रणयन हुआ। कन्नडसाहित्य के त्रिरत्न पंप, पोन्न और रन्न से जैन पुराणो के साथ साथ लौकिक काव्यों के रूप में कई ग्रन्थ रचे गये। पप महाकवि से रचित 'विक्रमार्जुन विजय' और रन्न कवि रचित 'गदायुद्ध' तथा पोन्न से रचित 'भुवनैक - रामाभ्युदय' (अप्राप्त) अपने आश्रयदाता राजाओं के गुणगान के निमित्त निर्मित हुए थे। ये तीनो क्रमश. चालुक्य राजा अरिकेसरी, राष्ट्रकूट राजा कृष्ण तृतीय और चालुक्य राजा तैलप - सत्याश्रय के लिये रचित थे। होयसल राजा वीरवल्लभ के मन्त्री चन्द्रमौली के आश्रय में रचित "जगन्नाथ विजय" कन्नड का प्रप्रथम वैष्णव - भक्ति प्रधान ग्रन्थ माना जाता है। वीरबल्लाल का राज्यकाल सन् ११७२ से १२१९ तक माना जाता है। यह विष्णुपुराण के आधार पर निर्मित ग्रन्थरत्न है। बारहवीं शती में अभिनवपप नागचन्द्र से 'पप - रामायण' यानी रामचन्द्रचरित पुराण रचा गया। तेरहवीं शती में कुमुदेन्दु नामक जैन कवि से निर्मित "कुमुदेन्दुरामायण" और

बन्धुवर्मा से रचित 'हरिवंशाभ्युदय' में कन्नड के जैन कवियों पर वैष्णव भक्ति का प्रभाव देखा जा सकता है।

ग्यारहवीं शती के आदिभाग से तेरहवीं शती तक आक्रमणकारी मुसलमान राजाओं के विरुद्ध लडने में राजपूत राजाओ का प्रमुख पात्र रहा है। उनके आश्रय में जो चारण थे उनकी कृतियां पौरुष को प्रदीप्त करनेवाली और रणोचित भावनाओ को प्रेरणा देनेवाली वीरगाथाएँ थीं। ऐसी वीरगाथाएँ पृथ्वीराजरासो, आल्हाकाण्ड, हम्मीररासो, बीसलदेवरासो, कीर्तिलता और कीर्तिपताका आदि हैं। इनमें राजभक्ति तथा दैवभक्ति के साथ वैष्णव भक्ति का भी प्रचुर मात्रा में निरूपण किया गया है। इनकी भाषा में अरबी, तुर्की और फारसी भाषाओ के शब्द भी यथेष्टप्रमाण में मिलते हैं। यह स्वाभाविक था, क्योकि तब तक सिन्धपूर्ण तथा मुसलमानी राज्य बन गया था। तेरहवीं शती के अन्त तक सारा उत्तर भारत धीरे धीरे मुसलमान शासको के अधीनस्थ हो गया। देहली के राजदरबार की भाषा फारसी घोषित हुई। राज-काज में चौदहवीं शती से प्राचीन भारतीय संस्कृति में श्रद्धा रखनेवाले हिन्दुओ में उदासीनता के भाव छाने लगे, क्योंकि तब तक समूचा उत्तर भारत विजेता मुसलमानो के वश में आ गया और उनके मन्दिर गिराये जाते थे और बहुत से गरीब हिन्दू मृत्युदण्ड और जजिया कर आदि से बचन मुसलमान बनने लगे थे। कबीर, नानक दादू, रैदास आदि साधु सन्त हिन्दू और मुसलमानों की शत्रुता को निवारण करने के प्रयत्न करने लगे। उनका कार्य वैष्णव भक्ति के सहारे ही सक्रिय हो सका। उन साधु-सन्तो की वाणियो में रामानुजाचार्य की शिष्य परंपरा के रामानन्दस्वामी से उपदिष्ट वैष्णव भक्ति और पैगंबरी निराकारोपासना के साथ साथ नाथ पंथियो की योगसाधना, वेदान्त का ब्रह्मवाद, सूफियो का प्रेमतत्व आदि लक्षित होते हैं।

दक्षिण भारत में रामानुजाचार्य और मध्वाचार्य तथा उनके शिष्यो के प्रयत्नो और हिन्दू राजाओ के सहयोग से ग्यारहवीं शती से चौदहवीं शती तक वैष्णव भक्ति की लोकप्रियता अधिक हुई। विजयनगर की स्थापना से प्राचीन भारतीय संस्कृति की दु स्थिति को सुधारने का एकैक उपाय वैष्णव भक्ति का आश्रय प्रतीत हुआ। वे सतत प्रयत्नों से सगुण भक्ति धारा के महत्व और निर्गुण भक्ति की कठिण्पाइयो को अपने तथा अपने शिष्यों द्वारा रचित कृतियो में स्पष्टतया प्रकट करके समूचे उत्तर भारत के जनमन में वैष्णव भक्ति के उत्कृष्ट भावनाओं को फैलाने लगे। कबीर आदि निर्गुण भक्ति धारा के साहित्य से हिन्दुओ और मुसलमानो की संकुचित भावनाएँ दूर हुई और सगुण भक्ति के प्रचार से भगवान के दुष्ट शिक्षण और शिष्ट रक्षण के लिए युग युग में अवतरित होनेवाली बात जनमन में स्थित भय तथा उदासीनता को दूर करने लगी।

वीरगाथाकाल के पहले हिन्दी के प्राचीन रूपों में सिद्धो तथा नाथसप्रदायी साधुओ की वाणियाँ समय समय पर रचित होती थी। बौद्धों के महायान संप्रदाय पर वैष्णव भक्ति का अत्यधिक प्रभाव पडा था। कालक्रम में वह विकृत होते होते वज्रयान संप्रदाय कहलाने लगा। वज्रयानी साधक सिद्ध कहलाते हैं। उनकी साधनाओं में मंत्र-तंत्र तथा सहज साधना अर्थात् विभिन्न जातियो की साधिकाओ के साथ शारीरिक संबन्ध रखकर दिव्यानन्द प्राप्त करने की साधनाओं का प्रमुख स्थान था। ईसा की सातवीं शती से दसवीं शती तक सिद्ध संप्रदाय के चौरासी साधुओ के नाम प्रसिद्ध हैं। वे तात्कालीन अन्य धार्मिक संप्रदायों से अपने संप्रदाय को अधिक आकर्षक बनाने के निमित्त विलासिता को छूट देकर भिन्न वर्ग के लोगो पर अपने प्रभाव बढाते थे। सरहपाद, कण्हपा, शबरपा आदि सिद्ध सुख से खाते-पीते तथा रमण करने परलोक की सिद्धि एवं इहलोक के प्रति भय के निवारण की सहज साधना का आदर्श मानते थे। उनका प्रेम एव दापत्य जीवन शारीरकता तथा कामुकता पर आधारित था। उनकी कृतियो में गुरु-महिमा साधिका के प्रति प्रणयनिवेदन, नारी-सौन्दर्य का वर्णन तथा परधर्मो के खंडन आदि लोकभाषा अपभ्रंश के द्वारा व्यक्त किये जाते थे।

सिद्धो की सहजसाधना की प्रतिक्रिया के रूप में नाथ-सप्रदाय स्थापित हुआ। गोरखनाथ नाथ संप्रदाय के प्रवर्तक थे। वे पहले सहजयान में दीक्षित थे। सहजयान के लोप-दोषों को सुधारने के लिए उन्होंने योगमार्ग को अपनाया। इसलिए गोरखनाथ ने मत्स्येन्द्रनाथ और आदिनाथ को अपने मार्गदर्शक चुने। डा० पीतांपरदत्त बडथ्वाल के अनुसार गोरखनाथ के चौदह ग्रन्थ हैं। उनमें वैराग्य गुरु-महिमा इन्द्रिय-निग्रह आदि विषय हैं। हिन्दी साहित्य में कन्नड साहित्य के ही जैसे कृष्णभक्ति धारा के ग्रन्थ अधिक हैं।

प्रमुख भक्त कवियों के नाम और कृतियां प्रकार हैं।

सूरदास :

सूरसागर-सूरसारावली और साहित्यलहरी सूरदास की मुख्य कृतियां मानी जाती हैं। सूरसागर में श्रीकृष्ण की बाललीलाओं तथा राधा और गोपियो का विरह वर्णन अनुपमरीति से

(शेष पृष्ठ २२ पर)

प्रपत्ति का स्वरूप

पं० श्री माधवाचार्यजी शास्त्री, दिल्ली·

मुक्ति के लिए कर्म-ज्ञान-भक्ति के त्रिविध योग द्वारा क्रमशः साधना अथवा भक्तिद्वार से प्रपत्ति में परिवर्तित होकर साध्य को सिद्ध करना एक मार्ग है। दूसरा मार्ग है कर्मयोगादि के कण्टकाकीर्ण पथ में न उलझते हुए सीधे प्रपत्ति मार्ग का अवलम्बन कर भगवदनुग्रह सम्पादन करना। यह सरल मार्ग है और ऊपर कथित कर्मज्ञान सहकृत भक्ति की साधना में असमर्थ जीवो के लिए सुगम पथ है। इसके दो प्रकार हैं आर्तप्रपत्ति और दृप्तप्रपत्ति।

आर्त्तरूपा प्रपत्ति—सर्व प्रथम इस तथ्य को भली भाँति समझ लेना चाहिए कि इस त्रिगुणात्मिका प्रकृति द्वारा घटित इस संसार में इतने प्रबल आकर्षण एवं प्रलोभन विद्यमान हैं कि उनके व्यूह से बचता अच्छे समझदार व्यक्ति के लिए भी दुस्साध्य है। ऐसी नैसर्गिक स्थिति में उन प्रलोभनो से दूर हटकर शाश्वत सुख की खोज में प्रवृत्त होना भगवान् के सहज (निर्हेतुक) अनुग्रह के बिना हो ही नहीं सकता। जब कभी किसी मानव की प्रवृत्ति सत्वनिष्ठ हो भगवत्-कैंकर्य की ओर तनिक भी झुकने लगे तो निश्चय ही वह व्यक्ति भगवत्कृपा का पात्र है ऐसा समझ लेना चाहिए। जब भगवत्कृपा होने लगती है, तो जीवात्मा का सहज झुकाव शास्त्रचिन्तन की ओर होने लगता है, भगवत्कृपा से ही उसे सद्गुरु भी उपलब्ध हो जाता है, वह सदुपदेश भी करने लगता है जिसके फलस्वरूप उसे तात्विक ज्ञान उत्पन्न होकर जीवात्मा को भगवदनुभव के साक्षाद्रूप से होने में बाधक अपने इस भौतिक शरीर, इस कष्टबहुल ससार और आस-पास के सांसारिक प्रवृत्तियों में डूबे हुए सहवासियो के साथ सम्बन्ध असह्य प्रतीत होने लगता है; और वह तब विलक्षण शुद्धसत्व घटित अप्राकृतिक दिव्य शरीर, दिव्य वैकुण्ठ और वहा के भगवच्छिष्ट नित्यजीवों के सहवास की उत्कण्ठा एवं प्रबल आशा से अनुप्राणित हो यह समझ जाता है कि वैकुण्ठाधिपति ही मेरे गर्भ-जन्म मरण आदि अनिवार्य क्लेश परम्परा के एकमात्र निवर्तक हैं। तब वह सहसा अपने आपको निस्सहाय दीन जानकर श्रीवेङ्कटनायक के शरण दासभाव से अनुप्राणित हो पूर्णरूप से ले जाता है और अपनी विद्यमान अवस्था से परिश्रान्त होने के भाव को भगवत्सन्निधि में प्रकट करता हुआ 'अब मैं और इसी तरह संसार के चक्रव्यूह में रहने के लिए असमर्थ हूँ, हे भगवन्! अब तो मुझे उभार लो, आपको अपनी परमप्रेयसी महालक्ष्मी की शपथ है मुझ पर कृपा करो' इन वचनों के द्वारा अभिव्यक्त अपनी आतुरता के कारण भगवान् से अपने उद्धार के लिए हठ करता हुआ अपने आपको भगवदर्पण कर देता है। यही आर्त्तरूपा प्रपत्ति है। इस प्रकार शरणागत जीवात्मा स्वयं होकर अपनाता है, वह किसी अन्य के माध्यम की अपेक्षा नहीं रखता अतः उसकी प्रपत्ति का यह प्रकार स्वगत स्वीकार रूप होता है और वह स्वय उद्धारक प्रपन्न कहा जाता है।

दृप्तरूपा प्रपत्ति—इससे भिन्न एक और प्रकार है प्रपत्ति का; जिसमें जीव इतना आतुर नहीं होता, वह भगवदनुग्रह पर सब कुछ छोड देता है—इसी देह के छूटने पर मुक्ति मिल जाय या जब भगवान् चाहें तब मुक्ति मिले इन दोनों पक्षों में उसकी अरुचि नहीं होती—वह तो केवल यहाँ अथवा जन्मजन्मान्तर में सर्वत्र सर्वथा सर्वदा भगवत्कैंकर्य में निरत होकर रहना चाहता है। भगवान् मेरे स्वामी हैं, मेरे नियन्ता हैं, मेरे धारक हैं, रक्षक हैं और मैं उनका दास हूँ, उनका पोष्य हूँ—वे मेरा उद्धार अवश्य करेंगे इस दृढ विश्वास में अभिमान रखता हुआ जन्मान्तर में स्वर्गादि भोगों से विरक्ति तथा नरकादि लोकों की यातना से भीति के कारण

(शेष पृष्ठ २४ पर)

श्री कोदंडरामस्वामीजी का मन्दिर, तिरुपति.

दैनिक – कार्यक्रम

———

	समय				कार्यक्रम
प्रातः	5–00	से	5–30	तक ..	सुप्रभातम्
	5–30	से	8–00	तक	सर्वदर्शन
	8–00	से	9–30	तक	आराधना, तोमालसेवा, सहस्त्रनामार्चना, पहली घटी
	9–30	से	11–00	तक	सर्वदर्शनम्
	11–00	से	11–30	तक	दूसरी घंटी
	11–30	से	12–00	तक	सर्वदर्शन व तीर्मानम्
शाम को	5–00	से	6–00	तक	सर्वदर्शनम्
	6–00	से	7–00	तक	रात का कैंकर्य, तोमाल सेवा, रात्रि की घंटी आदि
	7–00	से	8–45	तक	सर्वदर्शन
	8–45	से	9–00	तक	एकातसेवा

सूचना :— शनिवार, पुनर्वसु नक्षत्र के दिन या अन्य विशेष उत्सवो के समय में उपरोक्त कार्यक्रमों में परिवर्तन होगा।

अर्जित सेवाओं की दरे :—

१) सहस्त्रनामार्चना प्रातः 8–00 बजे से 9–00 बजे तक — रु. 2–00 हर एक व्यक्ति को
२) अष्टोत्तरम् (सर्वदर्शन के समय पर) — रु, 1–00
३) हारति („ „) — रु. 0–50
४) साप्ताहिक अभिषेकानंतर दर्शन (सिर्फ शनिवार को) — रु. 1–00

ध्यानम् आवाहनम् आसनं च

प्रत्यूषे सुप्रभातस्तुतिभिरहमिहोत्थापनं ते विधाय
प्रीत्या भक्त्या तथाहं तव हितमधुरस्वागतं मे शुभाय ।
अस्माकं भाग्यहेतुं मनसि च कलयन् रत्नसिंहासनं ते
भव्ये श्रीमन्दिरेऽस्मिन् मणिकलशयुते दीयते वेङ्कटेश ॥१॥

स्नानम्

काश्मीरैश्चन्दनैस्ते वपुषि विरचितोद्वर्तनः साधु तैलैः
कोष्णैस्तोयैर्विधाय स्नपनाविधिमथ क्षीरदध्याज्यमुख्यैः ।
पीयूषैः पञ्चभिस्त्वां सुरभिभिरनघैर्देव गङ्गादितोयैः
मन्त्रैः स्तोत्रैश्च साकं श्रुतियुगलहितैः स्नापयामीन्दिरेश ॥ २ ॥

वस्त्रम्

उद्यद्भानुप्रभाभं कनकमणिगणालंकृतं पीतवर्णं
वासोयुग्मं प्रदास्ये गुणगणरचितं वार्षिकाम्भोदवर्णं ।
श्रीमच्छेषाद्रिवासप्रणतसुरतरो भूषणानेकवर्णं
श्रेयो दातस्तदेते कलय निजतनौ देव पद्मावतीश ॥ ३ ॥

आभरणम्

मुक्ताकोटीरमुख्यानघमणिखचितस्वर्णभूषा अशेषा
पादे कट्यां च बाह्वोरुरसि शिरसि ते धारयामीष्टभूष ।
प्रत्येकस्थानयोग्या विदधतु सुषमां मङ्गलाङ्गात्तवेष
श्रीदातः श्रीनिवास प्रभुवर करुणापाङ्ग शोभस्व देव ॥ ४ ॥

गन्धः

एलाकाश्मीरजन्मानथ मृगमदसच्चन्दनाद्यष्टगन्धान्
सानन्दं संगृहीतानालिकुलरहितान् साधु लिम्पामि सर्वान् ।
फाले बाह्वोश्च वक्षस्यपि तव कलयेऽलक्रियान्तैरशेषाम्
आदायात्तप्रमोदोभव भवगहनात् त्राहि मां वेङ्कटेश ॥५॥

पुष्पम्

श्रीमन्मन्दारकुन्दाम्बुजनवतुलसीमालतीपुष्परम्यां
मालामाजानुगान्ते वनपदकलितामर्पयेऽनन्यगम्याम् ।
जातीचाम्पेयमुख्यान्यपि बहुकुसुमान्यर्पयामीन्दिरेश
श्रेयो मे देहि सर्वं परिहर दुरितं मामकं वेङ्कटेश ॥६॥
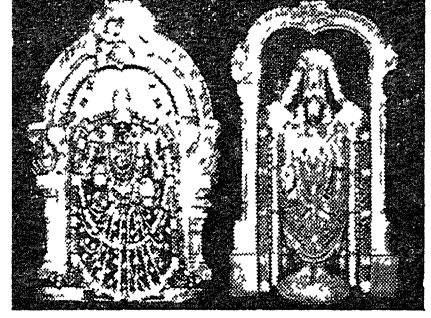
धूपः

लाक्षाश्रीखण्डखण्डैर्नवघृतविहितैश्चागुरुकर्पूरयुक्तैः
नानासौरभ्यसान्द्रैरपि च बहुविधैर्वस्तुभिः संप्रयुक्तम् ।
धूपं पापापनुत्त्यै मम भुवि भवते कल्पयामीन्दिरेश
श्रीमन् कामं निषेव्य प्रियमिममखिलं पाहि मां वेङ्कटेश॥ ७॥

दीपः

नानारत्नप्रभाञ्चत्कनक विरचितानर्घपात्रे पवित्रे
कर्पूरैर्वर्तिकाभिः सह बहुघृतसयोजिताभिश्च युक्तैः ।
दीपैर्दीर्घान्धकाराचलचयभिदुरैः कोटिभानुप्रकाशैः
प्रीत्या नीराजयामि प्रणतसुरतरुं त्वामहं वेङ्कटेश ॥ ८॥

नैवेद्यम्

सौवर्णे वर्धमाने महति च विविधानेकपात्रेषु दिव्यं
भक्ष्यं पञ्चाभिधानं बहुविधमपरं शाकपाकं च नव्यम् ।
शाल्यान्नं माक्षिकाज्यै सह फलनिचयं पायसं चान्नजातं
क्षीरं पानीयमेतत् फलरसमधुरं भुज्यतां वेंकटेश ॥ ९

ज्ञान भिक्षा

मन्तों जागन नींद न कीजे ।
काल न खाय कल्प नहि व्यापै,
देह जरा नहीं छीजे ।
उलटी गग समुद्रहि सोवै,
शशी औ सूरहि ग्रासे
नौग्रह मारी रोगिया बैठा
जल में बिम्ब प्रकाशे ।
बिनु चरणन को दहू दिश धावे
बिनु लोचन जग सूझै ।
ससय उलटि सिंह को ग्रामे,
इ अचरज कोइ बूझे ॥
औंधे घडा नहिं जल बूडे,
सीधे सो जल भरिया ॥
जेही कारण नर भिन्न भिन्न करे,
सो गुरु प्रसादे तरिया ॥
बैठि गुफा में सब जग देखे,
बाहर किधूकू न सूझै
उलट बाण पारिधिहि लागे,
शूरा होय सो बूझे ॥
गामन कहे कबहूं नही गावै,
अन बोला गीत गावे ॥
नरवर बाजा पख भी पेखै
अनहद होन बढावै ॥
कथनी बाद नी निजु कै गावै,
इ सब अकथ कहानी ॥
धरती उलटी आकाश हिं बेधे,
इ पुर सन की बाती ।
बिना पियाला अमृत अचवै,
नदी नीर भरि राखै ॥
कहहिं कबीर सो जुग जुग जीवै,
जो राम सुधा रस चाखै ॥

कबीर साहब कहते है कि "सन्तो जागत नींद न कीजै" मनोष शब्द मे कबीर साहब ने भक्तजन, साधुजन और सज्जनो को सबोधित किया है। जिसे आत्मकल्याण करना है वे तो सदा जागृत ही रहते है अर्थात जागरूप ही रहते है ।

कबीर साहब कहते है कि इस ससार मे जो आत्म कल्याण के साधक है वे ही सन्त है सन्त अज्ञान रूपी रात्री मे सोते नही है, साहब ने उन्हे ही "सन्तो जागत नींद न कीजै" शब्द से सबोधित किया है ।

इस भजन पद में कबीर साहब ने कहा कि "सतो भक्ति सतगुरु आनि" सत पुरुष अथवा सतगुरु एक अविचल परब्रह्म परमात्मा है, उसकी ही आप भक्ति करिये ।

सतपुरुष कबीर साहब ने परमात्मा का ज्ञान लेने के लिये अर्थात सम्पादित करने होइ "सतो जगत नींदन कीजै" पद की रचना की है ।

श्री केशवदेव कीर्तनकार [पुजारी]

कवांट.

वे कहते है कि परब्रह्म परमात्मा को अथवा अपनी आत्मा को यदि आप जान लेगे तो काल आपको ग्रसित नही कर सकता है एव कल्प नाम पृथ्वी के प्रलय के समय आप सुरक्षित रहेगे इस ही साहब ने "कल्पन नहीं व्यापै" शब्द से सबोधित किया है ।

कबीर साहब कहते है कि आत्म ज्ञान का कोई शरीर नहीं होता आत्म ज्ञान एक ऐसा अद्‌भुत ज्ञान है कि जिसका स्वरूप शरीर विहीन है ।

साहब कहते है कि जिसका शरीर होता है उसे जरावस्था (वृद्धावस्था) होती है किन्तु आत्म ज्ञान दिव्य ज्ञान है, यह स्थूलरूप वाला नहीं होता है,

अभिप्राय यह कि :

उलटि गग समुद्रहि सोखे
शशि औ सुरहि ग्रासै ।

साहब कहते है कि गगा जब उलटा स्वरूप धारण करती है तब भले ही समुद्र कितना ही विशाल क्यो न हो फिर भी वह उसे सोख लेती है । अर्थात अपने अन्दर समावेश कर लेती है ।

साहब ने गगा को पापनाशिनि गगा तो अवश्य कहा है, किन्तु समुद्र वह समुद्र नहीं जिसमें अनन्त जल भरा है यहा समुद्र का भावार्थ ससार समुद्र है । जो माया जल से भरा है । जिसे आत्म ज्ञान की गगा जिस समय मूल स्वरूप से बहती है । तब वह ससार सागर का शोषण कर जाती है । उसे सुखा देती है, आत्म ज्ञानि में अज्ञान रूपी मायाजाल (संसार समुद्र(नहीं रहता है उसकी स्थिति अखड परब्रह्म परमात्मा के ज्ञान में सलग्न रहती है ।

आत्म ज्ञान स्वयं प्रकाशी है, उसे चन्द्र सूर्य के प्रकाश की आवश्यकता नहीं होती है । आत्म ज्ञान चन्द्ररूप और ब्रह्मज्ञान सूर्यरूप है । इसे बाह्य जगत के चन्द्र सूर्य प्रकाश की आवश्यकता नहीं रहती है बाह्य जगत का वहा कोई सभव ही नही है । साहब ने जिसे शशि औ सूरहिं ग्रासै शब्द से सबोधन किया है ।

बाहर के चन्द्र एव सूर्य का जहा ग्रास अर्थात समावेश हो गया है । ग्रासे शब्द से स्पर्श किन्तु वहा स्पर्श भी नहीं हो सकता है । जहा स्पर्श की परिणिती होती है वह स्वत ही आत्मज्ञान और ब्रह्मज्ञान में समाविष्ठ हो जाता है ।

इसके पश्चात साहब कहते है कि नवग्रह की पीडा उसे नहीं व्यापती है, वह स्वयं रोग रहित रहता है । साहब कहते है कि ग्रह भले ही दूसरो को भला बुरा फल दें किन्तु वे स्वयं रोगी होते है, जिससे उनका आक्रमण केवल मायाजाल के रोगियो पर ही हो सकता है ।

श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामीजी का मंदिर
नारायणवनम्, [ति. ति. देवस्थान]

दैनिक-कार्यक्रम

१	सुप्रभात	प्रातः	६–०० से	प्रातः	६–३० तक
२.	विश्वरूप सर्व दर्शन	„	६–३० „	„	८–३० „
३.	तोमालसेवा	„	८–३० ,	„	९–०० „
४	कोलुवु & अर्चना	„	९–०० „	„	९–३० „
५.	पहली घटी, सात्तुमोरै	„	९–३० ,	„	१०–०० „
६.	सर्वदर्शन	„	१०–०० „	„	११–३० „
७.	दूसरी घटी अष्टोत्तरम् (एकात)	„	११–३० ,	मध्याह्न	१२–०० „
८.	तीर्मानम्	मध्याह्न	१२–००		
९.	सर्वदर्शन	शाम	४–०० से	„	६–०० „
१०.	तोमाल सेवा & अर्चना रात का कैंकर्य तथा सात्तुमोरै	शाम	६–०० „	„	७–०० „
११.	सर्वदर्शन	रात	७–०० ,	„	८–४५ „
१२.	एकात सेवा	„	८–४५ „	„	९–००

अर्जित सेवाओं की दरें

१	अर्चना & अष्टोत्तरम्	रु	३–००
२.	हारति	रु.	१–००
३.	नारियल फोडना	रु.	०–५०
४	सहस्र नामार्चना	रु.	५–००
५	पूलगि (गुरुवार)	रु.	१–००
६.	अभिषेकानतर दर्शन (शुक्रवार)	रु	१–००

कार्यनिर्वहणाधिकारी,
ति ति, देवस्थान, तिरुपति.

आत्म ज्ञानी अथवा ब्रह्म ज्ञानी पर उनका कोई प्रभाव नही हो सकता साहब का कहना है कि आत्मज्ञान और ब्रह्मज्ञान नक्षत्र ग्रह मण्डल से परे की वस्तु है। वे उन्हे स्पर्श नहीं कर सकते है। साहब कहते है कि—

"आत्म ज्ञान बिना नर भटकत हैं कहूँ मथुरा कहूँ काशी"

मोहे देखत आवे हांसी
पानी मे मीन पियासी ॥

कबीर साहब कहते है कि आप कोई भी काम करो भक्ति की साधना करो अथवा यज्ञ यज्ञादि कर्म करो परन्तु आपको आत्मज्ञान सपादन करना ही पडेगा। इसके बिना उन कार्यों की फलश्रुति प्राप्त करना सभव नहीं है।

कबीर साहब की विचार धारा एक ऊँचे प्रकार की विचार धारा है। उनकी विचार धारा का प्रवाह व्यापक स्वरूप वाला है यदि आपको आत्मज्ञान प्राप्त हुआ है तो आपको उसका प्रकाश करने को अवश्य मिलेगा। साहब ने जिसे "जल मे बिम्ब प्रकासे" के शब्द से संबोधित किया है।

जल मे बिम्ब का दर्शन तभी हो सकता है जब जल स्वच्छ (निर्मल) हो यहाँ अन्तःकरण का साहब ने जल कहा है। अन्तःकरण जब निर्मल हो जावेगा तब ही आपको आपका आत्मस्वरूप स्पष्ट दीखेगा। उसका प्रकाश कैसा है? उसका भी अनुभव आप कर सकेंगे।

इस भजन पदसे साहब चेतन भी करते है कि "सन्तो जागत निदन कीजै" अर्थात मै जिस विचार धारा से कह रहा हूँ उसी विचार धारा से आप ग्रहण करो न बली वह "सतो जागत निदन कीजै" होगा।

यदि आप मेरी विचार धारा को स्थिर चित्त रखकर ग्रहण करेगे तथा बाल्य आपकी वृत्ति को चलित नही करेगे यदि ऐसा करेगे तो आप गफलत में पड जायेगे। "नीद न कीजै" शब्द गफलत न हो यह विशेष लक्ष रखवा। आगे मै तुम्हे अमृत का स्वाद चखाऊँगा। मेरी इस विचार धारा को बराबर विचार पूर्वक विचार (चिंतन) करना इससे आपको आगे का मार्ग समझ मे आ जावेगा। ★

सूरसागर के कूटपदों के पाठ तथा अर्थ की समस्याएँ और समाधान

डा० किशोरीलाल

दृष्टकूट शैली की रचनाओं की सुदीर्घ-परम्परा मानव की बौद्धिक चेतना के उस विकसित धरातल को प्रस्तुत करती है जिसमें उसके मनोविनोद और कौतूहल-वृत्ति का वैविध्यपूर्ण इनिहास और उसकी 'वाणी-कूट' या 'वाणी-गोपन' की समस्त चेष्टाएँ अन्तर्हित हैं। मानव की कौतूहल भरी दृष्टि का उन्मेष कब हुआ और कब उसने पहेली बुझाना आरम्भ किया, ये सभी बातें लिखित इतिहास के अभाव में अज्ञात हैं, किन्तु जब से हमें लिखित वैदिक-साहित्य का दर्शन होता है, तभी से कूटों के शैशवरूपों की झलक भी मिलने लगती है।

वैदिक युग के समाप्त होते-होते पौराणिक वाङ्मय की परम्परा में उपलब्ध महाभारत कूटों की दृष्टि से अति प्रसिद्ध एव पुष्कल लोकप्रियता प्राप्त कर चुका है। महाभारत के सम्बन्ध में प्रायः ऐसी प्रसिद्धि है कि व्यास जी को जब महाभारत लिखने के लिए कोई उपयुक्त पात्र न मिल सका तो इसके लिए उन्होंने गणेश जी से प्रार्थना की, लेकिन गणेश जी ने व्यास जी की प्रार्थना इस शर्त पर स्वीकार कर ली कि यदि लिखते समय मेरी लेखनी रुक जायेगी तो मैं पुनः लेखन-कार्य आरम्भ न करूँगा। शर्त तो टेढी थी, लेकिन व्यास जी ने इसे मान लिया। फिर क्या था, व्यास जी महाभारत के श्लोकों की रचना करने लगे और गणेश जी मुशी के कार्य में जम गये। अन्ततः देखा गया कि मुशी जी की लेखनी की घुडदौड़ में बेचारे व्यास जी कोसो दूर पीछे रह गये। अब ऐसी स्थिति में व्यास जी के पास कूट के अलावा अन्य कोई चारा ही न था, अतः दो-तीन श्लोकों की रचना करने के पश्चात् वे एकाध कूटशैली का भी छन्द गणेश जी को थमा देते थे और यह भी कह देते थे कि जरा अर्थ समझकर ही छंदों को लिपिबद्ध कीजिएगा। चक्कर में डाल देने वाले कूटों में गणेश जी ऐसे फँस गए कि उन्हें अपनी पूर्व शर्त को वापस लेना पड़ा। वस्तुतः व्यास जी को अपने कूटात्मक श्लोकों पर इतना गर्व था कि महाभारत के आदि पर्व में उसे वे किसी भी प्रकार छिपा न सके ओर उसकी घोषणा उन्हें इन शब्दो में करनी पडी—

अष्टौ श्लोकसहस्राणि, अष्टौ श्लोकशतानि च।
अह वेद्मि शुको वेत्ति सजयो वेत्ति वा न वा॥

हिन्दी काव्य-परम्परा के अन्तर्गत सिद्धों और नाथों की रहस्यमय वाणी के साथ ही कबीर तथा मैथिल कवि विद्यापति के पदों में कूटात्मक शैली के छंदों का बडा ही प्रकृष्ट रूप देखने को मिलता है। आगे चलकर हिन्दी में विद्यापति के कूटों ने ऐसा पैर जमाया और अपनी प्रभविष्णुता के कारण कृष्णकाव्य में वे इस तरह छा गये कि उनसे सबसे अधिक प्रभावित हुए महाकवि सूरदास। विद्वानों ने सूरदास के कूटपदों के लिखने की प्रेरणा के स्रोतों का अनुसधान करते हुए अनुमान लगाया है कि "वगभद्र में चैतन्य महाप्रभु ने कीर्तन-भक्ति को प्रधान मान कर राधा-कृष्ण का कीर्त्तन आरम्भ कर दिया था। श्री चैतन्य महाप्रभु ने विद्यपति के पद सुने थे। वे उनसे इतना प्रभावित थे कि जब ये लीला-पद गाये जाते थे तो वे आत्म-विस्मृत हो जाते थे। उनके शिष्य रूपगोस्वामी ने राधाकृष्ण की कमनीय केलि भूमि बृन्दावन को अपना निवास-स्थान बनाकर राधाकृष्ण की कीर्तन-भक्ति का प्रचार प्रारम्भ कर दिया। विद्यापति के पद उनके साथ आये और उन्होंने यहाँ भक्त समाज में भी अच्छा आदर पाया।" इसमें सदेह नहीं कि विद्यापति के सारग शब्दो से निर्मित यमक और रूपकातिशयोक्ति अलंकारों की छाप सूर के अनेक पदों पर लक्षित होती है।

सूर-कृत कूटशैली के पदों के सम्बन्ध में सम्प्रति उनके दो ग्रन्थों की चर्चा होती है—पहला सूरसागर, दूसरा साहित्य लहरी। यद्यपि कुछ कूटात्मक पद सूरसारावली में भी प्राप्त है, किन्तु उनकी संख्या अत्यंत परिमित है। जहाँ तक साहित्य लहरी और सूरसारावली का सबंध है, अब बहुत से सूर के पडित इन्हे सूर-कृत मानने में सकोच करने लगे है। अत सूर के कूटशैली के पदो के पाठ एव अर्थ-समस्या का विश्लेषण सूरसागर में प्राप्त पदो के आधार पर ही प्रस्तुत किया जायेगा।

वास्तव में सूरसागर के कूटपदो का अनुशीलन सूर-कृत कही जानेवाली साहित्य लहरी के साथ ही बहुत पहले से आरम्भ हो चुका था। सर्वप्रथम सरदार कवि ने 'साहित्य लहरी' में सूरसागर के भी कुछ पदो को सम्मिलित करके ब्रजभाषा गद्य में एक महत्त्वपूर्ण टीका लिखी थी जिसे मुशी नवल किशोर प्रेस, लखनऊ न मुद्रित किया था। इसके पश्चात् साहित्य-रसिक भारतेन्दु बाबू हरिचन्द्र ने साहित्य लहरी की टीका तथा सरदार कवि के अर्थों की पूर्ण विवेचना की, इसमें भी सूरसागर के कई कूटपद देखने को मिले। यह पुस्तक बाँकीपुर, पटना से सन् १८९२ में मुद्रित हो चुकी है। इसी

सूरसागर काव्य के प्रणेता भक्त कवि सूरदास

समय बालकिशन दास ने 'सूर शतक' नाम से 'साहित्य लहरी के पदों के अलावा सूर के इतर कूटपदों का सटीक संकलन प्रस्तुत किया। यद्यपि पुस्तक का नाम सूरशतक है किन्तु इसमें पचास से अधिक पद नहीं हैं, यह पुस्तक बनारस के लाइट प्रेस में छप चुकी है।

संस्कृत में महाकवि माघ के लिए 'भारवेरर्थ-गौरवम्' और हिन्दी में सूरदास के लिए 'केशव अर्थ गभीर' की चर्चा युगों से की जाती है। कारण स्पष्ट है। जिस प्रकार माघ ने अपने 'शिशुपालवध' में अर्थ-गाभीर्य और शाब्दिक जटिलता का नमूना पदे-पदे प्रस्तुत किया है, ठीक हिन्दी में सूर ने भी अपने कूटों में जैसी दुर्बोधता, जटिलता और अर्थ-गाभीर्य का परिचय दिया है, वह अन्यत्र सुलभ नहीं। इसमें किंचित् संदेह नहीं कि सूर के कूटों की सुदृढ़ चट्टान को स्पर्श करते ही न जाने कितनी की मेधा पराभूत होकर वापस चली आई है। ऐसी स्थिति में सूर के कूटपदों की अर्थ एवं पाठ समस्या अपने आप में अत्यन्त जटिल है। यद्यपि सूरसागर के चतुर मरजीवा को डुबकी लगाने पर कभी-कभी घोंघा और सीपी के साथ रत्नों की भी प्राप्ति होती है, पर सदैव नहीं।

सूरसागर, विशेषकर कूटात्मक शैली के पदों का सम्पादन जितना सरल समझा जाता है, उतना है नहीं। वैज्ञानिक पाठ-शोधन की विधि सम्प्रति खूब अपनायी जाती है, पर प्रामाणिक प्रतियों के अभाव में जितने भी संपादन हो रहे हैं वे अधिक सन्तोषजनक और कवि के पाठों और उसकी अभीष्ट अर्थ-व्यञ्जना को प्रस्तुत करने में प्राय असफल हो रहे हैं। इस तथ्य की अधिक गहराई और विस्तार में न जाकर हम यत्किंचित् बातों का संकेत करना चाहेंगे। सूरसागर के पाठ और उसकी अर्थ संगतियों की दृष्टि से रत्नाकर जो कार्य वर्षों पूर्व ब्रजभाषा-मर्मज्ञ बाबू जगन्नाथदास रत्नाकर ने किया था, वह अपने आप में सर्वथा अप्रतिम और श्लाघ्य प्रयत्न था। उन्होंने कई वर्षों तक सूर सागर की प्राचीन अलभ्य हस्तलिखित प्रतियों की खोज में कितने धन, श्रम और वैदुष्य का उपयोग और विनियोग किया था, इसका पता पाठान्तरों सहित प्रकाशित सूरसागर द्वितीय खण्ड से आसानी से चल जाता है। फिर भी उनके सम्पादनकार्य के आगे अब एक प्रश्नवाचक चिह्न लगा दिया गया है। स्व० डॉ० माताप्रसाद जी गुप्त ने सूरसागर का कई हस्तलेखों के आधार पर एक अच्छा एवं परिष्कृत पाठ प्रस्तुत किया है और सूरसागर के पदों की संख्या भी उन्होंने काट-छाँट कर बहुत थोड़ी कर दी है, पर अभी तक वह संस्करण प्रकाशित रूप में देखने को नहीं मिला, अतः इस सम्बन्ध में अधिक विचार नहीं किया जा सकता। प० जवाहरलाल चतुर्वेदी ने श्री गोवर्धनदास बिन्नानी के आग्रह पर सूरसागर के संपादन का कार्य प्रारम्भ किया था और बड़े सुंदर ढंग से उसका एक खण्ड प्रकाशित भी किया गया था, परन्तु उसे ब्रज की विशिष्ट ध्वनियों में इतना अधिक आच्छादित कर दिया गया कि वह संस्करण सूर के मूलपाठ से बहुत दूर हो गया।

सूरसागर में कूटपद्धति के दो प्रकार के पद मिलते हैं—कुछ तो ऐसे पद हैं जिनमें कूटात्मक प्रवृत्ति बहुत आंशिक ही लक्षित होती है और शेष ऐसे पद हैं जो पूर्णतया कूटशैली के अन्तर्गत हैं। वस्तुतः अर्थ की क्लिष्टता से जकड़े हुए ऐसे पदों के पाठ और अर्थ की समस्या सुलझाने के लिए समय, साधना-श्रम और वैदुष्य कितना अपेक्षित है, इससे भुक्त भोगी या जिन्हें इन पदों पर थोड़ा-सा भी चिन्तन या विचार करने का अवसर मिला है, वे पूर्णतया अभिज्ञ होंगे। सूरसागर में बहुत-से ऐसे भी पद आपको मिलेंगे जिनमें कूटात्मक प्रवृत्तियाँ बिल्कुल नहीं हैं, फिर भी काव्यकौशल की प्रौढ़ता और कल्पना की ऊँची उड़ान के कारण ऐसे पद कूटशैली के पदों से किसी भी प्रकार कम नहीं हैं। चक्कर में डाल देने वाले ऐसे पदों की पूरी परख या अभिनिवेश की पूरी क्षमता न रखनेवाले सज्जन प्राय सहज ही भटक गए हैं। ऐसे पदों का अर्थ करने के लिए काव्यशास्त्र की परम्परा और काव्यरूढ़ियों का ज्ञान नितान्त आवश्यक है। बिना इसके सागर के रत्नों की जगह हम घोंघा और शंख ही इकट्ठे करते फिरेंगे। सूरकाव्य के सहृदय प्रेमियों के लिए सूरसागर के एक पद के कुछ पंक्तियों का नमूना प्रस्तुत किया जा रहा है—

कंधर, कीधर मेरु! सखी री!
की बग-पगति, की सुक सीपज, मोर, कि
पीड पखी री।
की सुरचाप, किधौं बनमाला, तड़ित किधौं
पर पीत री।

o o o o

इस पद का अर्थ सूर के एक विद्वान् ने यों किया है—**"अरी सखी, मैंने जो देखा वह (श्याम की) गरदन थी या सुमेरु की चट्टान थी, छातियों पर मोतियों की माला थी या (बादलों में उड़ती) बगुलों की पाँति थी (बादलों को देखकर) मोर नाचे जा रहा था (या कृष्ण के**

(क्रमशः)

(पृष्ठ १० का शेष)

(Policy matter) तो भौतिक वादी तथा साम्राज्यवादी थी और चुंकि न्यूक्लीय विद्वान का मुझ पर प्रयोग किया गया अत: मै उन प्रयोगों को आध्यात्मिक एव मनोवैज्ञानिक ढग से समझने का प्रयास कर रहा हूँ।

मेरे साथ न्यूक्लीय विद्वान के कुछ घटित प्रयोग :—

मुझे आणुविक शाक लगा कर मेरे शरीर से कुछ आत्म या प्रोटोप्लाजम लिया गया। मनुष्य ब्रह्माण्ड का एक छोटा रूप है। (Man is a Microcosm of the Macro-cosm) इसी सिद्धान्त के आधार पर मनुष्य के शरीर की थोडी सी भी गर्मी उसके पूरे शरीर तथा मन का प्रतिनिधित्व करती है। मन से सूक्ष्म बुद्धि है और बुद्धि से सूक्ष्म आत्मा। आत्मा तो आणुविक यन्त्रों की पकड में क्या आयेगी, हाँ स्थूल मन अर्थात पीडीमन (lower Manas) के विचार आणुविक यन्त्रों की पकड में अवश्य आते हैं। ब्रह्माण्डी मन (Higher Manas) कभी भी आणुविक-यन्त्रों की पकड में नहीं आ सकते। अब उस छाया शरीर को आणुविक यन्त्र पर जिस प्रकार की भी यातनायें दी जाती उसका प्रभाव मेरे ऊपर पडता। जादूगर लोग अपनी इच्छा-शक्ति से दूसरों की इच्छा शक्ति (will force) को कमजोर बनाकर माने हिप्नोटिज्म करके ही अपना जादू का खेल दिखाते हैं। जादूगर अगर कुछ आणुविक यन्त्रों का भी प्रयोग करते हों तो इस का भी क्या पता?

मेरे छाया शरीर के जिस भाग को प्रभा-वित किया गया उसका प्रभाव मेरे उपर हुआ। ज्यादातर इसका असर सोये या अर्धनिद्रित अवस्था में होता है।

उदाहरणार्थ प्रयोगकर्ता ने मेरे छाया शरीर की अगुली को अग्नि से प्रभावित किया तो मेरे पार्थिव शरीर की अगुली में भी जलन हुई। अगर उसने आणुविक मशीन पर मेरे कमर में अग्नि सला का का स्पर्श कराया तो मेरे पार्थिव शरीर के कमर में भी जलन का अनुभव हुआ।

हिरामन सुग्गे की कल्पित कहानी :—

बचपन में दादी, माँ से कहानी सुना था कि एक राजा की आत्मा भी। मन सुग्गे में कैद थी और जो जो कष्ट उस हिरामन सुग्गे को दिया जाता था वही कष्ट राजा को भी अनुभव होता था। याद हो आई कि हमारा आणुविक विज्ञान भी पहले जमाने में कितना समुन्नत था।

आज का मानव मन पर आणुविक विज्ञान भी उन्ही न्यूक्लीय तथ्यों पर आधारित है। आज के आविष्कर्ता समझते हैं कि मानव मन पर आविष्कार कर वह दुनियावालों को एक बडी चीज दे रहें हैं किन्तु वह यह नही सोंचते कि दुनियावालों के लिए पतन का मार्ग प्रस्तुत कर रहे हैं और आनेवाले युग में प्रत्येक व्यक्ति या प्रत्येक दल अपने विपक्षी पर इस आणुविक करिश्मों का प्रयोग करेगा। तथा दूसरों की आणुविक एनर्जी से खेल करेगा।

न्यूक्लीय एवं दिव्यदृष्टि (Nuclear and clair voyance) :—

पहले महात्मा अपनी इच्छा-शक्ति को केन्द्रित एव विकसित कर दूसरे के मन का हाल जानते थे, किसी छिपी वस्तु के सम्बन्ध में अपनी योग विद्या से जानकारी देते थे।

आज पराकासनी किरणों की प्रबल भेदन शक्ति से हत्यारों इत्यादि का पता लगाया जाता

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

प्राप्त करो आज से अच्छा नाम

तुम्हारा मन इधर-उधर क्यों भटकता?
श्री राम का स्मरण क्यों नहीं करता?
हमेशा सोचते हो अपने मन में स्त्री,
इसलिए खो देते हो जीवन में श्री।
नाश करते हो क्रोध से अपना जीवन,
मंगल बनाओ आज से अपना जीवन।
कितना दयालु होता है भगवान,
उसे क्यों याद न करते, रे नादान?
घर को क्यों बनाते नरक?
तुम और मूर्ख में क्या फर्क?
सदा क्यों छिडछिडाते बच्चों से,
जरा प्रेम क्यों न दिखाते उनसे?
कितने गरीबों के पेट पर मारते,
कितने लोगों को धोखा देते,
कितने दुष्टों से मित्रता रखते,
कितनी नारियों की आँखों से आँसू आते,
उससे क्या हुआ तुमको लाभ,
होगा जरूर एक दिन तुम्हारा नाश।
सब प्राप्त करने की इच्छा होती क्यों?
सब एक दिन मिट्टी में लीन जाते नहीं?
जो दीन है, दुखी है, करो उसकी सहायता,
जो करता है इसे, बढेगी उसकी महानता।
जप करो आज से भगवन्नाम,
प्राप्त करो आज से अच्छा नाम।

श्री के. एस. शकरनारायण,
कल्पाक्कम

भक्तवत्सल श्री बालाजी

धारा सुब्रह्मण्यम्, विजयवाडा.

(जून ७९ अंक का शेष)

चाहे वह राम हो, कृष्ण हो या और कोई हो। कलियुग में आते ही वे मूर्ति के रूप में बन गये। उनके द्वारा महाभारत में कहा गया है कि इस युग में तो मूर्ति का ही अर्चना या आराधना करना है। तथा विग्रहाराधना का महत्व बताया गया है। वे मूर्ति के रूप में दर्शन देकर अपने भक्त जनो की कामनाओ की पूर्ति कर रहे हे।

भगवान विष्णु का भूलोकागमन :—

प्रचलित पौराणिक कथा के अनुसार सृष्टि के तीन मूलकारक अर्थात् ब्रह्म, विष्णु तथा महेश्वर के कर्तव्य निर्वहण को भृगु महर्षि ने परीक्षा करना चाहा। इसलिए तीनों देवताओं को परीक्षा करने को एक दिन निकले। पहले ब्रह्म लोक गये, वहाँ ब्रह्मा अपने काम में लीन रहा। तब शिवलोक गये वहाँ शिव तांडव नृत्य करते हुए अपने काम में लीन रहा। बाद को विष्णु लोक गये वहाँ भगवान श्रीविष्णु अपनी पत्नी लक्ष्मीदेवी के साथ शय्या पर लेट कर प्रेम कलाप कर रहे थे। इसे देख महर्षि बहुत नाराज हुए। जो भगवान को लोगो को निरंतर देख-रेख करना है, वे कर्तव्य-विमूढ होकर शृंगार में लीन रहे। इसे वे सह न सके। उन्होने विष्णु को वक्षस्थल पर, जो कि लक्ष्मीदेवी का निवास स्थान है लात मारा। फिर भी विष्णु उनके पैर पकडकर पादसेवन करते हुए, भक्त को शांत करने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन बाद को इनके गर्व को चूर-चूर कर दिया। ऐसे भक्त को सजा दिये बिना उनसे क्षमायाचना करते देख लक्ष्मीदेवी गुस्से में वहाँ से चली गयी। इसलिए उसको ढूँढते हुए सारे लोक घूमकर आखिर भूलोक पर आये। कहीं भी उसका पता न चला। कुछ दिन तक वे तिरुमल मे रहने लगे। अचानक एक दिन कमल में बैठनेवाली एक सुंदर स्त्री को देखा। वह तो आकाशराज जो कि नारायणवन के शासक की पाला-पोसा हुआ पुत्री थी। उससे शादी करना चाहा। लेकिन उसके पास पैसे नहीं थे। इसलिए धनाधिपति कुबेर से ऋण लायें। शादी की खर्चा तथा दहेज के लिए उन्हें बहुत रूपये ऋण में लाना पडा। तभी से वे यहाँ के शासको को ऋण चुकाते ही रहे। बाद को उसी पुण्यस्थल तिरुमल में लोगों के दर्शनार्थ मूर्ति के रूप में मौजूद है।
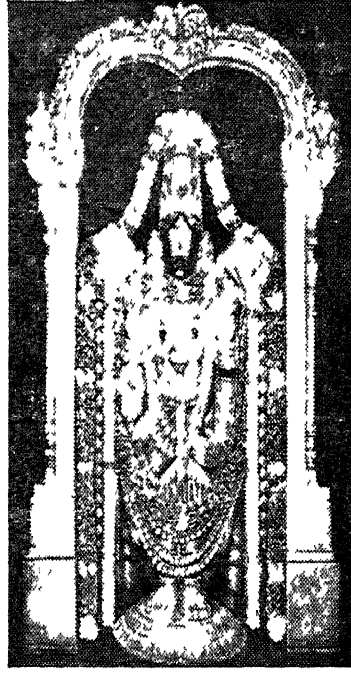
तिरुमल स्थित श्री बालाजी की महिमा :

यह तो बहुत प्राचीन मंदिर है। कुछ हजारों साल का पूर्व है। बहुत पहले से इस भगवान की आराधना किया जा रहा है। पहले पहले एक व्यक्ति हर दिन पूजा किया करता था। समय गुजरते ही, कई प्रकार के परिवर्तन हुए। अब तो देवस्थान उसका निर्वहण कर रहा है। उनके आध्वर्य में भगवान बालाजी को नित्य पूजादि सम्पन्न हो रहे हे। कई प्रकार के अध्यात्मिक या धार्मिक कार्यक्रमो का विकास किया जा रहा है। आज भगवान के दर्शन करनेवाले भक्तों की सख्या अनगिनत है। हर दिन भक्तगण हजारों सख्या में आ रहे हे। अपने शक्ति के अनुसार स्वामी को भेंट या उपहार समर्पित कर रहे हें। स्वामी को दर्शनकरके अपने जन्म को कृतार्थ कर रहे हे। देश-विदेशो के कई दूर प्रान्तो से भी भक्त आकर स्वामी को दर्शन कर रहे है। उनके लिए देवस्थान के द्वारा कई प्रकार की सुविधाओ का प्रबंध भी हुआ है। यात्रीगण भी बहुत सहनशीलता दिखा रहे हे। इससे स्नेह तथा लोककल्याण अवश्य होगा। निश्चय ही ये भक्तजनों के प्रति वात्सल्यपूर्ण है तथा उनकी कामनाओं की पूर्ति कर रहे हे और लोगो को सुख-शान्ति प्रदान कर रहे हे। अस्तु,

मंगलं वेंकटेशाय कामितार्थप्रदायिने।
वेंकटाद्रि निवासाय विश्वरूपायमगलम्॥

-- --

अनिवार्य परिस्थितियों के कारण पिछले अंक में प्रकाशित नहीं किया गया हैं। सहृदयता से पाठक इसे स्वीकार करें।

— संपादक

(पृष्ठ १५ का शेष)

गायत्री मोहिनी रूप धारण कर असुरो को मदिरा पिलाकर सुला देती है और देवताओ को अमृत पिलाकर अमरत्व प्रदान करती है। गायत्री वह सुधा की धारा है जो मृतको में भी जीवन का सचार करती है। पर प्रश्न तो यह है कि इस अमृत से जितने मानवों का उपकार होना चाहिए, वह होता क्यो नहीं है? कुछ लोग गायत्री की भावना को गोपनीय रखना चाहते है, हमें क्या अधिकार है कि अमृत की एक-आध बूंद आप पीकर फिर इसको बक्स में बन्द कर दें और तृषित मानवता इस अमृत के अन्वेषण में इधर-उधर भटकती फिरे तथा मदिरा और जहर पीकर ही सतुष्ट हो जाय ? गायत्री में जो सुन्दरता है, माधुर्य है, आकर्षण है, ससार उससे वचित नहीं रह जाय। मनुष्य की शक्ति सीमित है और माया का प्रलोभन अपरम्पार। माया मानव के सम्मुख दो खिलौने फेंक देती है— कामिनी और कचन, जिनसे मानव जीवन भर उलझा रहता है। गायत्री हमें हाथ पकड कर ऊपर उठाती है तथा हमारे लौकिक एव पारलौकिक, दोनो जीवन को सफल बनाती है।

गीता में भगवान ने कहा है—

भूमिरापो नलो वायुः खं मनो बुद्धि रेव च।
अहकार इतीयं मे भिन्ना प्रकृति रष्टधा॥

प्रकृति के आठ तत्व है—भूमि, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि, अहङ्कार। इनमें से प्रथम पाच तत्वो से स्थूल शरीर का निर्माण हुआ है, अन्तिम तीन तत्वो से सूक्ष्म शरीर का। स्थूल शरीर का अन्नमय कोश और सूक्ष्म शरीर का नाम प्राणमय कोश। अहङ्कार तत्व से अह (मैं हूं) की भावना तथा भोजन ग्रहण करने की प्रेरणा आती है। निर्जीव में अहङ्कार नहीं है, अत चैतन्य का अभाव रहता है। मनस्तत्व से सुख दु:ख का अनुभव, यादगारी, वासना तथा इच्छा का जन्म होता है। बुद्धि तत्व से विवेक, तथा क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। इसका ज्ञान प्राप्त होता है। सूक्ष्म शरीर से अहङ्कार तत्व निम्नतम है और बुद्धि तत्व उच्चतमा वृक्ष योनियो में केवल अहङ्कार तत्व जगा रहता है और उसी की प्रधानता रहती है। पशु-योनि में अहङ्कार और मन, ये दो तत्व जग जाते है। वृक्ष केवल जल मिट्टी से भोजन लेना और शारीरिक विकास करना जानते है, क्योकि अहङ्कार तत्व जो उनमें जागृत है पर उनमें सुख दुःख का अनुभव नहीं है न इच्छा और यादगारी (Memory) है, क्योंकि मनस्तत्व जो सोया हुआ है। पशु यह नहीं चरना चाहिए। विवेक के अभाव में वासना पशुओ को जिधर ले जाय। पशु अपने कर्मो के लिए उत्तरदायी होते। वे केवल प्रारब्ध भोगते रहते है, नवीन कर्मों का सृजन नहीं करते।

मनुष्य योनि में, मन बुद्धि, अहङ्कार तीनो तत्व जागृत हो जाते है। सूक्ष्म शरीर का पूर्ण विकास हो जाता है, अहङ्कार तत्व, स्वार्थ-भावना, भोजन की प्रवृत्ति तथा चैतन्य का प्रादुर्भाव उसमें उत्पन्न करता है।

मनरतत्व उसे सुख-दुःख का अनुभव, स्मृति इच्छा, वासना तथा प्रवृत्ति (Instincts) देता है। बुद्धि तत्व उसे ज्ञान, कर्तव्या कर्तव्य विवेक तथा अपने कर्मो का उत्तर-दायित्व प्रदान करता है, एव उसे पशुता से ऊपर उठाता है। वासना पशुता की मार्ग है, कर्तव्य की प्रेरणा मानवता की मानव कर्म-योनि है, अतः वह अपने कर्मो के लिये उत्तरदायी समझा जाता है। जीवन के पांच सोपान है, दो हम लोग पार कर चुके, तीसरे सोपान पर आ गये है। पहला सोपान वृक्ष योनि है जिस में अहंकार तत्व या तम की प्रधानता है, दुसरा पशु-योनि जिसमें अहकार तथा मन अर्थात तम तथा रज,

(क्रमशः)

भगवान बालाजी का सहस्र कलशाभिषेक

आगम शास्त्रों के अनुसार निर्मल जल से अभिषेक करना अत्यत पवित्र आचार है।

सहस्र कलशाभिषेक भक्तों द्वारा लौकिक तथा पारलौकिक सुखों के प्राप्त करने के उद्देश्य से मनायेजानेवाली विशेष अर्जित सेवा है।

बालाजी के गर्भगृह के सामने नीचे जमीन पर धान (Paddy) को शय्या के आकार में बिछाया जायगा। चदन इत्यादि सुगंधित द्रव्यों के परिमल तीर्थ से १००८ रजत कलशों को भरकर उस के ऊपर रखते हैं। वेदमत्रों के पठन तथा होम से उन कलशों को पवित्र किया जाता है। उस के बाद आगमानुसार उस पवित्र तीर्थ से भोग श्रीनिवास, मलयप्पस्वामी तथा उनकी देवियों और विश्वक्सेन का अभिषेक किया जाता है। बंगारु वाकिलि (स्वर्ण द्वार) के पास होम तथा अभिषेक सपन्न होता है। श्री श्रीनिवासमूर्ति गर्भगृह से बाहर केवल इस एक ही अवसर पर विराजते हैं इस समय भी भोग श्रीनिवासमूर्ति को मूलमूर्ति से रेशम की डोरी द्वारा सम्बन्ध रखा जाता है।

सहस्र कलशाभिषेक केवल बुधवार को संपन्न होनेवाली अर्जित सेवा है जिस की दर रु २,५०० है। जो गृहस्थ इस सेवा को मनायेगा वह अपने साथ परिवार के १० लोगों को ले जा सकता है। सेवा के अत में वस्त्र पुरस्कार के साथ गृहस्थ को बड़ा, अप्पम, दोसै इत्यादि प्रसाद भी दिये जाते हैं।

(पृष्ठ २९ का शेष)

हैं, इन्फ्रारेड किरणों द्वारा फ्रोटोग्राफी लेकर बंद लिफाफे के अन्दर का मजबून पढा जा सकता है, बेतार की तरंगो द्वारा अपना चित्र टेलीविजन द्वारा दूर भेज देता है और वैज्ञानिक इस प्रयोग में भी लगे हुए है कि रेडियों तरंगों के माध्यम से सुगुन्ध और स्वाद भी प्रसारित किया जा सके। अत: इन अदृश्य किरणों को खोज कर मनुष्य ने योगियों की दिव्व दृष्टि को भी मात कर दिया। किन्तु, योगी अपनी शक्तियो का प्रयोग सीमित एवं मानवता की भलाई के लिए करते थे किन्तु, आज का विज्ञान इसे छड़ल्ले से अपना आणुविक हथियारों को निर्यात कर वहाँ अस्तव्यस्तता फैलाने में कर रहा है।

न्यूक्लीय एवं दिव्य श्रवण या अतीन्द्रिय श्रवण (Nuclear and clairaudience) :—

योगी पहले अपनी योग की साधना अवस्था में दूर की आवाज को पकड लेते थे। न्यूक्लीय विज्ञान ने इसे आज बहुत ही आसान कर दिया है। आपको जरा सी झपकी लगी, पाँच सौ मील दूर आपके सम्बंधी की आवाज आपको सुनने में आ जायेगी। निद्रा की बात दूर बैठे बैठे ही आप के मस्तिष्क को इस प्रकार का कम्प्यूटर बना दिया जायेगा कि यन्त्रों पर आपके संबधियों की आवाजे आपको यदा कदा मिल जाया करेंगी-जो आपसे पाँच सौ मीलदूर है।

मानव को यातना देने के नये नये तरीके :—

क्या आप समझते है कि ये सब प्रयोग किसलिए किए जारहे हैं। उत्तर मिलेगा दूसरों को कैसे कितना अधिक सताया जाय? जरासी नींद लगी नहीं कि आप का आणुविक या एलोक्ट्रिक शाक देकर जगा दिया गया। अनिद्रा व अकेलापन से आदमी इतना टूट जाता है कि वह आत्म हत्या करने पर भी बाध्य हो जाता है।

न्यूक्लीय एवं अणिमा सिद्धि :—

योग की इस सिद्धि में मनुष्य अपने को मक्खी से भी छोटा बना लेता है। गरिमा सिद्धि में मनुष्य अपने को विशाल बना लेता है। योग की इसी सिद्धि के बदौलत श्री हनुमान जी ने समुद्र में सुरसा राक्षसी को परास्त किया था।

'जस जस सुरसा बदन बढावा
तस तस विकट कपिरूप दिखावा।"
— रामायण

आज के इस आणुविक एवं न्यूक्लीय, युग में यह इतना आसान हो गया है कि पूछना ही क्या न्यूक्लीय शाक देकर अपको छोटा करउ की बात तो दूर आप को पिघला कर भाष्प बना कर हवा में उडा तक दिया जा सकता है।

मुझे आणुविक शाक लगाये गये। हाथ पैर छोटे होगए। दो तीन बार रात को इस प्रकार का शाक लगाया गया कि मुझे तो लगा कि मै पिघल कर (Melt away) हवा में विलीन हो जाऊँगा। फिर गरिमा सिद्धि का न्यूक्लीय विज्ञान द्वारा प्रयोग किया जायेगा, आपका शरीर फूल जायेगा। मानव पर ये सब प्रयोग चलाये जा रहे हैं और उस के लिए इस आणुविक युग में इस आणुविक राज नीति के आविष्कर्त्ता ने मुझे चुना है। आज का बर्बर मानव दूसरों को सताने में अपने बाप दादे हिटलर, मुसोलनी, स्टालिन, लेनिन इत्यादि तानाशाहों को भी मात कर रहा है तथा नित दूसरों को सताने के लिए नये नये यन्त्रों का आविष्कार कर रहा है और पद्धतियाँ निकाल रहा है। *

सन्त हृदय नवनीत समाना।
कविन कहा पै कह नहीं जाना ॥
निज परिताप द्रवहि नवनीता।
परहित द्रवहि ते सन्त पुनीता ॥

ऐसे दयालु गुरुदेव के गुण गाना ही हमारा कर्तव्य है जिससे कुछ न बने उस के लिए गुरुत्तरण का सम्बन्ध ही उद्धारक है, उन्हीं की कृपादृष्टि से हमारा कल्याण होगा। जसे तिरुप्पावै ग्रन्थ के व्यङ्गार्थ विवरण के २२ वे पासुर में लिखा है—

एकयेव गुरोर्दृष्ट्या, द्वाभ्यां वापि लभेतयत्।
नतत्त्रिभिरष्टाभिस, सहस्रेणापिकस्य
चित्त ॥

इसका तात्पर्य है कि गुरु के एक नेत्र से अथवा दो नेत्रो से (अथवा एक या दो नेत्रों के कटाक्ष पाने) मानव का जो कल्याण होगा, वह तीन नेत्र वाले शिवजी के कटाक्ष से अथवा चतुर्मुख ब्रह्मा होने से आठ नेत्र वाले ब्रह्माजी के कटाक्ष से अथवा "सहस्र शीर्षा पुरुषः सहस्राक्षस्सहस्रपात्" इत्याद्-युक्त प्रकार से हजार नेत्र वाले श्रीमन्नारयण के कटाक्षसे भी न मिल सकेगा, आचार्य का एक नेत्र कहने का अर्थ ये नही कि आचार्य का एक नेत्र काना बन गया है, दो नेत्र कहने से बाह्य नेत्र ८व भीतर का नेत्र दोनों कहे जाते हैं, शिष्य का कल्याण चाहने वाला मङ्गलमय मन ही भीतर का एक नेत्र है, तथा च ये अर्थ निकला, आचार्य किसी को अपने कृपापूर्ण नेत्र से एक बार देख लेते, या प्रत्यक्ष दर्शन के अभाव में भी अपने मन में किसी का मङ्गल होने का अनुग्रह करे तो भी वह मानव ऐसे श्रेष्ठ श्रेय का पात्र बन जायगा, जो कि त्रिमूर्तियो के कटाक्ष से भी नही मिलेगा। आचार्य के उक्त दोनों दृष्टियों का पात्रभूत व्यक्ति अर्थात
(शेष पृष्ठ ३६ पर)

श्रीवेंकटेश्वर स्वामीजी का मंदिर, मंगापुरम्.

दैनिक पूजा एवं दर्शन का कार्यक्रम

शनि, रवि, सोम, मगल तथा बुधवार

प्रात :	५-००	से	५-३०	सुप्रभात
,,	५-३०	,,	६-००	विश्वरूप सर्वदर्शन
,,	६-००	,,	६-३०	तोमाल सेवा
,,	६-३०	,,	६-४५	कोलुवु तथा पंचांगश्रवण
,,	६-४५	,,	९-३०	सहस्रनामार्चना
,,	९-३०	,,	१०-००	पहली घटी
,,	१०-००	दोपहर	१२-३०	सर्वदर्शन
दोपहर	१२-३०	,,	१-००	दूसरी अर्चना व दूसरी घटी
	१-००	शाम	६-००	सर्वदर्शन
	६-००	,,	७-००	रात का कैंकर्य व रात की घटी
	७-००	,,	८-४५	सर्वदर्शन
	८-४५	,,	९-००	एकातसेवा

गुरुवार

प्रातः	५-००	से	५-३०	सुप्रभात
,,	५-३०	,,	६-००	विश्वरूप सर्वदर्शन
,,	६-००	,,	६-३०	पूलगि समर्पण (तोमाल सेवा)
,,	६-३०	,,	६-४५	कोलुवु तथा पंचाग श्रवण
,,	६-४५	,,	९-३०	सहस्रनामार्चना
,,	९-३०	,,	१०-००	पहली घटी
,,	१०-००	दोपहर	१२-३०	सर्वदर्शन
दोपहर	१२-३०	से	१-००	दूसरी अर्चना व दूसरी घंटी
,,	१-००	,,	६-००	सर्वदर्शन
,,	६-००	,,	७-००	रात का कैंकर्य व रात की घंटी
,,	७-००	,,	८-४५	सर्वदर्शन
,,	८-४५	,,	९-००	एकातसेवा

शुक्रवार

प्रात:	५-००	से	५-३०	सुप्रभात
,,	५-३०	,,	६-००	विश्वरूप सर्वदर्शन
,,	६-००	,,	९-००	सालिपु, नित्यकट्ल कैंकर्य व पहली घटी
,,	९-००	,,	१०-००	अभिषेक
,,	१०-००	,,	११-३०	समर्पण (तोमाल सेवा), दूसरी अर्चना व दूसरी घटी
,,	११-३०	से शाम	६-००	सर्वदर्शन
शाम	६-००	,,	७-००	रात का कैंकर्य व रात की घटी
,,	७-००	,,	८-४५	सर्वदर्शन
,	८-४५	,,	९-००	एकात सेवा

सूचना :—

अर्जित सेवाओं की दरें :—

१) शुक्रवार के साप्ताहिक अभिषेक रु. १००/- (दो व्यक्तियो को प्रवेश)
२) अर्चना रु ३/ ३) हारति रु. १/ ४) नारियल तोडना रु ०-५०/
५) भगवान को प्रसाद (भोग) समर्पण भी किया जाता है।

पेष्कार, श्री वेंकटेश्वर स्वामीजी का मदिर, मगापुरम
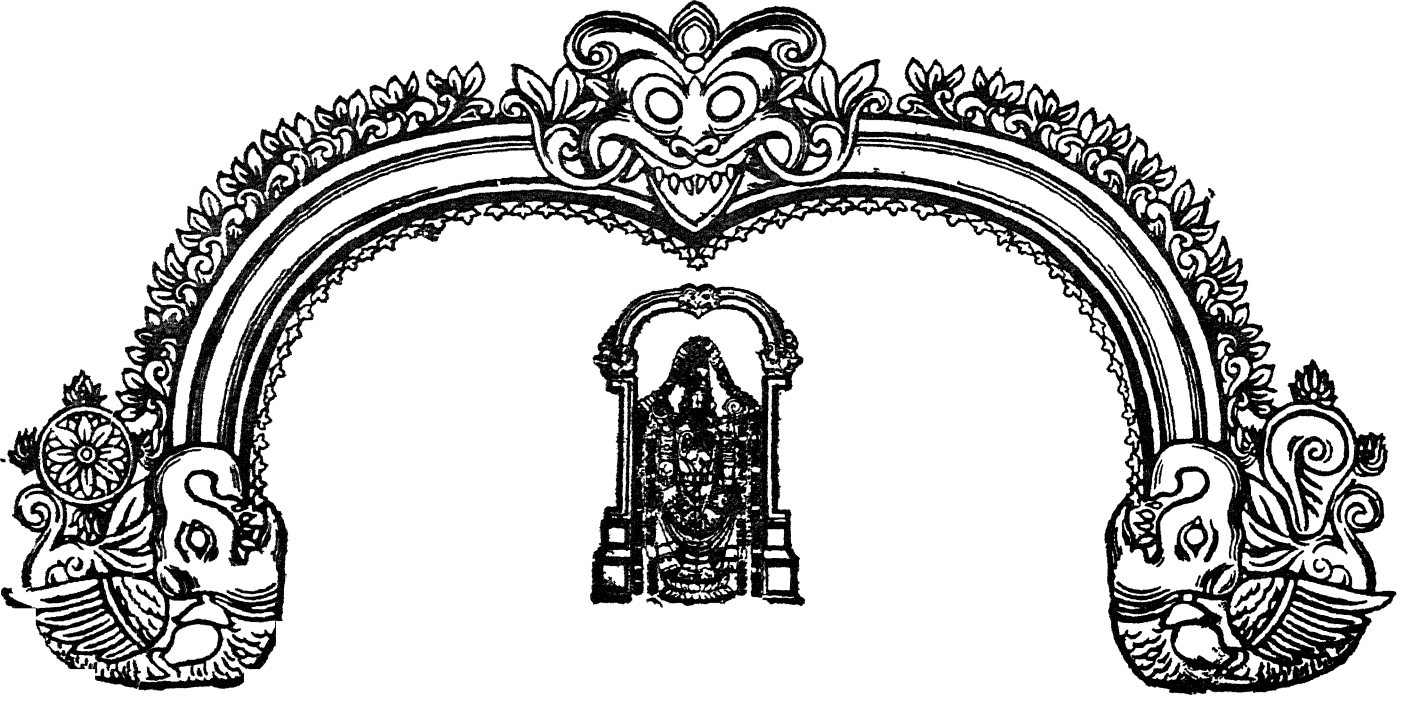
तिरुमल – यात्रियों को सूचनाएँ

भगवान बालाजी के दर्शन

ति. ति देवस्थान को यह विदित हुआ कि कुछ धोखेबाज व्यक्ति यात्रियों से पैसे लेकर भगवान के दर्शन शीघ्र ही करवाने का वादा कर रहे हैं

देवस्थान यात्रियों को विदित कराना चाहता है कि जहाँ तक सभव हो एक सयत एव क्रम पद्धति में भगवान बालाजी के दर्शन कराने का भरसक प्रयत्न कर रहा है। प्रतिदिन दस हजार से अधिक यात्री भगवान बालाजी का दर्शन करने आते हैं और दर्शन की सुविधा केलिए दिन में १४ घटे का समय मंदिर का द्वार खोल दिया जाता है जिस में ११ घटे सर्वदर्शन केलिए नियत है। यदि यात्रियों की भीड अधिक हो तो क्लोजड षेड्स से और अधिक न हो तो सुरक्षित महाद्वार से दर्शन का प्रबध किया जा रहा है।

वे यात्री जो समय के अभाव, अस्वस्थता अथवा अन्य किसी कारणवश क्यू में खडे नहीं सकते वे प्रति व्यक्ति रु. २५/- मूल्य का टिकट खरीद कर मंदिर के अन्दर ही ध्वजस्तंभ के पास से क्यू में शामिल हो सकते हैं जिस से कि उन को ५ मिनट के अन्दर ही भगवान के दर्शन प्राप्त हो सके।

यात्रियों से ति. ति. देवस्थान का निवेदन है कि वे बाहरी व्यक्तियों की सहायता से दर्शन प्राप्त करने का प्रयत्न न करे। शीघ्र दर्शन की सुविधा केलिए ति. ति. देवस्थान के द्वारा जो उत्तम प्रबध किये गये हैं, कोई कभी व्यक्ति भगवान का दर्शन उससे शीघ्रतर रवाने में असमर्थ है। अत: कृपया यात्रीगण ऐसे धोखेबाजों की झूठे वायदों से हमेशा सतर्क रहें।

भगवान के दर्शन प्राप्त करने में जो विलंब और प्रतीक्षा करने से जिस सहनशीलता का अभ्यास होता है, वह तो कलियुगवरद श्री वेंकटेश्वर के दर्शन प्राप्त करने केलिए अपेक्षित हो है और वह एक प्रकार की तप: साधना भी है जिस के द्वारा भगवान का सपूर्ण अनुग्रह प्राप्त होता है।

कार्यनिर्वहणाधिकारी,

ति. ति. देवस्थान. तिरुपति.

ग्रंथ समीक्षा

अन्नमचार्य और सूरदास का तुलनात्मक अध्ययन

लेखक :– डा. एम. संगमेशम्, एम ए पी एचडी,

प्रकाशक :– ति. ति. देवस्थान, तिरुपति ।

१९७६ : मुद्रण : : पृष्ठ : ३५२ : : दाम : ८-७५

साधारणतः किसी आध्यत्मिक ग्रंथ के बारे में शोध-प्रबंध लिखना आसान बात नही है । उस में भी तुलनात्मक ग्रंथ को लिखना और भी कठिन है । क्योंकि उस के लिए विस्तृत अध्ययन, गहन व गम्भीर मननशीलता की आवश्यकता होती है । लेखक ने तो दो महान कवियों के जो दो अलग भाषाओं के प्रसिद्ध कवि हैं, उनके बारे में तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया है । एक है तेलुगु भाषा के प्रसिद्ध भक्त कवि श्री अन्नमय्या, जो श्री बालाजी के भक्त है, जिहोंने उनके ऊपर ३२,००० पद कविताओं की रचना की । दूसरे हैं हिन्दी साहित्य के महान भक्त कवि सूरदास, जो अनन्य कृष्ण भक्त हैं, और अपने मधुर गान कविताओं से साहिय को भरपूर कर दिया ।

हमार भारत देश भक्ति पूर्ण मनोभाव सगीत का जन्म स्थल है । आदिकाल से भी व्यास, वाल्मीकी, तुलसीदास, सूरदास, तुकाराम, तिरुवल्लुवर, त्यागराजु, अन्नमाचार्य, कबीर, मीराबाई इत्यादि सैकडों भक्त कवि जो अपने तन-मन से लीन होकर भगवान के गुण गाये हैं और सभी लोगों को भक्तिमार्ग का पथ प्रदर्शन किये हैं । भगवान तथा भक्त के सम्बन्ध के बारे में तथा इहलोक और परलोक, लौकिक व आध्यात्मिक बातों के बारे में खूब विश्लेषण किये हैं । और अपने समय में महान बनकर चिरकाल तक अमर रह गये हैं ।

इस शोध प्रबंध में ऐसे समकालीन, समान शील व समान सदाचारी दो भक्त कवियों तेलुगु के अन्नमाचार्य और हिन्दी के सूरदास के बारे में तुलनात्मक अध्ययन को डाक्टर साहब प्रस्तुत कर रहे हैं । लेखक कहते हैं कि " वे विभिन्न प्रांतो में रहकर भी एक ही समय के थे और एक ही तरह के साधक, साहित्यिक और सगीतज्ञ थे ।" इन दोनों भक्त कवियों के आराध्य-भगवान की महिमा, सम्प्रदाय, दार्शनिक भाव, भक्ति साधना, रचना सौंदर्यता, भाव गंभीरता, सगीतात्मकता आदि विषयों में साम्य एवं वैषम्यों के बारे में विवेचना की गयी है ।

पूरे शोध-प्रबध को पांच अध्यायों में बाँटा गया है । पहले अध्याय में संत अन्नमाचार्य और सूरदास के जीवन विवरण (प्रामाणिक), उनके धार्मिक, दार्शनिक, भक्ति साधना, रचना विस्तार आदि का परिचय है ।

दूसरे अध्याय में दो आलोच्य सत कवियों की साधना व साहित्य के विवरण हैं । इसके तीन खण्ड हैं । पहले खण्ड में इन दोनों के समकालीन, राजनैतिक, धार्मिक सामाजिक, साहित्यक परिस्थितियों का विवरण हैं । दूसरे खड में भक्ति पद्दति के स्वरूप व स्वभाव का विश्लेषण किया गया है । तीसरे खंड में भक्ति सम्प्रदाय, धार्मिक सम्प्रदाय, साधना पद्दतियों आदि का वर्णन है ।

तीसरे अध्याय में चार खड हैं । पहले खंड में सत कवियों के भक्ति साहित्य की परंपरा प्रेरणा स्तोत्र, उनके परस्पर सम्बन्ध आदि का जानकारी है । दूसरे खंड में दोनों के दार्शनिक विचारों की तुलना की गयी है । तीसरे खंड में भक्ति साधना का तुलनात्मक विवरण है । चौथे खड में दोनों की साम्प्रदायक साधना की आलोचना तुलनात्मक दृष्टि से की गयी है ।

चौथे अध्याय में अन्नमाचार्य व सूरदास के काव्य-सौंदर्य की विवेचना की गयी है। इसके तीन खंड है। पहले खंड में आलोच्य संतों के साहित्य का स्वरूप व स्वभाव का निरूपण किया गया है। दूसरे खंड में दोनों के पदों के लीला वर्णन में वात्सल्य, श्रृंगार आदि रस भावों की आलोचना की गयी है। तीसरे खंड में उनके रचना सौंदर्य तथा अलंकार, शैली, छंद व संगीत आदि व्याकरण तत्वों का विश्लेषण किया गया है।

पांचवें अध्याय में इन दोनों महाकवियों के तुलनात्मक वर्णन तथा संकेत दिया गया है। तुलनात्मक अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष भी है।

ऐसे विमर्शनात्मक ग्रंथ को छपवाकर लेखक ने हिन्दी साहित्य के भण्डार में वृद्धि की। आकर्षक रंगों के सुंदर मुखचित्र के साथ, सुंदर अक्षरों में छपवाने के कारण प्रकाशक को धन्यवाद देना चाहिए। ऐसे लेखक जो निक्षिप्त व निगूढ रहस्यों को प्रकाश में लाकर, जो अपने इस शोध प्रबंध के द्वारा जनसामान्य तक पहुंचाने का प्रयास उठाया है, वे सराहनीय है।

अतः साहित्य प्रेमियों, भक्तजनों तथा पण्डितों को इस ग्रंथ को अवश्य पढना चाहिए। तथा उन्हें अपने जीवन में भक्ति मार्ग का अनुसरण करके लाभ उठाना चहिए।

समीक्षक :– **श्री एम. सुब्रह्मण्य शर्मा**

हनुमते नमः

श्री राम प्रसाद महेशेका
(भागलपुर बिहार)

समस्त पूजा अर्चनाओं की नींव
हनुमान है

सब बाधाओं से मुक्ति का मंत्र
हनुमान है

मानव जीवन को सुखी बनाना मन
मन्दिर हनुमान है

विश्व के सुखी जीवन की मुख्य कुंजी
हनुमान है

मां सीता का वरद पुत्र शिव अंश
हनुमान है

पूजा के सभी मंत्र तंत्र अजनी पुत्र
है हनुमान

इस नाम को जप लो भैया सर्वत्र
मिलेगा तुम्हें कल्याण

(पृष्ठ ३३ का शेष)

कल्याणकारी शुभ आशीर्वाद देने वाले अपने वाह्य नेत्र से भी आचार्य जिस भाग्यवान को देखेंगे उस महाभाग्य के बारेमें कहना ही क्या है। जिस प्रकार श्रीरामानुज स्वामी को श्री यामुनाचार्य स्वामीजी का मङ्गलाशासन रूप कटाक्ष मिला था, श्रीवेदान्त देशिक स्वामी को भी बचपन में ही श्री वात्सय वरदाचार्य स्वामीजी का एक महान अनुग्रह मिला था इसका यही तात्पर्य है कि महाचार्य के कटाक्ष मिल जाने पर शिष्य के समस्त पाप नष्ट हो जायेंगे और वह समस्त कल्याण का पात्र बन जाएगा, जिस से कुछ न बने हो व उसे आचार्य की सन्निधि में ही नित्य निवास करना और सर्व देश, सर्व काल सर्वावस्थोचित सर्व विध सेवा करना।

यदि हम कहे कि गुरु के बिना ही हमें ब्रह्मप्राप्ति हो जायगी, सो नहीं हो सकती राह बताने वाले की आवश्यकता जन्म से ही होती है, जब हम पैदा होते हैं। पहली गुरु हमारी माँ होती है, उसके बाद सामान्य विद्या प्राप्त करने के लिए भी गुरु के पास जाना पड़ता है फिर परब्रह्म को प्राप्त करने को विद्या बिना गुरु के कैसे प्राप्त करेंगे। जैसे—

बिना गुरुभ्योः गुण नीरधिभ्यो,
जानाति तत्व न विचक्षणोऽपि।
आकार्णपूर्णजललोचनोपि वा,
दीप विना पश्यति अन्धकारे ? ॥

जिस प्रकार तेज आँख वाला व्यक्ति अँधेरी कोठरी में बिना प्रकाश के राई नही उठा सकता है उसी प्रकार कितना भी ज्ञानी हो बिना गुरु के ससार रूप कोठरी में से सूक्ष्म तत्व जो परब्रह्म है उसे प्राप्त नही कर सकता हैं, अतः गुरु कृपा प्राप्त करना हम जीवों के लिए बहुत जरूरी है। उनकी कृपा द्वारा हम परम पद को प्राप्त कर सकेंगे—

गुरु की महिमा इन हाथों से कैसे लिखी जायगी कवि ने तो यहाँ तक लिखा हैं—

सब धरती कागज करूँ, कलम करूँ
बरनाय।
सात समुद्र स्याही करूँ, गुरु गुण लिखो
न जाय॥ *

समाचार

हिन्दूधर्म पर गर्मी की पाठशाला:-

यह सर्वविदित है कि देवस्थान देश की युवा पीढी में धार्मिक भावनाओ के प्रति उत्सुकता बढाने की दिशा में सतत प्रयत्नशील है। युवा पीढी में विशिष्ट भारतीय धार्मिक सम्प्रदायो को खूब प्रचार करके, धार्मिक, नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यो को सूक्ष्मातिसूक्ष्म रूप में समझाकर, उनके हृदयो में परिवर्तन लाने वाले अध्यापको को भारतीय धार्मिक सिद्धातो के बारे में आवश्यक शिक्षणा देने के लिए देवस्थान ने गर्मी की पाठशाला को तिरुपति और तिरुमल में निर्वहण किया। उसी प्रकार हैदराबाद में दि १५-५-७९ से २९-५-७९ तक निर्वहण किया। वेदात वर्द्धिनी सस्कृत कलाशाला के प्रागण में हिन्दू धर्म प्रतिष्ठान के सहयोग से कलाशाला के अध्यक्ष श्री गोडवर्ती श्रीराम मूर्तिजी की निर्देशिकता में १५ दिन तक चलायी गयी। इस कार्यक्रम के प्रारम्भोत्सव के मुख्यातिथि आन्ध्र प्रदेश के माननीय देवादाय शाखा मत्री श्री पी वी. चौधरी रहे। उच्च शिक्षा के निर्देशक श्री वी. रामचन्द्रन की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। अपने स्वागतोपन्यास में इस कार्यक्रम की आवश्यकता को बताते हुए श्री राममूर्तिजी ने कहा कि पाठशालाओ की शिक्षा प्रणाली मे धार्मिक विषयो के प्रवेश करने से छात्रो में उत्सुकता बढेगी और उनका व्यवहार भी धर्मानुरूप होगा। सभाध्यक्ष श्री वी रामचन्द्रन ने अपने भाषण में कहा कि निष्णात अध्यापक सदर्भानुसार सुलभ शैली में छात्रो को सिखायेंगे।

उस्मानिया विश्वविद्यालय के भूतपूर्व तेलुगु विभागाधिपति डा० दिवाकर्ल वेंकटावधानी ने गुरु भक्ति की विशिष्टता के बारे में सोदाहरण बताया। श्री मरिगन्टि ने श्री रगाचार्य श्रवण, श्री केशवपतुल नरसिह शास्त्री ने धर्मानुष्ठान् के बारे में भाषण दिये।

इस प्रकार २९-५-७९ तक आयोजित अन्य कार्यक्रमो में सर्वश्री बी आर शास्त्री, पुल्लेल श्री रामचन्द्रुडु, एस बी. रघुनाथाचार्य, जी वी सुब्रह्मण्यम, डी अर्कसोमयाजी, कप्पगतुल लक्ष्मण शास्त्री, ढोग्रे वीरेश्वर शास्त्री, सन्निधान लक्ष्मी नारायण शास्त्री, मुकुराल रामारेड्डी, ओगेटि अच्युत रामशास्त्री, एन कृष्णमूर्ति शास्त्री, एस विश्वनाथ शास्त्री, पी बी वेदाताचार्य, के सीतारामांजनेयुलु, इरिवेंटि कृष्णमूर्ति, के सुप्रसन्नाचार्य, वैद्यरत्न प्रद्युम्नाचार्य, तिरुमल रामचन्द्र, वि रामानुजा चार्य, के लक्ष्मणमूर्ति शर्मा, एस वी जोगाराव, प्रसादराय कुलपति, रेमल्ल सूर्यप्रकाश शास्त्री, लका सीताराम शास्त्री, के.एच नरसिह शास्त्री, एम चन्द्रशेखर शास्त्री, कृष्णाचार्य वर्कडकर आदि प्रमुखो ने भाग लिया।

इस शिक्षण समारोह को देवस्थान के कार्य-निर्वहणाधिकारी श्री पी. वी. आर के. प्रसाद जी, उपकार्य निर्वहणाधिकारी श्री नरसिंह रावजी आदि प्रमुखो ने संदर्शन किया।

दि २९-५-७९ के समारोह के समापन कार्यक्रम आन्ध्रप्रदेश के न्याय शाखा मत्री महोदय श्री नादेण्ड्ल भास्कर राव जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। उन्होंने अपने भाषण में इस कार्यक्रम की प्रशंसा की। श्री स्वामी विरूपाक्षानद ने अपने स्नातकोपन्यास में वेदो को प्रामुख्यता के बारे में बताया तथा मानव सेवा ही माधव सेवा कहा। अन्नमाचार्य प्राजेक्ट की गायिका शोभाराजु की कचेरी के बाद श्री सी वी शेषाचार्य के धन्यवाद-समर्पण से कार्यक्रम की समाप्ती हुई।

बिदाई समारोह के अध्यक्ष श्री नादेण्डल भास्कररावजी, आन्ध्रप्रदेश के माननीय न्यायशाखा मंत्री भाषण देते हुए

नूतन उपकार्य निर्वहणाधिकारी का पदवीग्रहण:

स्थानातरित किये गये श्री एन. नरसिंहाराव जो के बदले श्री जी टी नायुडुजी ने उपकार्य-निर्वहणाधिकारी के रूप में पदवी ग्रहण किया।

अजायबघरों की स्थापना:—

तिरुमल तिरुपति प्रदेश न केवल अति पवित्र है, बल्कि ऐतिहासिक रूप से अति प्रसिद्ध भी है। यहाँ के विभिन्न मदिरो व स्थलो में प्राप्त कई प्रकार के शासन, सुंदर शिलामूर्तियो को एकत्रित कर रखने का विचार है, जो कि पुरातत्व शास्त्र के अनुसार अधिक महत्व रखते हैं। इस विशिष्टता के कारण देवस्थान के द्वारा तिरुमल तथा तिरुपति में अलग अलग अजायबघरो के निर्माण करने का निर्णय लिया गया। देवस्थान के मदिरो से सम्बन्धित एक अजायबघर १, नवबर को चालू होगा। तिरुमल में श्री बालाजी के मदिर के सामने स्थित हजार स्तम्भ मण्डप में उसकी व्यवस्था होगी। इसमें तिरुमल के पुरातत्व से सम्बन्धित, वनस्पतियो से सम्बन्धित, देवस्थान के मदिरो के वास्तु तथा शिल्प कला विशेषो को रखा जायगा। इनके अलावा प्राचीनकाल के सिक्के गहने, विविध प्रकार के देवताओ के वस्त्रालकार, हाथी के दांतो से बनाये गये सुदर चित्रो आदि का प्रदर्शन किया जायगा।

दूसरे को तिरुपति के कचेरी नम्मालवार के मंदिर में रखा जायगा। इसमें वैखानसागम

शेष पृष्ठ ४० पर

ति. ति. देवस्थान के निर्वाहक मण्डलि के प्रमुख निर्णय

ति. ति देवस्थान में व्यक्तिगत दाननिधि नामक एक नयी प्रणाली शुरू की गयी। उसके अनुसार इच्छुक भक्त जनों के व्यक्तिगत नाम पर रु. ५०० की राशि को जमा करके उस पर आनेवाले सूद से वर्ष में एक बार गृहस्थ के बताये के दिन पर गरीब लोगों को उसके नाम पर १० लड्डू या १५ वडै मुफ्त मे बाँटा दिया जायगा। उसी प्रकार रु ५०० की राशि पर मिलनेवाले रु, ४० के सूद से वर्ष में एक बार गृहस्थ के बताये के दिन पर उसी के नाम पर क्यू में यात्रियों को मुफ्त में भात की पोटलियों की वितरण की जायगी।

जो भक्त जन अंग प्रदक्षिण करते हैं, उन लोगों को अब की जैसे प्रात: ३–४ बजे के बीच में ही प्रवेश देने का निर्णय लिया गया।

भगवान श्री बालाजी के प्रसाद लड्डू को पोलिथिन थैलियों के बदले कागज की थैलियों में रखकर बेचने का निर्णय लिया गया।

देवस्थान की प्रस्तुत छापखाने में सिर्फ देवस्थान प्रशासन सम्बन्धी विषयो को छपवाने और ग्रंथप्रचरण के लिए एक अलग बडी छापखाने को स्थापित करने का निर्णय लिया गया। उसके लिए अलिपिरि के पास १० एकड की जमीन मंजूर की गयी।

यात्रियों की सुविधा को दृष्टि में रखकर देवस्थान के कार्यालयों के काम करने के समय को परिवर्तन न करके, अब के जैसे चालू करने का निर्णय लिया गया।

तिरुपति व तिरुमल मे अजायबघरों की स्थापना करने की प्रणाली को अपनाया गया।

देवस्थान में विधि निर्वहण करते हुए मर गये। कर्मचारियों की अत्यक्रियाओं केलिए रु. ५०० दान देने के लिए सरकारी कानून जी.ओ एम.एस नं. १०४ जी.ए. (ए.आर. टि) ता. ३–२–७८ को प्रयुक्त करने का निर्णय लिया गया।

चित्तूर जिला, वेल्लूर के अतिरिक्त अन्य प्रातो में काम करनेवाले देवस्थान के कर्मचारियों को (समाचार केंद्र, आन्ध्राश्रम, हृषीकेश, नई दिल्ली को छोडकर) वेतन में १० प्रतिशत का विशेष वेतन देने का निर्णय लिया गया। इस से हर एक कर्मचारी को रु. १५ से ज्यादा और रु. ७५ से कम मिलेगा।

देवस्थान की छापखाने में कागज मोडने की मशीन को खरीदने के लिए रु. ६०.००० मजूर किया गया।

पैदल जानेवाले यात्रियों को उत्साह बढाने के लिए पूरे रास्ते में तिरुपति के अलिपिरि से लेकर तिरुमल तक लौड़स्पीकरो के द्वारा तिरुमल सदस और मदिर के कार्यक्रमों को प्रसारित करने केलिए रु १,००,००० मंजूर किये गये।

तिरुचानूर के श्री पद्मापतीदेवी के मंदिर में तिरुप्पावडा अर्जित सेवा के लिए रु. १५०० चुकाना पडेगा। इस सेवा केलिए १२ व्यक्तियों को प्रवेश मिलेगा।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान के कार्य कलापों से सम्बन्धित समावेशों के अतिरिक्त अन्य कोई भी समावेश तथा यात्रियों को असुविधा जनक ठाठ-बाठ से मनानेवाले विवाह आदि को निषेध करवाने के लिए कार्यनिर्वहणाधिकारि को अधिकार दिया गया।

श्री वेंकटेश्वर कलाक्षेत्र के नाम को श्री वेंकटेश्वर कला भारती के रूप में बदलने का निर्णय लिया गया। उसकी व्यवस्था के लिए तात्कालिक रकम रु. २,००,००० मंजूर की गयी।

श्री वेंकटेश्वर जूनियर कलाशाला में पढ़नेवाले अंध छात्रों को पाठ पढकर सुनानेवालों को दिये जानेवाले रीडर चार्ज रु. ३० से रु ६० को बढाया गया।

"श्री वेंकटेश्वर महत्य" नामक नृत्य नाटक को तैयार करने के लिए नई दिल्ली के नृत्य बालेट सेंटर को रु. १,५४,६०० की आर्थिक सहायता देने का निर्णय लिया गया।

मद्रास विश्वविद्यालय की तेलुगु शाखा में अन्य शोध प्रणालियों के समान दो छात्रों को छात्रवृत्ति देने का निर्णय लिया गया।

अन्नमाचार्य प्राजेक्ट के अध्वर्य में "अन्नमय्य कथा" नामक संगीत रूपक को लांग प्ले रिकार्डो में स्वरबद्ध करवाने का निर्णय लिया गया।

मासिक राशिफल

अगस्त १९७९

*डा० डी. अर्कसोमयाजी, तिरुपति.

मेष
(आश्वनी, भरणी, कृत्तिका केवल पाद–१)

राहु के द्वारा आदोलन। शनि के द्वारा सतान से अलगाव या धनहानि या झगडे। गुरु के द्वारा रिश्तेदारो के कारण आदोलन। बुध के द्वारा धन प्राप्ति, घर मे वस्तु समृद्धि। कुज के द्वारा सतान के कारण अक्रम पद्दतियो मे धन प्राप्ति। रवि के द्वारा अस्वस्थता या शत्रुओ के कारण अशाति। शुक्र के द्वारा अच्छे मित्र प्राप्ति, बडो की प्रशसा, रिश्तेदारो का आगमन धन व सतान प्राप्ति।

वृषभ
(कृत्तिका पाद-२, ३, ४, रोहिणी, मृगशिरा पाद-१,२)

राहु के द्वारा झगडे। शनि के द्वारा धन हानि या रिश्तेदारो से अलगाव। गुरु के द्वारा निराशा। बुध के द्वारा मित्र प्राप्ति तथा अपने बुरे प्रवर्तन के कारण आंदोलन। कुज के द्वारा नौकरी में या झगडे के कारण या चोरी के कारण या अस्वस्थता के कारण आदोलन। रवि के द्वारा २७ तक धन प्राप्ति या गौरव, बाद को अस्वस्थता। शुक्र के द्वारा नूतन वस्त्र प्राप्ति या धन प्राप्ति या विजय या अधिक गौरव, या अच्छे मित्र प्राप्ति।

मिथुन
(मृगशिरा पाद-३, ४, आर्द्रा, पुनर्वसु पाद-१,२,३)

राहु के कारण धन प्राप्ति। शनि के कारण धन या नौकर या नूतन वस्त्र या स्वस्थता या वाहन प्राप्ति। गुरु के द्वारा धन प्राप्ति। बुध के द्वारा धन प्राप्ति या अपमान। कुज के द्वारा बुराई। रवि के द्वारा २७ तक धन हानि, दूसरो के कारण धोखा खाना या नेत्र पीडा, बाद को धन प्राप्ति, गौरव प्राप्ति। शुक्र के द्वारा खाद्य-पदार्थ प्राप्ति, धन प्राप्ति, गौरव प्राप्ति, सतान, नूतन वस्त्र प्राप्ति व सभी प्रकार से विजय।

कर्काटक
(पुनर्वसु पाद-४, पुष्य तथा आश्लेष)

राहु के कारण धन की खर्चा। शनि के कारण धन हानि, अशाति। गुरु के द्वारा झगडे या धन हानि या अगौरव या अशाति। बुध के द्वारा बुरे सलाह के कारण या झगडे के कारण धन हानि। कुज के द्वारा धनाभाव, मानसिक अशाति। रवि के द्वारा २७ तक प्रयाण व प्रयास या उदर पीडा या धन हानि, बाद को धन हानि, दूसरो के कारण धोखा खाना नेत्र पीडा। शुक्र के द्वारा १८ तक श्रृगार व प्रेम, सुख, बाद को धन व खाद्य पदार्थों की समृद्धि सतान प्राप्ति।

सिंह
(उत्तर फल्गुनि पाद-१, मख, पूव फल्गुनि)

राहु के कारण आदोलन। शनि के कारण प्रयाण व प्रयास या धन हानि, सतान से झगडे, अपने को या अन्य लोगो को खतरा। गुरु के द्वारा प्रयाण व प्रयास। बुध के द्वारा अपमान, अस्वस्थता व शत्रु वृद्धि। कुज के द्वारा जय। रवि के द्वारा १८ तक धन प्राप्ति स्तब्धता, बाद को श्रृगार व प्रेम, सुख प्राप्ति।

कन्या
(उत्तरा पाद-२,३,४, हस्त चित्त पाद-१, २)

राहु तथा शनि के कारण आदोलन। गुरु के द्वारा अधिक धन प्राप्ति। बुध के द्वारा धन, मित्र ग श्रृगार या संतान प्राप्ति। कुज के द्वारा २७ तक गौरव, विजय, स्वस्थता, बाद को थोडी सी धन हानि। शुक्र के द्वारा धन प्राप्ति या नूतन वस्त्र प्राप्ति।

तुला
(चित्त पाद-३, ४, स्वाति, विशाख पाद-१, २, ३.)

राहु के द्वारा सुख। शनि के द्वारा दूसरो से धन प्राप्ति या श्रृगार। गुरु के द्वारा धन हानि। कुज के द्वारा अपमान या धनहानि या पदच्युति। बुध के द्वारा धन, विजय या श्रृगार। रवि के द्वारा महीने के अत तक जय, अधिक गौरव, स्वस्थता, धन प्राप्ति। शुक्र के द्वारा १८ तक झगडे, अपमान, बाद को धन व मित्र प्राप्ति।

वृश्चिक
(विशाख पाद-४, अनुराधा ज्येष्ठ.)

राहु के द्वारा झगडे। शनि के द्वारा धनहानि या अगौरव। गुरु के द्वारा धन प्राप्ति, विजय या खाद्य पदार्थ व सतान प्राप्ति। बुध के द्वारा विघ्न। कुज के द्वारा धन हानि, चोरी, या शारीरक घाव। रवि के द्वारा २७ तक धन हानि, अस्वस्थता या निराशा, बाद को विजय। शुक्र के द्वारा १८ तक धन प्राप्ति या नूतन वस्त्र

प्राप्ति या श्रृंगार या पुण्यकार्य, बाद को झगडे या अपमान ।

धनुः
(मूल, पूर्वाषाढ, उत्तराषाढ पाद-१)

राहु के द्वारा पापकार्य । शनि के द्वारा झगडे या अस्वस्थता, आध्यात्मिक प्रवर्तन । गुरु के द्वारा अस्वस्थता, आदोलन या प्रयाण व प्रयास । बुध के द्वारा धन प्राप्ति, नूतन वस्त्र प्राप्ति, विजय, सतान प्राप्ति । कुज के द्वारा पत्नी से झगडे, उदर या नेत्र पीडा । रवि के द्वारा १७ तक अस्वस्थता, पत्नी को असतोष, बाद को धन हानि या अस्वस्थता या निराशा । शुक्र के द्वारा महीने के अत में धन प्राप्ति या श्रृंगार या गृह प्राप्ति या पुण्यकार्य की सभावना ।

मकर
(उत्तराषाढ पाद-२, ३, ४ श्रवण, धनिष्ठ पाद १, २)

राहु के द्वारा धन प्राप्ति । शनि के द्वारा पत्नी व सतान से अलगाव । गुरु के द्वारा प्रेम व श्रृंगार या धन प्राप्ति । बुध के द्वारा झगडे । कुज के द्वारा विजय धन - प्राप्ति । रवि के द्वारा १७ तक उदर पीडा, प्रयाण, बाद को अस्वस्थता या पत्नी को असंतोष । शुक्र के द्वारा १८ तक स्त्री के कारण अशाति, बाद को नूतन वस्त्र प्राप्ति या श्रृंगार व घर प्राप्ति ।
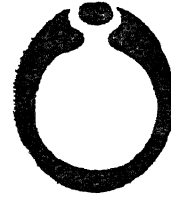
कुंभ
(धनिष्ठ पाद-३,४, शतभिष, पूर्वाभाद्रा पाद-१, २, ३.)

राहु के द्वारा झगडे । शनि के द्वारा प्रयाण। गुरु के द्वारा मानसिक अशाति, पत्नी को असतोष। बुध के द्वारा विजय या गौरव प्राप्ति । कुज के द्वारा शत्रुओ के द्वारा या अस्वस्थता के कारण या सतान के कारण आदोलन। रवि के द्वारा १७ तक स्वस्थता, बाद को प्रयाण, उदर पीडा । शुक्र के द्वारा १८ तक अस्वस्थता या अपमान, बाद को स्त्री के कारण आदोलन ।

मीन
(पूर्वाभाद्र पाद-४, उत्तराभाद्र, रेवती)

राहु के द्वारा धन प्राप्ति । शनि के कारण धन प्राप्ति या श्रृंगार । गुरु के द्वारा धन, नूतन वस्त्र, नौकर या प्रेम व श्रृंगार या सतान प्राप्ति या वाहन प्राप्ति । बुध के द्वारा पत्नी व सतान से झगडे । कुज के द्वारा बुखार या उदर पीडा या बुरे मित्रो के कारण आदोलन । रवि के द्वारा ७ तक अस्वस्थता, शत्रुओ पर विजय । शुक्र के द्वारा १८ तक बडो की प्रशसा, रिश्तेदारो का आगमन, धन - प्राप्ति, सतान प्राप्ति, बाद को अस्वस्थता व अपमान ।

ग्राहकों से निवेदन

निम्नलिखित संख्यावाले ग्राहकों का चदा ३०-९-७९ को खतम हो जायगा कृपया ग्राहक महोदय अपना चंदा रकम मनीआर्डर के द्वारा जल्दी ही भेज दें ।

H 7 (91), 8 (97), 42 (569), 43 (570), 44 (574), 99 (695)
109 (705), 115 (711), 116 (712), 117 (713)

नोट : कोष्ठक में पुरानी सख्या दी गयी हैं।

निम्नलिखित पते पर चदा रकम भेजें :

संपादक,
ति· ति देवस्थानम्,
तिरुपति.

(पृष्ट ३७ का शेष)

शास्त्र से सम्बन्धित अर्थात् मंदिर के स्थल निर्णय, मंदिरो के भेद, मूर्तियाँ या उत्सवो से सम्बन्धित पूजाविधियो आदि मिलेंगी । इन विषयो को खिलौने, चित्र, छाया चित्रो या प्राचीन कला खण्डो के रूप में संग्रह करके प्रदर्शन करने का संकल्प है ।

टेम्पुल आर्ट म्यूजियम के क्यूरेटर श्री ए विजयचन्द्रन इन अजायबघरो के विशेषाधिकारी नियुक्त किये गये ।

नारायण वन में कल्याणमण्डप का निर्माण:–

कन्नय्य धर्मनिधि के मंत्री ने नारायणवन के उत्तर माडा वीथी में स्थित ६३९० फुट भूमि को प्रजोपयोगार्थ देवस्थान को सौंप दिया । इस स्थल में कल्याण मण्डप के निर्माण करके उसे "कन्नय्य कन्नम्मा कल्याण मण्डप" नाम रखने का निर्णय लिया गया ।

श्री बालाजी के विवाह सम्पन्न इस पुण्यभूमि मे, भक्तो की सुविधा के लिए ऐसे कार्य के लिए दान देना बहुत संतोष जनक है ।

EDITED AND PUBLISHED ON BEHALF OF THE T. T. DEVASTHANAMS BY K. SUBBA RAO, M A AND PRINTED AT
T T D Press, By M. Vijayakumar Reddy, Manager, T T D Press, Tirupati

तिरुमल यात्रियों को सुविधाएँ

* * * *

* सभी तरह के लोगों को रहने के लिए मुफ्त में दिये जानेवाली धर्मशालाएं या उचित दरों पर मिलनेवाले काटेजस का प्रबंध।

* श्री बालाजी के दर्शन के लिए जानेवाले यात्रियों के क्यू षेडस में हवा तथा प्रकाशमान सुविशाल कमरों का प्रबंध।

* क्यू षेड्स में ही काफी बोर्ड के द्वारा नाश्ता का प्रबंध।

* उचित दरों पर दही-भात के पोटलियों का विक्रय।

* यात्रियों को बिना बाहर आये ही, क्यू षेड्स के पास ही सण्डास का प्रबंध।

* आंध्र प्रदेश सरकार के डेयरी डवलपमेंट कार्पोरेशन के द्वारा शुद्ध दूध आदि का विक्रय।

* यात्रियों को पढने के लिए देवस्थान से प्रकाशित ग्रंथ तथा भगवान बालाजी व पद्मावती देवी के चित्रपटों का विक्रय।

* यात्रियों को मनोरंजन तथा विश्राम के वास्ते टेलिविजन का प्रदर्शन व संगीत का प्रसार।

* क्यू लाईन में तथा तिरुमल को पैदल जाने की रास्ते में ७ वी. मील पर चिकित्सा की सुविधा।

* सामान व चप्पल को रखने के लिए विशेष सुविधाएँ।

* तिरुमल के सेन्ट्रल रिसेप्षन आफिस से अन्य प्रांतों को आटो रिक्शा (Auto Rickshaw) की सुविधा।

* तिरुमल को पैदल जानेवाले यात्रियों के सामान को तिरुमल तक पहुँचाने का प्रबंध।

* धोखेबाज या दलालों से रक्षा करने के लिए पेष्कार के ओहदे पर अधिकारी को मुखद्वार पर नियुक्ति।

* क्यू षेड्स के यात्रियों की शिकायतों को जाँच - पडताल करने को तथा आवश्यक सुविधाओं को इन्तजाम करने के लिए पेष्कार के ओहदे पर अधिकारी तथा कर्मचारियों की नियुक्ति।

* देवस्थान से दिये जानेवाले ऐसे अन्य बहुत सुविधाएँ है।

सूचना :— तिरुमल में दि २–४–७९ से डाकघर रात को ८–३० बजे तक काम करती है। इसके अलावा मुख्य डाकघर रात के १०–३० से २–०० बजे तक काम करती है। अगर चाहें तो श्री बालाजी के भक्त अन्नमाचार्य के डाक-मुहर अपने कार्ड या कवरों पर छपवा सकते हैं।

मूल्य: ०-५०

रजिष्टर न एच/टी आर पी/११